राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 82
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
गुरुवार 06 अक्टूबर 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट | पेज 3 दिल्ली हाई कोर्ट का आदेश, कश्मीरी अलगाववादी नेता अल्ताफ अहमद शाह को एम्स में करें स्थानांतरित | पेज 5 आगरा : वॉच टावर से अब कर सकेंगे ताजमहल और आगरा किले का दीदार | पेज 7 विश्व चैंपियनशिप में जगह बनाने के लिये यूएस गोल्फ इंडिया टूर्नामेंट में भिड़ेंगे 74 गोल्फर

नैनीताल बस हादसा, 32 की मौत

500 फीट गहरी खाई में गिरी बस :18 जानें बचीं

स्थानीय लोगों ने रेस्क्यू टीम से दो कदम आगे निकलते हुए वो रोल निभाया, जिसके बिना जिंदगियों को बचाना मुश्किल था। हादसे में 32 की मौत हुई है, लेकिन 18 जानें बचाई गई हैं ।

नैनीताल । उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में मंगलवार रात एक बस 500 मीटर गहरी खाई में गिर गई। ये बस 50 बारातियों को लेकर हरिद्वार के लालढांग से काड़ागांव जा रही थी। सिमड़ी गांव के पास ड्राइवर ने नियंत्रण खो दिया और हादसा हो गया।

रात का वक्त था। गहरी खाई और मुश्किल पहाड़ी हालात। बारातियों के रेस्क्यू में यही बड़ी चुनौतियां थीं। लेकिन, रेस्क्यू टीम से पहले स्थानीय लोग पहले ही घटना स्थल पर पहुंचे। इन्हें इलाके की भी जानकारी थी पर गहरी खाई का डर भी। लेकिन, मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाकर ये बरातियों को ढूंढते रहे। SDRF की टीम हादसे के करीब 2 घंटे बाद मौके पर पहुंच पाई। इससे पहले स्थानीय लोग और पुलिस 9 लोगों को बचा चुकी थी। एक चश्मदीद ने बताया कि जब हमने मोबाइल की लाइट में बारातियों को खोजना शुरू किया तो कुछ शव ऐसे दिखे, जो कई टुकड़ों में बंट चुके थे। कई घायल भी थे, जिन्हें वक्त पर इलाज मिल गया। कुछ और रिपोर्ट्स में घटना के प्रत्यक्षदर्शियों की आंखोंदेखी बताई गई है। एक रिपोर्ट में दूल्हे की कार चला रहे ड्राइवर ने कहा कि जब हम लौट रहे थे, तब कार के सामने सांप आ गया। ड्राइवर ने कहा कि मैंने ब्रेक मार दिया था। इसके बाद पीछे आ रही बस ने हमें ओवर टेक किया। चंद मिनट बाद ही वह खाई में गिर गई थी।

धामी कंट्रोल रूम पहुंचे, तब तक रेस्क्यू टीम मौके पर नहीं पहुंची थी

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ऑपरेशन के दौरान खुद अधिकारियों को फोन पर निर्देश देते रहे। वो रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान कंट्रोल रूम में मौजूद थे। जब धामी कंट्रोल रूम पहुंचे, तब तक रेस्क्यू टीम मौके पर नहीं पहुंची थी। ऑपरेशन पूरा होने के बाद धामी ने कहा कि रेस्क्यू मिशन में पुलिस और एसडीआरएफ के अलावा स्थानीय लोगों की अहम भूमिका रही है।

यूपी : गाजियाबाद में टीवी फटने से युवक की मौत, 2 जख्मी

दोस्त के घर टीवी देख रहा था; दीवारें टूटीं, धमाका 500 मीटर तक सुनाई दिया

एजेंसी

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में मंगलवार को एक युवक ओमेंद्र की टीवी फटने से मौत हो गई। उसके दोस्त और उसकी मां जख्मी हो गए। धमाका इतना तेज था कि एक दीवार पूरी तरह से टूट गई। कमरे की बाकी दीवारों में दरारें आ गईं। पड़ोसियों के मुताबिक, ब्लास्ट की आवाज करीब 500 मीटर दूर सुनाई दी। टीवी क्यों फटी इसकी वजह की अभी पुष्टि नहीं हो पाई है।

ये मामला गाजियाबाद के हर्ष विहार का है। पुलिस के मुताबिक, ओमेंद्र के दोस्त करण को सोमवार को कुत्ते ने काट लिया था। ओमेंद्र उसे दिल्ली गुरु तेग बहादुर अस्पताल हॉस्पिटल में रेबीज इंजेक्शन लगवाने ले गया था। दोपहर ढाई बजे दोनों करण के घर लौटे और पहली मंजिल पर टीवी देखने लगे। करण की मां ओमवती भी वहीं मौजूद थीं। दोपहर 3 बजे के करीब अचानक टीवी की स्क्रीन में जोरदार धमाका हुआ।

पुलिस ने कहा- कोई संदिग्ध सामान नहीं मिला

पुलिस ने बताया कि हमने धमाके की वजह पता लगाने के लिए पूरे कमरे की छानबीन की, लेकिन कोई संदिग्ध चीज नहीं मिली। टीला मोड़ थाने के प्रभारी भुवनेश कुमार ने बताया कि जब उन्होंने घायल को देखा तो उसके चेहरे में एलसीडी के टुकड़े घुसे हुए थे। देखने से ऐसा ही प्रतीत हो रहा था कि एलसीडी स्क्रीन ही फटी है।

बांद्रा-वर्ली सी लिंक पर 5 की मौत

एंबुलेंस घायलों को ले जा रही थी, कार ने सड़क पर खड़े 13 लोगों को रौंदा

मुंबई। मुंबई के बांद्रा-वर्ली सी लिंक पर एक तेज रफ्तार कार खड़ी एंबुलेंस से जा टकराई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि 5 लोगों की मौत हो गई और 8 से ज्यादा लोग जख्मी हो गए। घटना देर रात 3.30 बजे की है। दरअसल, इससे पहले यहां एक एक्सीडेंट हुआ था। एंबुलेंस इस हादसे में घायल लोगों को लेने आई थी। रोड के किनारे जब इन्हें बैठाया जा रहा था, तभी एक कार आई और इन्हें रौंदती चली गई। इसके बाद एंबुलेंस समेत 5 गाड़ियां आपस में टकरा गईं।

पहला हादसा देर रात 3 बजे हुआ, कार डिवाइडर से टकराई

घटना सीसीटीवी में कैद

यह पूरा हादसा सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया। उसमें देखा जा सकता है कि वहां पर खड़ी गाड़ियों के पास लोग खड़े थे, तभी तेज रफ्तार कार ने टक्कर मारी। पहला एक्सीडेंट रात 3 बजे हुआ। एक कार डिवाइडर से टकरा गई। एंबुलेंस मदद के लिए स्पॉट पर पहुंची। इनकी मदद के लिए दो कार और रुक गईं। इस वक्त 13 लोग वहां खड़े थे। तभी पीछे से आ रही कार ने इन्हें रौंद दिया। सी लिंक के एक एम्पॉलाई समेत 13 लोग घायल हो गए। इनमें से 5 ने अस्पताल में जाकर दम तोड़ दिया। बांद्रा वर्ली सी लिंक पर गाड़ियों की मिनिमम स्पीड 80 किमी प्रतिघंटे रहना अनिवार्य है। यही वजह है कि यहां चलने वाली ज्यादातर गाड़ियां 100 से ज्यादा की स्पीड में चलती हैं। जिस कार ने सबसे पहले टक्कर मारी उसकी रफ्तार तकरीबन 110-120 किलोमीटर प्रतिघंटे की बताई जा रही है। हालांकि, अभी पुलिस का आधिकारिक बयान नहीं आया है।

राहुल की कर्नाटक सरकार से घायल हाथी के बच्चे का इलाज कराने का आग्रह

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि वह नगरहोल बाघ संरक्षित क्षेत्र में घायल हाथी के बच्चे को तत्काल संरक्षण देकर उसके इलाज की व्यवस्था करें। गांधी ने मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के साथ कुछ समय के लिए वह नगरहोल बाघ संरक्षण क्षेत्र में गये जहां उन्होंने पीड़ा से छटपटाता हाथी का एक घायल बच्चा दिखा जिसे देखकर उन्हें बहुत कष्ट हुआ। उन्होंने कहा कि राजनीति से हटकर वह श्री बोमई से आग्रह करते हैं कि तत्काल इस बच्चे के इलाज की समुचित व्यवस्था करवाएं। गांधी ने इससे पहले भी ट्वीट कर इस बच्चे और उसकी मां का चित्र पोस्ट करते हुए कहा,एक माँ का प्यार।

गुजरात में नकली नोटों के रैकेट का पर्दाफाश

अब तक 317 करोड़ के नकली नोट जब्त, पहली रेड में 25 करोड़ रुपए मिले थे

बारडोली। गुजरात के सूरत जिले में पुलिस ने नकली नोटों के रैकेट का पर्दाफाश किया है। इसके तहत अलग-अलग जगहों से 317 करोड़ 98 लाख के नकली नोट जब्त किए गए हैं। इनमें 67 करोड़ के पुराने नोट भी शामिल हैं। इसके साथ ही पुलिस ने मुंबई के मास्टर माइंड विकास जैन सहित 6 लोगों को गिरफ्तार किया। आरोप है कि यह लोग ब्लैक मनी को व्हाइट मनी में बदलने के लिए ट्रस्ट और आयोग के नाम पर लोगों से पैसों की ठगी कर रहे थे। आरोपियों की पहचान हितेश परसोत्तम कोटलिया, दिनेश लालजी पोशिया, विपुल हरिश पटेल, विकास पदमचंद जैन, दिनानाथ रामनिवार यादव और अनूष विरनची शर्मा के रूप में हुई है। इससे पहले अहमदाबाद से 25 करोड़ 80 लाख रुपए के नकली नोट जब्त किए थे। इसके साथ ही तीन लोगों को गिरफ्तार किया था। इन लोगों से पूछताछ के बाद 2 लोगों के घर रेड डाली गई थी। इसके बाद 52 करोड़ रुपए और 12 करोड़ रुपए के जाली नोट बरामद किए गए।

मुंबई की तरफ जाने वाले रोड पर नवी पारडी गांव के पास एंबुलेंस से नकली नोट पकड़े गए थे। इस दौरान पुलिस ने बीते 29 सितंबर को कामरेज के नवी पारडी से पुलिस ने जामनगर के एक चैरिटेबल ट्रस्ट की एंबुलेंस से करोड़ों के नकली नोट पकड़े थे। इस मामले में एंबुलेंस के चालक हितेश के घर के पीछे छिपाए गए 52 करोड़ से ज्यादा नकली नोट बरामद किए गए। इस मामले में जांच मुंबई की तरफ चली और मुंबई से मास्टर माइंड और वीआरएल लॉजिस्टिक आंगड़िया कंपनी के मालिक विकास जैन का नाम सामने आया। उसने पूछताछ में साथियों के नाम भी बताए, जिन्होंने दान करने के नाम पर लोगों के साथ नकली नोटों के बहाने असली नोट लेकर धोखाधड़ी की थी।

विकास जैन जब किसी व्यक्ति के साथ ट्रस्ट में दान करने के लिए डीलिंग करता था तो वह दान की रकम का 10 प्रतिशत एडवांस बुकिंग के रूप में लेता था। उसके कई राज्यों में ऑफिस हैं। इन्ही के जरिए उसने ट्रस्ट का गलत तरीके से इस्तेमाल किया और नकली नोटों को असली बताकर बुकिंग के नाम पर करोड़ों रुपए वसूल किए।

आरोपियों ने किया पुलिस को गुमराह

पहली बार इस मामले का खुलासा तब हुआ था, जब आरोपियों ने पुलिस को गुमराह करते हुए बताया था कि वे फिल्मों की शूटिंग के लिए इन नोटों का इस्तेमाल करते है, जबकि जांच के दौरान पता चला कि यह लोग ट्रस्ट का इस्तेमाल कर नकली नोटों को असली बताकर बुकिंग के नाम पर लाखों रुपए हड़पते थे।

जम्मू-कश्मीर के शोपियां में 2 जगहों पर एनकाउंटर

लश्कर और जैश के 4 आतंकी ढेर, 4 दिन में 5 आतंकी मारे गए

एजेंसी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के शोपियां में दो अलग-अलग मुठभेड़ों में 4 स्थानीय आतंकी मारे गए हैं। शोपियां के द्राच इलाके में मंगलवार शाम से शुरू हुई मुठभेड़ में जैश-ए-मोहम्मद के 3 स्थानीय आतंकवादी मारे गए। इधर, मूलू में बुधवार तड़के शुरू हुई दूसरी मुठभेड़ में सुरक्षा बलों ने लश्कर-ए-तैयबा के एक आतंकी को मार गिराया है। मूलू में एनकाउंटर अभी जारी है।

द्राच इलाके में मारे गए दो आतंकवादियों की पहचान हनान बिन याकूब और जमशेद के तौर पर हुई है। ये दोनों पुलवामा के पिंगलाना में 1 अक्टूबर को SPO जावेद डार की हत्या और पुलवामा में 24 सितंबर को पश्चिम बंगाल के एक मजदूर की हत्या में शामिल थे। पुलिस के मुताबिक, द्राच में आतंकवादियों के छिपे होने की जानकारी मिली थी। सर्च ऑपरेशन के दौरान आतंकियों ने टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी।

पुलवामा में फायरिंग में नागरिक की मौत, सिपाही गिरफ्तार

पुलवामा जिले में चेक प्वाइंट पर एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान कि 25 साल के आसिफ अहमद के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि हादसा सुबह करीब 10 बजे हुआ, जब सुरक्षा कर्मी की सर्विस राइफल गलती से चली गई।

इसके बाद अहमद को अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी मौत हो गई।

पुलिस ने कहा कि यह एक मिसफायर था।

सुरक्षाकर्मी को गिरफ्तार किया गया है और हथियार भी जब्त कर लिया गया है। इससे पहले 2 अक्टूबर को शोपियां के बसकुचन इमामसाहिब इलाके में सुरक्षाबलों ने जॉइंट ऑपरेशन चलाया और एक आतंकी को ढेर कर दिया था। उसकी पहचान नौपोरा बसकुचन शोपियां निवासी नसीर अहमद भट के तौर पर हुई थी।

उसके पास से एके-47 राइफल, कई हथियार और गोला बारूद बरामद किए गए। पुलिस ने बताया कि वह कई आतंकी अपराधों में शामिल था और हाल ही में एक मुठभेड़ से भाग निकला था।

जम्मू-कश्मीर में बीते 8 दिनों के भीतर सुरक्षाबलों ने 11 आतंकी मार गिराए हैं। 30 सितंबर को सुरक्षाबलों ने बारामूला में जैश-ए-मोहम्मद के 2 आर्तकियों को मार गिराया था। एसएसपी बारामूला रईस मोहम्मद भट ने बताया कि ये आतंकी बारामूला में चल रही अग्निवीर भर्ती रैली पर हमला करने की प्लानिंग कर रहे थे।

घाटी में ऑपरेशन ऑल आउट जारी

घाटी में ऑपरेशन ऑल आउट जारी है। इससे पहले जम्मू-कश्मीर में कुलगाम जिले के अहवातू में 27 सितंबर को सुरक्षाबलों जैश के दो आतंकियों को मार गिराया था। वहीं, 26 सितंबर की रात कुलगाम के वेस बटपोरा इलाके में एक आतंकी को मार गिराया था।

आतंकी की पहचान पाकिस्तान निवासी अबु हुरैरा के रूप में हुई थी, यह जैश का ए कैटेगरी का आतंकी था। इस एनकाउंटर में सेना का एक जवान और 2 नागरिक भी घायल हुए थे।

अजमेर में मूर्ति विसर्जन के दौरान चाचा-भतीजा सहित 6 लोगो की मौत

एक युवक का पैर फिसला, उसे बचाने एक-एक कर 5 और पानी में उतरे

अजमेर। मूर्ति विसर्जन के दौरान 6 युवकों की डूबने से मौत हो गई। मृतकों में चाचा-भतीजा भी शामिल हैं। एक युवक का पैर फिसला था। उसे बचाने के लिए एक-एक कर 5 और युवक पानी में उतरे और सभी डूब गए। दलदल का उन्हें अंदाजा नहीं था। काफी मशक्कत के बाद ग्रामीणों ने शवों को निकाला। मामला अजमेर के नसीराबाद स्थित नांदला इलाके का है।

सरपंच मानसिंह रावत ने बताया कि मूर्ति विसर्जन के लिए नंदा जी की ढाणी से 25 ग्रामीण बुधवार दोपहर करीब 3.30 बजे नांदला के पास पानी से भरे गड्?ढे पर पहुंचे थे। माता की मूर्ति का विसर्जन किया। मूर्ति को पानी के बीच धकेलने की कोशिश में एक युवक का पैर फिसल गया था। इसी दौरान गहरे पानी में पहुंच गया। इसे बचाने के चक्कर में 5 और की जान चली गई। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस व ग्रामीणों ने सबको बाहर निकाला। इन्हें लेकर नसीराबाद हॉस्पिटल पहुंचे, जहां डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। मौके और अस्पताल पर स्थानीय पुलिस-प्रशासन भी पहुंचा। सूचना मिलने के बाद केकड़ी से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक घनश्याम शर्मा भी मौके पर पहुंच गए। एसपी चूनाराम जाट व कलेक्टर अंशदीप भी मौके पर पहुंचे हैं।

मृतकों के नाम

नांदला, नंदाजी की ढाणी निवासी पवन पुत्र मोहन रेगर (35), राहुल पुत्र छीतरमल मेघवंशी (25), राहुल पुत्र कैलाश रेगर (25), गाड़ी मोहल्ला, नसीराबाद सिटी निवासी लकी पुत्र शंकर बैरवा (20), गजेन्द्र पुत्र बाबूलाल रेगर (25), शंकर पुत्र बाबूलाल (25)। राहुल (भतीजा) और पवन (चाचा) रिश्तेदार हैं। पवन ड्राइवर है। वहीं, राहुल 12वीं में पढ़ता है।

देश में कोरोना के सक्रिय मामलों में आयी कमी

नयी दिल्ली। देश में पिछले 24 घंटों में कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामले में 1280 की गिरावट दर्ज की गयी है, जिससे अब ऐसे कुल मामलों की संख्या घटकर 33318 रह गयी है एवं सक्रिय दर 0.08 प्रतिशत है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि सुबह सात बजे तक 218.83 करोड़ टीके लगाए गए।

पिछले 24 घंटे में कोविड-19 संक्रमण से 3731 मरीजों की सेहत में सुधार हुआ है, जिससे अब कोरोना से निजात पाने वालों की कुल संख्या बढ़कर 4,40,39,883 हो गयी है। पिछले 24 घंटे के दौरान कोरोना महामारी के संक्रमण से केवल आठ मरीजों की मौत होने से मृतकों की संख्या 5,28,733 हो गयी है और मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत तथा स्वस्थ दर

98.74 प्रतिशत है। पिछले 24 घंटों में छह राज्यों और दो केन्द्र शासित प्रदेश में कोराना के मामलों में बढ़ोतरी हुई है और अन्य राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इसके मामलों में कमी देखी गयी है।

दिल्ली में कोविड-19 संक्रमण के तीन मामले बढ़कर 359 हो गए हैं। इस महामारी से निजात पाने वालों की कुल संख्या 1976788 हो गयी।

मृतकों की संख्या बढ़कर 26503 हो गयी है और इसी अवधि में केरल में कोरोना के 577 संक्रमित मामले घटने के बाद सक्रिय मामले घटकर 8151 रह गए हैं और इस बीमारी से निजात पाने वालों की संख्या 6729927 हो गयी है और मृतकों का आंकड़ा 71209 पर बरकरार है।

पश्चिम बंगाल में पिछले 24 घंटों के दौरान 195 सक्रिय मामले घटने से कुल संख्या घटकर 2673 रह गयी है। इस महामारी से निजात पाने वालों की कुल संख्या 2090951 हो गयी है और एक मरीज की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 21510 हो गया है।

पंजाब में कोविड-19 संक्रमण के नौ मामले बढ़कर 164 हो गए हैं और अब तक 763988 लोग इस महामारी से मुक्त हो चुके हैं और मृतकों का आंकड़ा 17917 तक पहुंच गया है।

तमिलनाडु में कोविड-19 संक्रमण के 83 मामले घटकर 5256 रह गए हैं।

सिलेंडर हादसा | **गैस लीक से सिलेंडर तक पहुंची आग, मलबे में दबे 2 की हालत गंभीर**

गाजियाबाद में सिलेंडर फटा, परिवार के 4 लोगों की मौत

गाजियाबाद। गाजियाबाद के लोनी इलाके में बुधवार को बड़ा हादसा हो गया। यहां सिलेंडर फटने से दो मंजिला मकान ढह गया। हादसे में एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत हो गई। जबकि 2 लोगों की हालत गंभीर है। मरने वालों में घर के मालिक मुनीर का बेटा मुज्जसर, बहू रुकैय्या (24), पोती इनायत (10 महीना) और बेटी सानिया (15 साल) शामिल हैं।

शबनूर, बेबी का अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस अफसर पहुंच गए हैं। कुछ और लोगों के दबे होने की आशंका है। जिसके लिए राहत और बचाव कार्य चल रहा है।

घटना लोनी थाना क्षेत्र के बबलू गार्डन की है। यहां ऑटो मैकेनिक मुनीर का दो मंजिला मकान है। इसमें मुनीर की पत्नी, 4 बेटे, 2 बहू और बच्चे रहते हैं। बुधवार सुबह करीब 10 बजे घर की रसोई में खाना बन रहा था। हादसे के वक्त मुनीर और उसका एक बेटा घर से बाहर थे।

बताया जा रहा है कि गैस लीकेज होने से रसोई में आग लग गई। देखते ही देखते पूरा घर आग की चपेट में आ गया। समय रहते आग पर काबू नहीं पाए जाने से सिलेंडर फट गया। इस वजह से तेज धमाके के साथ घर का ज्यादातर हिस्सा गिर गया। जिसमें घर के लोग दब गए।

धमाके की आवाज सुनकर लोग पहुंचे

धमाके की आवाज सुनकर आस-पास के लोग मौके पर पहुंचे। कुछ ही देर में स्थानीय पुलिस, फायर ब्रिगेड और नगरपालिका की टीम मौके पर पहुंच गई। JCB से मलबा हटाकर तीन लोगों के शवों को बाहर निकाला। इसके अलावा हादसे में घायल 3 लोगों को मलबे से निकालकर अस्पताल में भेजा। जहां इलाज के दौरान एक ने दम तोड़ दिया।

मासूम बच्चे ने मुफैद की गोद में दम तोड़ा

इसी इलाके के रहने वाले मुफैद ने बताया, मैं रास्ते से घर जा रहा था। तभी बाइक सवार लोग एक घायल को ले जाते दिखे। मैं तुरंत भागकर मौके पर पहुंचा। 2 साल के बच्चे को मलबे से बाहर निकाला। एंबुलेंस तक पहुंचाने से पहले ही उसने मेरी गोद में दम तोड़ दिया।

शार्ट न्यूज

जेल डीजीपी की हत्या में कोई आतंकवादी पहलू नहीं : पुलिस

जम्मू। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने दावा किया कि जेल महानिदेशक एच के लोहिया की हत्या आतंकवाद से जुड़ी नहीं है। पुलिस ने बुधवार को इस आशय का दावा किया। जम्मू जोन के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) मुकेश सिंह ने कहा,जेल डीजी एच के लोहिया की हत्या के मामले की जांच के दौरान कोई आतंकवादी पहलू सामने नहीं आया है। उन्होंने बताया कि आरोपी से पूछताछ जारी है। गौरतलब है कि श्री लोहिया का सोमवार को उधेयवाला इलाके में गला रेत कर हत्या कर दी गई। श्री लोहिया को इसी साल अगस्त में डीजी जेल नियुक्त किया गया था।

तेलंगाना राष्ट्र समिति राष्ट्रीय दल के रूप में परिवर्तित होकर भारतीय राष्ट्र समिति बनी

हैदराबाद। इक्कीस वर्ष पहले पृथक राज्य की मांग को लेकर गठित की गयी तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) बुधवार को राष्ट्रीय पार्टी बन गयी और वह 'भारतीय राष्ट्र समिति' के रूप तब्दील हो गयी। टीआरएस के अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने राष्ट्रीय पार्टी की घोषणा करते हुए बुधवार को कहा कि पार्टी कार्यालय में दल की आम सभा हुई जिसमें टीआरएस का नाम बदलकर बीआरएस करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। तेलंगाना भवन में हुई बैठक में टीआरएस के 283 पार्टी सदस्य उपस्थित हुए, इनमें पार्टी के वरिष्ठ नेता भी शामिल थे। इसी बैठक में टीआरएस को नये दल में शामिल करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। यह प्रस्ताव जल्द ही चुनाव आयोग को भेजा जायेगा। बीआरएस के गठन की घोषणा जनता दल (सेकुलर) के नेता एवं कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच डी कुमारस्वामी की मौजूदगी में की गयी। श्री कुमारस्वामी के साथ उनके दल के 20 विधायक भी उपस्थित थे। इस मौके पर तमिलनाडु की विदुथलाई चिरुथैगल काचि (वीकेसी) के दो सांसद और दलित नेता तिरुमावालावन अपने समूह के प्रतिनिधियों के साथ मौजूद थे।

ट्रैक्टर चोर गिरोह का भंडाफोड़, पांच गिरफ्तार

अलवर। राजस्थान में अलवर के अरावली विहार थाना क्षेत्र में पुलिस ने ट्रैक्टर चोर गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए चोरी का ट्रैक्टर खरीदने वाले सहित पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इस गैंग ने करीब एक दर्जन ट्रैक्टर चोरी की वारदात करना स्वीकार किया है। थाना पुलिस ने बताया कि अलवर शहर के एम आई ए , एनईबी, सदर, लक्ष्मणगढ़, राजगढ़, मालाखेड़ा व अरावली विहार थाना इलाके से लगातार हो रही ट्रैक्टर चोरी की वारदातों को गंभीरता से लेते हुए देख पुलिस टीम गठित की गई। पुलिस टीम ने मुखबिर तैनात किए गए। तकनीकी सहायता से इनपुट प्राप्त कर संदिग्ध बदमाशों को चिन्हित किया गया और उनकी गतिविधियों तथा ठिकानों पर निगरानी रखी गई। इसी दौरान गत दो अक्टूबर को रात्रि को चिन्हित किए गए बदमाश का रुख राजगढ़ की ओर हाईवे पर होना पाया गया। इस पर टीम द्वारा पीछा किया गया तो राजगढ़ के ग्रामीण इलाके में कच्चे पक्के रास्तों से होते हुए रात्रि को मूवमेंट करते रहे। अंत में आज तड़के मालाखेड़ा लक्ष्मणगढ़ रोड स्थित अहीर का तिवारा से चार बदमाशों को भागते हुए मोटरसाइकिल सहित दबोच लिया।
पुलिस आरोपियों से पुछताछ कर रही है।

लम्पी बीमारी से बचाव के लिए धीरज गुर्जर करेंगे पदयात्रा

भीलवाड़ा। देश प्रदेश में फैली गायों में लम्पी बीमारी से बचाव के लिए बीज निगम अध्यक्ष धीरज गुर्जर 14 अक्टूबर को गौ संकट निवारण पदयात्रा भीलवाड़ा से कोटड़ी तक निकालेंगे। इस दो दिवसीय पदयात्रा की शुरूआत संकट मोचन हनुमान मंदिर से होगी। श्री गुर्जर ने आज यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि लम्पी बीमारी का संकट गंभीर है और इसके लिए अभी तक कोई वैक्सीन भी नहीं बनी है। हालांकि उन्होंने कहा कि सरकार सभी प्रयास कर रही है, दवाईयां भी उपलब्ध करवाई है। उन्होंने कहा कि 14 अक्टूबर को प्रात: 10.15 बजे गौ संकट निवारण पदयात्रा संतों के सानिध्य में शुरू होगी। इसमें जिले भर के गौ भक्तों के साथ ही बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल होंगे। पहले दिन यह पदयात्रा शाम को सातोला का खेड़ा पहुंचेगी जहां गौ भजन संध्या रखी गई है। दूसरे दिन 15 अक्टूबर को सातोला का खेड़ा से पदयात्रा रवाना होकर सायं कोटड़ी पहुंचेगी। जहां चारभुजानाथ मंदिर में गौ छप्पनभोग भण्डारे का आयोजन रखा गया है। यहां लापसी तैयार कर जिले की विभिन्न गौ शालाओं में पहुंचाई जाएगी। उन्होंने बताया कि पदयात्रा के दौरान सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों और पर्चे के साथ ही गायों के ईलाज के लिए देशी लड्डू भी वितरीत किये जायेंगे और गौ पालकों को सावधानियां बरतने की जानकारी दी जाएगी। एक सवाल के जवाब में कहा कि प्रदेश में गौ शालाओं में विकास में राज्य की गहलोत सरकार ने काफी महत्वपूर्ण कदम उठाए है और सबसे ज्यादा प्रति गाय अनुदान भी दिया जा रहा है।

दुर्गा पंडाल में युवती पर ज्वलनशील स्प्रे से अटैक

जबलपुर। मध्यप्रदेश के जबलपुर में मॉ के साथ दुर्गा प्रतिभा के दर्शन करने गयी युवती पर एक विषेष समुदाय के लडके के झुंड ने ज्वलनशील स्प्रे डाल दिया। थाना प्रभारी कोतवाली अनिल गुप्ता के अनुसार कल देर रात सफारा स्थित सुनरहाई स्थित दुर्गा प्रतिमा के दर्शन करने एक युवती अपनी मॉ के साथ पहुॅची थी। इसी दौरान दस लडको के झुंड ने उस पर ज्वलनशील स्प्रे डाल दिया। जिसके कारण युवती की त्वचा में जलन होने लगी। उसके चिल्लाने पर उपस्थित जन समुदाय को घटना की जानकारी लगी। युवती को तत्काल उपचार के लिए भेज दिया गया। पुलिस ने युवती की शिकायत पर प्रकरण दर्ज कर लिया गया है। नगर पुलिस अधीक्षक कोतवाली प्रभात शुक्ला ने बताया कि इस मामले में मुख्य आरोपी सहित 10 लोगों को गिरफतार कर लिया गया है। गिरफतार किये गये सभी लोग एक विषेश समुदाय के है। घटना के बाद दुर्गा समिति के लोगों ने तीन युवकों को पकडकर पुलिस के हवाले कर दिया था। इस बीच सफारा एसोसिएशन के सदस्य तथा हिन्दुवादी संगठन के लोग कोतवाली थाना पहुॅच गये थे। थाने में प्रदर्शन करते हुए आरोपियों को गिरफतार करने की मांग कर रहे थे।

शिवराज ने रानी दुर्गावती की जयंती पर नमन किया

भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वीरांगना रानी दुर्गावती की जयंती पर नमन कर निवास स्थित सभागार में उनके चित्र पर माल्यार्पण किया। चौहान ने अपने ट्वीट संदेश में कहा कि- रानी दुर्गावती चन्देलों की बेटी, गौंडवाने की रानी और दुर्गा भवानी थी। बाज बहादुर की सेना को धूल चटाने और मुगलों की सेना को पीछे हटने पर मजबूर कर देने वाली शौर्य एवं साहस की प्रतिमूर्ति वीरांगना रानी दुर्गावती की जयंती पर कोटिश नमन करता हूँ। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मातृ-भूमि की रक्षा के लिये उनका अमूल्य बलिदान देशवासियों को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

शिवराज ने पीपल, कचनार और पितोडिया के पौधे लगाए

भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज आर्ट ऑफ लिविंग संस्था के सदस्यों के साथ स्मार्ट सिटी उद्यान में पीपल, कचनार और पितोडिया के पौधे लगाए। संस्था की सदस्य श्रीमती रानू शर्मा, श्रीमती प्रमिला दिवाकर, श्रीमती पूर्वा खले और श्रीमती शिखा श्रीवास्तव ने भी पौध-रोपण किया। सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती सीमा सिंह ने अपने जन्म-दिवस पर पौधा रोपा। श्रीमती सुषमा बाबिसा, श्रीमती सविता यादव, राजकुमार विश्वकर्मा, भरत सिंह चंद्रवंशी, काशीनाथ बाबिसा और शुभम भी पौध-रोपण में शामिल हुए। संस्था द्वारा साक्षरता और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महिलाओं को जागरूक करने और पर्यावरण-संरक्षण के लिए पौध-रोपण भी किया जाता है। आज लगाए गए पीपल को छायादार एवं पर्यावरण शुद्ध करने वाला वृक्ष माना गया है। इसका धार्मिक और आयुर्वेदिक महत्व भी है। कचनार सुंदर फूलों वाला वृक्ष है। प्रकृति ने कई पेड़-पौधों को औषधीय गुणों से भरपूर रखा है, इन्हीं में से कचनार एक है। पितोडिया (सोना पत्ती) का धार्मिक महत्व होने के साथ इसे काफी शुभ माना जाता है।

मुंबई के रिलायंस अस्पताल को उड़ाने की धमकी

कॉलर ने अंबानी परिवार का भी नाम लिया

मुंबई। मुंबई के रिलायंस फाउंडेशन अस्पताल को फिर से बम से उड़ाने की धमकी मिली है। हॉस्पिटल के लैंडलाइन नंबर पर अनजान शख्स का कॉल आया, जिसमें कॉलर ने अंबानी परिवार के कुछ सदस्यों का भी नाम लिया है और गाली-गलौज की है। यह कॉल आज 12 बजकर 57 मिनट पर आया था। इसके बाद से अस्पताल और एंटीलिया (मुकेश अंबानी का घर) की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

डीसीपी निलोत्पल ने कहा कि मुंबई के डीबी मार्ग पुलिस स्टेशन में केस दर्ज कर लिया गया है। मामले में

आगे की जांच चल रही है और जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इससे पहले भी कई बार अंबानी फैमिली को जान से मारने की धमकी मिल चुकी है। 15 अगस्त के दिन भी एक शख्स ने कॉल करके मुकेश और नीता अंबानी को जान से मारने की धमकी दी थी। हालांकि, इस मामले में पुलिस ने एक व्यक्ति को अरेस्ट किया था।

अगस्त में आए थे 8 कॉल

स्वतंत्रता दिवस के दिन रिलायंस फाउंडेशन हॉस्पिटल के लैंडलाइन नंबर पर धमकी भरे आठ कॉल आए थे। कॉलर ने उनके पूरे परिवार को तीन घंटे में खत्म करने की धमकी दी। हॉस्पिटल मैनेजमेंट ने DB मार्ग पुलिस स्टेशन में इस मामले की शिकायत दर्ज कराई।

मुंबई पुलिस ने तीन टीमें बनाकर मामले की जांच शुरू की। शुरुआती जांच में पता चला था कि कॉलर एक ही है और उसी ने लगातार आठ कॉल की।

अपना गृह क्षेत्र गंवाने के लिए टीआरएस ने अपना नाम बदला

हैदराबाद। भारतीय जनता पार्टी तेलंगाना प्रदेश के मुख्य प्रवक्ता के. कृष्ण सागर राव ने बुधवार को कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव द्वारा राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश करने की घोषणा करना एक दुस्साहस है जबकि वह अपनी सरकार को वित्तीय रूप से चलाने के लिए एक विफल प्रयास कर रहे हैं।

एक बयान में श्री सागर ने कहा कि यह कोई पहली बार नहीं है जब किसी क्षेत्रीय दल ने अपनी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा को बढ़ावा दिया है। 1947 के बाद से कई क्षेत्रीय दलों ने ऐसी कोशिश की है और असफल रहे हैं। अन्नाद्रमुक, द्रमुक, तेदेपा, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, जनतादल (यूनाइटेड), तृणमूल कांग्रेस और हाल ही में आम आदमी पार्टी कुछ ऐसे ही दल हैं। उन्होंने कहा कि मैं आश्चर्यचकित हूं कि टीआरएस से बीआरएस नाम बदल लेने से कोई पार्टी राष्ट्रीय पार्टी कैसे बन सकती है। उन्होंने कहा कि एक पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी के रूप में मान्यता लेने के लिए कई राज्यों में एक निश्चित मतदान प्रतिशत प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। सागर ने कहा कि भाजपा का मानना है कि कोई 'तेलंगाना मॉडल' नहीं है और यह केवल सीएम केसीआर की एक कपोल कल्पना है।

कश्मीर : सुरक्षाकर्मी की बंदूक से गलती से चली गोली, व्यक्ति की मौत

श्रीनगर। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में बुधवार को एक सुरक्षा कर्मी की बंदूक से गलती से गोली चल जाने के कारण कथित तौर पर एक व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। कश्मीर के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक विकास कुमार ने एक ट्वीट में बताया, पुलवामा में ड्यूटी के दौरान एक सुरक्षाकर्मी की राइफल गलती से चल गई, जिसमें पोटेरवाल शोपियां गांव का आसिफ अहमद नामक एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया, जहां उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि इस घटना से संबंधित मामला दर्ज करके, सुरक्षाकर्मी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगे की जांच जारी है। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने हत्या को केंद्रीय गृह मंत्री की कड़ी सुरक्षा से जोड़ा। उन्होंने ट्वीट किया,कश्मीर में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दौरे के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित की गई थी लेकिन फिर भी पुलवामा के आसिफ ने अपने प्राण गवां दिए।

अरुणाचल प्रदेश में आर्मी का चीता हेलिकॉप्टर क्रैश

अस्पताल ले जाते वक्त एक पायलट की मौत, दूसरे की हालत गंभीर

एजेंसी

ईटानगर। अरुणाचल प्रदेश के तवांग इलाके में आर्मी का एक चीता हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया है। सेना के अधिकारी ने बताया कि हादसा सुबह करीब 10 बजे हुआ। हेलिकॉप्टर में दो पायलट सवार थे। हादसे के बाद दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। लेफ्टिनेंट कर्नल सौरभ यादव ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। उनके को-पायलट की हालत गंभीर है।

अधिकारियों ने बताया कि हादसे के कारणों का पता लगाने के लिए सेना ने कोर्ट ऑफ इंक्वायरी के आदेश दे दिए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, चीता हेलीकॉप्टरों को लगभग 60 साल पहले डिफेंस फोर्सेज में शामिल किया गया था। कई मौकों पर इसे बदलने की कोशिश की गई, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले में गुरेज सेक्टर में मार्च, 2022 में चीता हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया था। हादसे में हेलिकॉप्टर में सवार दो पायलटों में से को-पायलट मेजर संकल्प यादव की मौत हो गई थी। ये हादसा गुरेज सेक्टर के गुजरां नाला के नजदीक बरौन इलाके में हुआ था। बरौन इलाका लाइन ऑफ कंट्रोल के काफी करीब है।

गृह मंत्री ने श्रीनगर में की सुरक्षा हालात पर समीक्षा बैठक

श्रीनगर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा बैठक की। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि बैठक में उप-राज्यपाल, मनोज सिन्हा और सेना, सीएपीएफ, जम्मू-कश्मीर पुलिस और जम्मू-कश्मीर सरकार सहित भारत सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। एक आधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समृद्ध और शांतिपूर्ण जम्मू-कश्मीर के सपने को पूरा करने के लिए सुरक्षा बलों और पुलिस से आतंकवाद रोधी अभियानों को सक्रिय रूप से चलाने के लिए कहा। शाह ने सड़कों को हिंसा से मुक्त रखने और कानून के शासन को बहाल करने के लिए केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा एजेंसियों और प्रशासन के प्रयासों की सराहना की। स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान हर घर तिरंगा अभियान में अभूतपूर्व उत्साह का एक नया स्तर देखा गया। गृह मंत्री ने निर्देश दिए कि सुरक्षा चक्र को और मजबूत किया जाए ताकि आतंकवादियों और अलगाववादियों का भय समाप्त हो सके। उन्होंने सुरक्षा ग्रिड के कामकाज की समीक्षा की और पिछली बैठकों में सुरक्षा एजेंडा के विभिन्न मदों पर हुई प्रगति की समीक्षा की ताकि आतंकवाद की घटनाओं को कम किया जा सके और तंत्र में शामिल अलगाववादी नेटवर्क का जड़ से समाप्त किया जा सके। केंद्रीय गृह मंत्री ने सुरक्षा बलों और पुलिस से आतंकवाद का सफाया करने के लिए सावधानीपूर्वक और सुनियोजित आतंकवाद विरोधी अभियानों के माध्यम से समन्वित प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

यूएपीए के तहत दर्ज मामलों की भी समीक्षा की गई और इस बात पर जोर दिया गया कि जांच समय पर और प्रभावी होनी चाहिए। संबंधित एजेंसियों को गुणवत्ता जांच सुनिश्चित करने के लिए क्षमताओं में सुधार पर काम करना चाहिए।

बीरेन ने किया ओपन जिम का उद्घाटन

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने बुधवार को थंगमीबंद के चीराओ चिंग इलाके में और हिंगांग के मार्जिंग पोलो कॉम्प्लेक्स इलाके में दो ओपन जिम का उद्घाटन किया। ओपन जिम मुख्यमंत्री की देशी मार्शल आर्ट अकादमी, मणिपुर के तहत स्थापित किए गए। मुख्यमंत्री ने मौके पर लगे उपकरण और मशीन को देखकर हर्ष व्यक्त किया। ओपन जिम के उचित रखरखाव की आवश्यकता पर बल देते हुए, श्री बीरेन सिंह ने पुलिस अधीक्षक को चेराओ चिंग में ओपन जिम की सुरक्षा कर्मियों को तैनात करने का निर्देश दिया। इसी दौरान जिम प्रशिक्षकों ने भी मुख्यमंत्री को जिम उपकरणों के उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर खुमुच्छम जोयकिसन विधायक भी मौजूद रहे। श्री बीरेन सिंह ने परिसर में सगोल कांगजेई (पोलो) खिलाड़ी की प्रतिमा के चल रहे स्थापना कार्य का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अभियंता और ठेकेदार से बातचीत कर एक माह के अंदर काम पूरा करने का निर्देश दिया। इसके बाद में उन्होंने मंत्रीपुखरी में मणिपुर पुलिस मुख्यालय और नागरिक सचिवालय के चल रहे निर्माण कार्यों का भी निरीक्षण किया।

राजनाथ ने किए बाबा बदरी विशाल के दर्शन

श्री बदरीनाथ धाम/देहरादून। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उत्तराखंड के दो दिवसीय भ्रमण के अंतिम दिन बुधवार को सेना और अर्धसैनिक बलों के जवानों के साथ विजयादशमी त्योहार मनाने के पश्चात बाबा बदरी विशाल के दर्शन किए। सिंह ने आज प्रात: 10.45 बजे भगवान बदरीविशाल के दर्शन के लिए पहुंचे। जहां श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति अध्यक्ष अजेंद्र अजय तथा मंदिर उपाध्यक्ष किशोर पंवार, जिलाधिकारी हिमांशु खुराना, एसपी श्वेता चौबे, एसडीएम कुमकुम जोशी ने उनकी अगवानी की।

यौन शोषण का आरोपी दिल्ली का अधिकारी गिरफ्तार

एजेंसी

अल्मोड़ा/नैनीताल। उत्तराखंड की अल्मोड़ा पुलिस ने नाबालिग लड़की के यौन शोषण के आरोपी दिल्ली के अधिकारी ए बी प्रेमनाथ को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को रिमांड के लिये भेज दिया गया है।

दिल्ली में तैनात एबी प्रेमनाथ पर एक नाबालिग लड़की ने छेड़छाड़ व यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। जिला प्रशासन के निर्देश पर आरोपी के खिलाफ मजखाली स्थित गोविंदपुर पटवारी चौकी में यौन शोषण संरक्षण अधिनियम (पोक्सो) के अलावा सूचना प्रोद्योगिकी व भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर लिया गया था।

मामले की गंभीरता को देखते हुए राजस्व पुलिस से मामला नियमित पुलिस को सौंपा गया। रानीखेत के पुलिस क्षेत्राधिकारी तिलक राम वर्मा को प्रकरण की जांच सौंपी गयी। वर्मा ने बताया कि आरोपी को हल्द्वानी से हिरासत में लिया गया लेकिन पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया गया।

द्रमुक का द्रविड़ मॉडल अध्यात्मवाद के खिलाफ नहीं : स्टालिन

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने बुधवार को कहा कि सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) आध्यात्मिकता के खिलाफ नहीं है जैसा कि अपने स्वार्थ के लिए आध्यात्मिकता का उपयोग करने वाली कुछ शक्तियां कहतीं हैं।

एचआर एंड सीई विभाग द्वारा आयोजित एक मुप्परम विझा को संबोधित करते हुए, उन्होंने आरोप लगाया कि अपनी राजनीति के लिए धर्म का उपयोग करने वाले प्राय: यह अभियान चलाते हैं कि द्रमुक मॉडल सरकार आध्यात्मिकता के खिलाफ है। स्टालिन ने कहा कि कुछ लोग इस समारोह को लेकर हैरान या परेशान भी हो सकते हैं। मेरे लिए, यह अवसर कुछ लोगों की अपमानजनक टिप्पणियों का जवाब देने का है कि द्रमुक शासन अध्यात्मवाद के खिलाफ है।

उन्होंने कहा कि कुछ मीडिया मेरे बयानों को तोड़-मरोड़ कर पेश कर सकती है, शुरुआती भाग को प्रकाशित कर सकती है कि द्रविड़ मॉडल शासन आध्यात्मिकता के खिलाफ है और अंतिम भाग को काट सकती है जब मैंने कहा कि द्रमुक आध्यात्मिकता के खिलाफ नहीं है।

उन्होंने कहा, मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि द्रमुक सरकार आध्यात्मिकता के खिलाफ नहीं है। द्रविड़ मॉडल सरकार केवल उन लोगों के खिलाफ है जो आध्यात्मिकता को अपनी राजनीति और अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करना चाहते हैं और लोगों को बांटना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि जो लोग तमिल धरती पर धर्म की संस्कृति के बारे में जानते हैं, वे इसे समझेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि द्रमुक संस्थापक सीएन अन्नादुरई ने संत तिरुमूलर के विचार एक जाति एक भगवान को अपनाया था।

वडालूर में एक अंतरराष्ट्रीय केंद्र की स्थापना वाले द्रमुक के चुनावी वादे को याद करते हुए, स्टालिन ने कहा कि इसके लिए एक समिति का गठन किया गया है और वह इसके लिए 100 करोड़ रुपये की परियोजना का मसौदा तैयार कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अन्नधनम् (श्रद्धालुओं के लिए मुफ्त भोजन) और एक वर्ष में 52 सप्ताह के लिए व्याख्यानों की श्रृंखला आयोजित करने के लिए 3.25 करोड़ रुपये आवंटित किए जा चुके हैं।

मोदी ने एम्स, हाइड्रो इंजिनियरिंग कॉलेज का किया उद्घाटन

बिलासपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एम्स बिलासपुर और हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज बंदला का बुधवार को उद्घाटन किया। वहीं, बद्दी मेडिकल डिवाइस पार्क और भारतमाला परियोजना के तहत पिंजौर से नालागढ़ के बीच बनने वाले 31 किलोमीटर लंबे फोरलेन राष्ट्रीय राजमार्ग का भी बिलासपुर से ही वर्चुअल शिलान्यास किया।

मोदी ने 3,650 करोड़ रुपये की विभिन्न परियोजनाओं की भी सौगात दी। करीब 1,470 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से बने एम्स का उद्घाटन किया। इस अस्पताल की आधारशिला श्री मोदी ने ही वर्ष 2017 में रखी थी। मोदी ने 1,611 करोड़ के उद्घाटन और अन्य शिलान्यास भी किए।

इससे पहले श्री मोदी ने एम्स के नक्शे पर हर ब्लॉक की जानकारी ली। एम्स के अधिकारियों ने श्री मोदी को सभी तरह की सुविधाओं के बारे में अवगत करवाया। श्री मोदी ने सी ब्लॉक में डायग्नॉस्टिक सेंटर का निरीक्षण किया। एम्स से लुहणू के लिए श्री नरेंद्र मोदी का हेलिकॉप्टर रवाना हो गया।

थोड़ी ही देर में श्री नरेंद्र मोदी का हेलिकॉप्टर लुहणू मैदान में लैंड हो गया। ढोल नगाड़ों के साथ श्री मोदी का स्वागत किया गया। श्री मोदी के पहुंचते ही 'जय श्री राम' के नारों से लुहणू मैदान गूंज उठा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लुहणू मैदान में जनसभा कर चुनावी शंखनाद करेंगे।

मोदी ने कहा कि बल्क ड्रग पार्क में सिर्फ तीन राज्य हैं और उसमें हिमाचल को चुना गया है। हिमाचल वीरों की धरती है, मैंने यहां की रोटी खाई है, मुझे यहां का कर्ज चुकाना है। आज मेडिकल टूरिज्म का दौर है। हिमाचल में मेडिकल टूरिज्म की अपार संभावनाएं हैं। जब लोग विदेशों से उपचार कराने हिमाचल आएंगे तो आरोग्य होकर भी जाएंगे और यहां की खूबसूरत वादियां भी देखेंगे। हिमाचल के दोनों हाथों में लड्डू है।

मोदी ने कहा कि पूर्व सरकार की विकृत सोच थी। अच्छी सड़कें, अच्छे शिक्षण संस्थान, अस्पताल, उद्योग सिर्फ दिल्ली और बड़े शहरों में होंगे। इस सोच की वजह से देश में विकास का असंतुलन पैदा हो गया। अब देश आधुनिक सोच से आगे बढ़ रहा है। प्रदेश अभी स्वास्थ्य सुविधओं के लिए आईजीएमसी और टांडा पर ही निर्भर था। केंद्रीय विवि, आईआईएम, आईआईटी, आईआईआईटी और अब एम्स हिमाचल की शान बढ़ा रहा है। पूर्व सरकार शिलान्यास का पत्थर लगाती थी और चुनाव के बाद भूल जाती थी। अटकना, लटकना और भटकना का जमाना चला गया। ऊना के पास रेलवे लाइन बिछानी थी। रिव्यू कर रहा था तो देखा कि 35 साल पहले फैसला हुआ था। मैं हिमाचल का बेटा हूं, हिमाचल को कैसे भूल सकता हूं।

सिरसा में नगर परिषद कर्मचारियों ने झाड़ू उल्टा कर किया रोष प्रदर्शन

एजेंसी

सिरसा। सर्व कर्मचारी संघ के आह्वान पर नगर परिषद दमकल विभाग कर्मचारी संघ द्वारा संयुक्त तौर पर अपनी विभिन्न मांगों को लेकर शहर के ट्रेड टॉवर से सुभाष चौक तक उल्टा झाड़ू उठाकर रोष प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन का नेतृत्व सिरसा ब्लॉक प्रधान नरेश चौहान, उप-प्रधान बलवंत सरबटा,सचिव अरुण कुमार व राज्य कमेटी फॉयर के सचिव सुखदेव रमणा ने संयुक्त रूप से किया। इस दौरान नगरपरिषद के कार्यकारी अधिकारी को अपनी मांगों का एक ज्ञापन भी सौंपा।

जिला प्रधान राज्य कमेटी के सदस्य मनोज अटवाल ने बताया कि नगरपालिका कर्मचारी संघ हरियाणा अपने पूर्व घोषित आंदोलन के तहत 11 व 12 अक्टूबर को क्रमिक भूख हड़ताल तथा 19 व 20 अक्टूबर को 2 दिन का काम छोड़कर हड़ताल करेगा। यदि सरकार ने 20 अक्टूबर तक मांगों का निवारण नहीं किया तो संघ को दो दिवसीय हड़ताल को अनिश्चितकालीन हड़ताल में परिवर्तित करेगा जिसकी सारी जिम्मेवारी हरियाणा सरकार की होगी।

इस मौके पर राज्य कमेटी फॉयर के सचिव सुखदेव रमणा, सिरसा फॉयर जिला प्रधान राजेश खीचड़ और सचिव राजेश सहित अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे।

पुलिस ने पंजाब में भारी मात्रा में हथियार बरामद किए, एक गिरफ्तार

एजेंसी

मोगा। पंजाब में अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है। इसी कड़ी में जिला पुलिस ने एक शातिर बदमाश को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से तीन हैंड ग्रेनेड सहित बड़े पैमाने पर हथियार बरामद किए हैं। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने मंगलवार को बताया कि सीआईए मोगा पुलिस ने कनाडा स्थित केटीएफ आतंकवादी अर्श डाला के साथ संबंध रखने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया और हथियार की खेप बरामद की। उन्होंने बताया कि खेप में एक पिस्टल 30 बोर, 1 बरेटा पिस्टल 9 एमएम, 50 जिंदा कारतूस 30 बोर, 10 जिंदा कारतूस 9 एमएम, 3 हथगोले और अपराध में इस्तेमाल कार भी बरामद की गई है। ये हथियार पाकिस्तान से पांच दिन पहले मोगा के गांव चंद पुराना की खेतों में ड्रोन के माध्यम से गिराए थे।

अवैध हथियार के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

अजमेर। राजस्थान में अजमेर की ब्यावर सदर थाना पुलिस ने आज एक आरोपी को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। ब्यावर सदर थाना अधिकारी सुखराम ने बताया कि आरोपी देवेंद्र सिंह मेहरात (27) निवासी ग्राम राजियावास थाना जवाजा जिला अजमेर है। उसके पास से एक अवैध हथियार रिवॉल्वर एवं कारतूस बरामद किया गया है।

हरियाणा गुरुद्वारा कमेटी एक्ट के विरोध में शिरोमणि कमेटी ने किया रोष मार्च

एजेंसी

अमृतसर। अलग हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक समिति अधिनियम को रद्द करने और सिख मामलों में पंथ विरोधी ताकतों के हस्तक्षेप के खिलाफ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति ने श्री दरबार साहिब से अमृतसर में उपायुक्त कार्यालय तक एक विशाल विरोध मार्च निकाला और जिला उपायुक्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक मांग पत्र सौंपा। विरोध मार्च का नेतृत्व शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट हरजिंदर सिंह धामी ने किया, जिसमें काली पगड़ियां पहन कर शिरोमणि कमेटी के पदाधिकारियों, सदस्यों और कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। एडवोकेट धामी ने डीसी की अनुपस्थिति के कारण अतिरिक्त उपायुक्त को मांग पत्र सौंपने से इनकार कर दिया और कहा कि जब तक उपायुक्त स्वयं मांग पत्र प्राप्त करने नहीं आते तब तक विरोध जारी रहेगा। इसके बाद शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट धामी के नेतृत्व में सभी सदस्य धरने पर बैठ गए।

शार्ट न्यूज

पुलिस ने 11 वर्षीय बच्चे के अपहरण में शामिल वांछित अभियुक्ता को किया गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। थाना ईकोटेक प्रथम पुलिस ने 4/5 अक्टूबर 2022 को मुकदमा अपराध संख्या 121/2022 धारा 364ए, 34, 120बी भादवि थाना इकोटेक प्रथम के अंतर्गत वांछित चल रही अभियुक्ता रीनू पुत्री कुंवरपाल निवासी मियापुर दियौरा थाना इस्लामनगर जनपद बदायू वर्तमान पता शिब्बू पुत्र राजपाल अट्टा का मकान ग्राम लुक्सर थाना इकोटेक प्रथम गौतमबुद्धनगर को उसके वर्तमान निवास से गिरफ्तार कर लिया। 2 अक्टूबर 2022 को वादी ने तहरीर दी थी कि बदमाशों ने उसके 11 वर्ष के बच्चे का अपहरण कर लिया है तथा 30 लाख रूपये की मांग की जा रही है। जिसमें विशाल पुत्र भुवनेश उर्फ भूनेश, ऋषभ पुत्र सतीश को पुलिस मुठभेड के दौरान 3 अक्टूबर 2022 को जिला कारागार के पास जंगल से गिरफ्तार कर बच्चे को सकुशल बरामद कर लिया था। वांछित चल रहे अभियुक्त विशाल पाल पुत्र कुंवर पाल, शिवम यादव पुत्र राम अवतार में से एक अभियुक्त शिवम यादव पुत्र राम अवतार निवासी आशफपुर थाना बिसौली जिला बदांयू गोली लगने से घायल हो गया था जिसको उपचार के दौरान डॉक्टरो द्वारा मृत घोषित किया गया। गिरफ्तार अभियुक्ता रीनू अपहरण हुए बच्चे के पडौस में रहती है तथा इसके द्वारा बच्चे के परिजनों द्वारा की जा रही कार्यवाही के बारे में पल पल की खबर बदमाशों को दी जा रही थी ।गिरफ्तार उपरोक्त अभियुक्ता के विरुद्ध पुलिस ने आवश्यक वैधानिक कार्यवाही कर न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

25 हजार रुपये के इनामी सहित बावरियां गैंग के दो अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। जेवर थाना क्षेत्रान्तर्गत जहाँगीरपुर पुलिस चौकी प्रभारी भूपेन्द्र कुमार,जेवर टोल चौकी प्रभारी शरद यादव, एसआई राकेश बाबू ने अपने पुलिस बल के साथ मिलकर बुधवार को 25 हजार रूपये के इनामी सहित बावरिया गैंग के दो अभियुक्तों वीरन्द्र उर्फ सहवाग पुत्र राजपाल निवासी मकान नंबर जी 57 गोपाल गढी ग्राम गाजीपुर थाना गाजीपुर पूर्वी दिल्ली वर्तमान पता मकान नंबर 6 गली नंबर 5 प्रकाश विहार थाना लोनी जनपद गाजियाबाद, रुपेश उर्फ रिंकू पुत्र किशनलाल निवासी मकान नंबर एच 15 न्यू सीलम पुर थाना सीलमपुर दिल्ली को जहांगीरपुर चौराहे से गिरफ्तार कर लिया ।पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने दो तमंचा तीन सौ पन्द्रह बोर मय तीन कारतूस जिन्दा और एक मोटरसाइकिल बरामद की है ।वीरेन्द्र उर्फ सहवाग थाना जेवर के मुकदमा अपराध संख्या 370/2022 धारा 398,401,307 भादवि के तहत वांछित चल रहा था। अभियुक्त द्वारा दिनांक 29 सितम्बर 2022 को आम के बाग में पुलिस पर जान से मारने की नियत से किये गये फायर की घटना का इकबाल किया है। अभियुक्त वीरेन्द्र 25,000 रूपये का इनामी अभियुक्त है। अभियुक्तगण बावरिया गैंग के सक्रिय सदस्य है जो रात के समय संगठित होकर शस्त्रो से लैस होकर ग्राम एवं शहर में बाहर की तरफ बने मकानो में एक साथ घुसकर लूट जैसी गम्भीर घटना को अंजाम देते है तथा विरोध करने पर किसी की भी हत्या कर देते है। अभियुक्तगण शातिर किस्म के अपराधी हैं ।अभियुक्त वीरेंद्र के विरुद्ध 27 और अभियुक्त रुपेश के विरुद्ध 6 आपराधिक मुकदमे विभिन्न थानों में पंजीकृत हैं। जिनके विरुद्ध पुलिस ने आवश्यक वैधानिक कार्यवाही कर न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

चालक ने जलती गाड़ी से कूदकर बचाई जान

ग्रेटर नोएडा। यमुना एक्सप्रेसवे की सर्विस रोड पर सोमवार देर शाम चलती हुई गाड़ी में अचानक आग लग गई। चालक ने गाड़ी से कूदकर जान बचाई। करीब एक घंटे तक गाड़ी से आग की लपटें निकलती रही। वहीं, पुलिस ने घटना की जानकरी से इनकार किया है। एक्सप्रेसवे की सर्विस रोड से देर शाम एक गाड़ी नोएडा की तरफ आ रही थी, तभी गाड़ी से आग की लपटें निकलनी लगीं। कुछ देर में ही आग पूरी तरह से फैल गई। इससे पहले चालक ने दरवाजा खोलकर गाड़ी से कूदकर जान बचा ली। गाड़ी में आग लगने का कारण सीएनजी के पाइप में शार्ट सर्किट बताया जा रहा है। कोतवाली प्रभारी राधा रमन का कहना है कि घटना की जानकारी नहीं है।

गिफ्ट देने के बहाने 40 हजार हड़पे

नोएडा। साइबर जालसाज ने इंस्टाग्राम पर चार लाख रुपये का गिफ्ट देने का झांसा देकर युवती से 40 हजार रुपये हड़प लिए। इस मामले में पीड़िता ने थाना एक्सप्रेसवे थाने में शिकायत दी है। पुलिस को दी शिकायत में कनिका शर्मा ने बताया कि उनके मोबाइल पर कुछ दिन पहले इंस्टाग्राम आईडी से एक ऑफर आया था। इस ऑफर में बताया गया कि 40 हजार रुपये का भुगतान करने पर चार लाख रुपये का गिफ्ट मिलेगा। फिर एक युवक ने उनके मोबाइल पर कॉल की। उसने खुद को एक कुरियर कंपनी का कर्मचारी बताया। उसने युवती से कहा कि उनका गिफ्ट आया हुआ है। उसने युवती को 40 हजार रुपये का भुगतान करने के लिए कहा। आरोपी की बात सुनने के बाद युवती ने उसे भुगतान कर दिया। इसके बाद आरोपी ने अपना नंबर बंद कर लिया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नोएडा पुलिस चलाएगी इलेक्ट्रॉनिक गाड़ियां

नोएडा। नोएडा पुलिस अब इलेक्ट्रॉनिक गाड़ियों का प्रयोग करेगी। ताकि पर्यावरण को नुकसान कम हो। पुलिस अपने पुराने 66 वाहनों को बदलकर इनकी जगह 60 इलेक्ट्रॉनिक वाहनों को शामिल करेगी। इससे संबंधित एक प्रस्ताव सरकार को भेजा गया है। प्रस्ताव में पेट्रोलिंग के लिए इलेक्ट्रॉनिक वाहनों की मांग की गई है। पुलिस आयुक्त आलोक सिंह के निर्देशन में प्रदेश सरकार को इलेक्ट्रॉनिक वाहनों के लिए प्रस्ताव भेजा है। सरकारी कार्यों और निकाय को लेकर चर्चा भी की है। अब पुलिस को प्रस्ताव पर मंजूरी का इंतजार है। नोएडा पुलिस के पास करीब 400 वाहन हैं। इनमें डायल 112 भी शामिल है। 66 वाहनों की हालत बेकार हो गई है। जिनसे प्रदूषण काफी ज्यादा होता है। इन 66 वाहनों के बदले में कुल 60 इलेक्ट्रॉनिक वाहन मांगे हैं।

आज से बकायेदारों के कनेक्शन कटेंगे

नोएडा। विद्युत निगम गुरुवार से बकायेदारों से वसूली के लिए बड़े स्तर पर अभियान चलाएगा। निगम के मेरठ मुख्यालय ने शहर के विद्युत निगम के अधिकारियों को 10 अक्टूबर तक एक हजार बकायेदारों के कनेक्शन काटने के निर्देश दिए हैं। शहर में विद्युत निगम के एक लाख से अधिक बकायेदार हैं। इन पर विद्युत निगम के दो सौ करोड़ रुपये का बिल बकाया है। निगम ने अब बकायेदारों से वसूली के लिए एक हजार कनेक्शन काटने का निर्णय लिया है। इसके लिए सभी उपखंड कार्यालय द्वारा अभियान चलाया जाएगा। बिजली बिल जमा होने के बाद ही कनेक्शन जोड़ा जाएगा। विद्युत निगम के मुख्य अभियंता जेबी सिंह ने बताया कि मेरठ मुख्यालय से बकायेदारों द्वारा बिल जमा नहीं करने पर कनेक्शन काटने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यालय ने कार्रवाई की रोजाना रिपोर्ट मांगी है। सभी जेई और एसडीओ को भी कार्रवाई की हर रोज रिपोर्ट बनाकर देने के निर्देश दिए गए।

आज खुलेगा परिवहन विभाग का दफ्तर

नोएडा। दो दिन की छुट्टी के बाद गुरुवार को परिवहन विभाग का दफ्तर खुलेगा। दो दिन कामकाज के बाद द्वितीय शनिवार और रविवार को दफ्तर फिर बंद रहेगा। एआरटीओ प्रशासन सियाराम वर्मा ने कहा कि ड्राइविंग लाइसेंस के जो स्लॉट छुट्टी के दिन में बुक थे, उन्हें आगे बढ़ा दिया गया है। दफ्तर खुलने पर इसकी तारीख जारी कर दी जाएगी। लोग नए स्लॉट के अनुसार डीएल और वाहन संबंधी अन्य प्रक्रिया के लिए परिवहन विभाग के दफ्तर में पहुंचे।

विजय दशमी के अवसर पर केजरीवाल और सिसोदिया के भ्रष्टाचार का पुतला दहन किया

केजरीवाल के अन्याय का अंत हो चुका है और भाजपा के न्याय की जीत के परिणाम आने लगे हैं : आदेश गुप्ता

प्रफुल्ल राय/गैरवशाली भारत

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता ने सभी को विजयादशमी की बधाई देते हुए कहा कि आज सही समय है जब केजरीवाल के आठ सालों के भ्रष्टाचारी शासन का अंत किया जाए। अपने कार्यकाल में सिर्फ घोटालों की एक सीरीज चला रहे केजरीवाल और उनकी सरकार के भ्रष्टाचार का अंत होना अब जरुरी है। आज अगर केजरीवाल सरकार के कार्यकाल में हुए कार्यों को गिना जाए तो उनमें शराब घोटाला, बिजली घोटाला, जलबोर्ड घोटाला, डीटीसी घोटाला, क्लासरुम घोटाला और हवाला कारोबारियों के साथ मिलकर घोटाले की एक लंबी फेहरिस्त है। जंतर-मंतर पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के पुतले को जलाकर उनके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के खिलाफ होने वाले विरोध प्रदर्शन को संबोधित करते हुए श्री आदेश गुप्ता ने कहा कि भ्रष्टाचार के रोज नए तरीके इजाद करने की डिक्शनरी सिर्फ केजरीवाल के पास है और अपने कार्यकाल में उन्होंने सिर्फ भ्रष्टाचार के अलावा कुछ नहीं किया है। उन्होंने कहा कि बिजली में घोटाले को लेकर भाजपा शुरु से ही आवाज उठाती रही है। आज जब भ्रष्टाचार सामने है तो

केजरीवाल भाजपा पर दिल्लीवालों की सब्सिडी बंद करने का झूठा आरोप लगा रहे हैं। जबकि हकीकत यह है कि भाजपा दिल्लीवालों के साथ मिलकर केजरीवाल की दलाली की दुकान बंद करने वाली है। आदेश गुप्ता ने कहा कि सब्सिडी के नाम पर बिजली कंपनियों को हज़ारों करोड़ रुपये देकर फिर उसमें अपने हिस्से की गुलाबी नोटो की गड्डियां लेने का काम केजरीवाल ने किया है। बिजली कंपनियों में 49 फीसदी शेयर दिल्ली सरकार का है। उन्होंने कहा कि आज बिजली कंपनियों के साथ मिलकर उसके बोर्ड में अपने चहेतों को मनोनित करना ताकि उससे मोटी कमाई हो सके, यह साजिश केजरीवाल और सिसोदिया ने मिलकर की है। अपने चहेते प्रवक्ता जैसमीन शाह और राज्यसभा सांसद एन डी गुप्ता के बेटे नवीन गुप्ता को केजरीवाल ने उनकी जगह नियुक्त कर दिया जिस जगह आईआरएस, दिल्ली सरकार के वित्त विभागीय अधिकारी होने चाहिए।

आदेश गुप्ता ने कहा कि यह नियुक्ति कर केजरीवाल ने बिजली कंपनियों के 3229 करोड़ रुपये माफ करने का काम किया है। लेट फी के नाम पर प्राइवेट कंपनियों को 18 फीसदी वसूली की अनुमति केजरीवाल सरकार ने दी, लेकिन वहीं कंपनियां 12 फीसदी ही दिल्ली सरकार को दी जबकि 6 फीसदी रकम कहां गई, इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई। 8000 करोड़ रुपये का सीधा भ्रष्टाचार करने का काम केजरीवाल सरकार ने किया है।

उन्होंने कहा कि हर योजना या विभाग में अपने आदमी बैठाकर केजरीवाल करोड़ों रुपये लूटते रहे हैं और अपने लिए कमाई करना ही इनका एकमात्र उद्देश्य रह गया है।

कूड़ा जलाने के कारण आम आदमी पार्टी पर हो भारी जुर्माना: बिधूड़ी

कूड़ा जलाने के कारण ही दिल्ली में एकाएक बढ़ गया प्रदूषण, कई स्थानों पर एयर क्वालिटी पहुंची खराब श्रेणी में

आनंद राय/गैरवशाली भारत

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने राजधानी में कूड़ा जलाने के कारण आम आदमी पार्टी पर मुकदमा कायम करने और भारी जुर्माना लगाने की मांग की है।

उन्होंने कहा कि राजधानी में ग्रेप लागू होने के बाद कूड़ा जलाने पर प्रतिबंध है लेकिन आम आदमी पार्टी ने 4 अक्टूबर को 3500 जगह पर कूड़ा जलाया। उन्होंने इस बारे में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल से भी कार्रवाई की मांग की है।

उन्होंने कहा कि 4 अक्टूबर को सारा दिन आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा कूड़ा जलाने के कारण 5 अक्टूबर को दिल्ली में प्रदूषण एकदम बढ़ गया और सुबह धुएं की चादर छा गई। सुबह 10 बजे दिल्ली में एयर क्वालिटी इंडेक्स खराब श्रेणी के बहुत नजदीक 195 पर पहुंच गया। यही नहीं, आनंद विहार में तो यह 396 प्वाइंट तक पहुंच गया और शेष दिल्ली में अलीपुर, अशोक विहार, आईटीओ, जहांगीरपुरी, द्वारका, नेहरू नगर, पटपड़गंज, विवेक विहार, पूसा, आर.के. पुरम, शादीपुर और वजीरपुर में खराब श्रेणी में 200 प्वाइंट से अधिक था।

बिधूड़ी ने कहा कि राजधानी में प्रदूषण पर काबू पाने के लिए पहली अक्टूबर से ग्रेप लागू हो चुका है। इसके नियमों के तहत दिल्ली में कूड़ा जलाने जैसी गतिविधि पर पूरी तरह प्रतिबंध है। हैरानी की बात यह है कि इस बार दशहरे और दीवाली पर भी आतिशबाजी चलाने पर प्रतिबंध लगा हुआ है लेकिन आम आदमी पार्टी ने अपनी राजनीति चमकाने के लिए एक-दो नहीं बल्कि 3500 जगहों पर कूड़ा जलाया। अनेक स्थानों पर कूड़ा जलाने के वीडियो वायरल हुए और साथ ही समाचार पत्रों में भी फोटो छपे हैं।

नेता प्रतिपक्ष ने याद दिलाया कि 2020 में किराड़ी में एक स्थान पर कूड़ा जलने के कारण पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने तत्कालीन उत्तरी नगर निगम पर एक करोड़ रुपए का जुर्माना लगाने का निर्देश दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) को दिया था। 16 अक्टूबर 2020 को उन्होंने ग्रेप लागू होने पर कूड़ा जलने की घटना पर ट्वीट करके यह कार्रवाई की थी। अब कूड़ा जलाने वालों में स्वयं गोपाल राय की पार्टी के लोग ही हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि वह अपनी पार्टी के लोगों पर कितना जुर्माना लगाते हैं।

बिधूड़ी ने इस मामले में एनजीटी में शिकायत करने का फैसला किया है। उन्होंने कहा है कि 3500 जगह पर कूड़ा जलाने के कारण आम आदमी पार्टी पर न सिर्फ भारी जुर्माना किया जाना चाहिए बल्कि उसके नेताओं के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज किया जाना चाहिए। दिल्ली में प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में केजरीवाल सरकार पूरी तरह फेल हो गई है और अब वह खुद प्रदूषण बढ़ाने वाली हरकतें भी खुलेआम कर रही है।

दिल्ली में बिना मास्क घूमने की छूट, नहीं देना होगा जुर्माना

नई दिल्ली। देश में अभी भी कोरोना महामारी से संक्रमित के कई सक्रिय मरीज अभी भी मौजूद हैं। इस बीच डीडीएमए ने एक अहम फैसला लिया है। इस फैसले के तहत सार्वजनिक जगहों पर मास्क नहीं पहनने वालों से अब जुर्माना नहीं वसूला जाएगा। यह फैसला 1 अक्टूबर से लागू है। डीडीएमए की तरफ से कहा गया है कि अब सार्वजनिक स्थानों पर मास्क नहीं पहनने वालों से 500 रुपये का जुर्माना नहीं लिया जाएगा। इसके अलावा कोविड अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कॉन्ट्रैक्टर पर नियुक्त किये जाने वाले स्वास्थ्य कर्मियों की नियुक्ति भी इस साल के अंत तक रोक दी गई है। आपको बता दें कि इसी साल अगस्त के महीने में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए दिल्ली सरकार ने सभी सार्वजनिक जगहों पर मास्क ने पहनने पर 500 रुपये जुर्माना लगाने की बात कही थी। दिल्ली में 1 अगस्त को दो, 2 अगस्त को तीन, 3 अगस्त को पांच, 4 अगस्त को चार, 5 अगस्त को दो, 6 अगस्त को एक, 7 अगस्त को दो. 8 अगस्त को छह, 9 अगस्त को सात और 10 अगस्त को आठ लोगों की मौत हुई. वहीं, 22 जुलाई से 31 जुलाई तक कोरोना से 14 लोगों की मौत हई थी।

मंगलवार को स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी किए गए आंकड़ों में दैनिक कोरोना मामलों में बड़ी गिरावट देखी गई है।

एक महिला अभियुक्ता सहित चार लुटेरे गिरफ्तार, कब्जे से तीन तमंचे सहित एक स्कूटी बरामद

नोयडा। थाना सेक्टर 113 पुलिस ने लूट की घटना को अंजाम देने वाले गिरोह की एक महिला अभियुक्ता सहित चार लुटेरों मनोज पुत्र रामबीर निवासी 34/190 त्रिलोकपुरी थाना त्रिलोकपुरी दिल्ली, वागाराम पुत्र मोबताराम पुरोहित निवासी ग्राम मोरसिम पोस्ट मोरसिम तहसील बागोड़ा जनपद जालोर राजस्थान वर्तमान निवासी सेक्टर 9 विजयनगर की झुग्गी झोपडी रेलवे स्टेशन के पास थाना विजयनगर ग़ाज़ियाबाद, मनोज

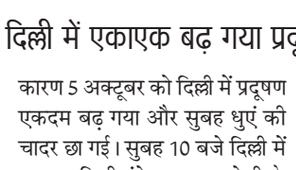

कुमार पुत्र महेंद्र निवासी ग्राम खडोली भोला रोड थाना कंकरखेड़ा जनपद मेरठ, पूनम अधिकारी पत्नी हितेश अधिकारी निवासी एफ-241 रोठनि सेक्टर 5 थाना कंकरखेड़ा जनपद मेरठ को एफएनजी रोड से मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया ।पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने तीन तमंचे तीन सौ पन्द्रह बोर मय तीन कारतूस जिन्दा और एक स्कूटी बरामद की है ।अभियुक्त मनोज उर्फ नेता पुत्र रामवीर निवासी ग्राम समाना थाना धोलाना जिला हापुड द्वारा वर्ष 2005 में थाना दादरी गौतमबुद्धनगर से ट्रक चालक के साथ लूट करने के अपराध में,वर्ष 2008 में मुम्बई से लूट के अपराध में और वर्ष 2014 में कर्नाटका से चोरी/लूट के अपराध में जेल जा चुका है।

प्रो. रवींद्र नाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' को नारायणी साहित्य अकादमी, दिल्ली/नोएडा द्वारा 'श्रेष्ठ व्याख्याता सम्मान' से सम्मानित किया गया।

विजयदशमी के अवसर पर रमेश बिधूड़ी ने किया रावण दहन

विवेक राय/गैरवशाली भारत

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली सांसद श्री रमेश बिधूड़ी ने अपने संसदीय क्षेत्र में विभिन्न धार्मिक समितियों एवं सम्माननीय क्षेत्रवासियों द्वारा शारदीय नवरात्रि के अवसर पर पिछले 9 दिनों में लगभग 20 से 25 आयोजित रामलीला मंचन, दुर्गा पूजा महोत्सव, जागरण एवं सांस्कृतिक कायर्क्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और लोगों का अभिवादन स्वींकार किया। इसी कड़ी आज विजयदशमी के अवसर पर सांसद रमेश बिधूड़ी, राजापुरी, मछली पार्क वसंत कुंज किशनगढ़, विराट मैदान अम्बेडकर नगर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर ई-ब्लॉक कालकाजी, दशहरा ग्राऊण्ड कैप्टन

गौड़ मार्ग ईस्ट ऑफ कैलाश, रामलीला ग्राऊण्ड जगदम्बा रोड़ तुगलकाबाद एक्सटेंशन, गली न0-24 के सामने डीडीए पार्क तुगलकाबाद एक्सटेंशन, रामलीला ग्राऊण्ड बंगाली कॉलोनी तुगलकाबाद गॉवं, रेलवे कॉलोनी व प्रहलादपुर में विजय आयोजित पुतला दहन कायर्क्रमों में शामिल हुए जहाँ उपस्थित धार्मिक समितियों के पदाधिकारियों द्वारा सांसद बिधूड़ी का अभिवादन किया गया है।

इस दौरान सभी कायर्क्रम स्थलों पर पुतला दहन से पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी ने लोगों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि शारदीय नवरात्रि के दसवें दिन विजयदशमी का यह पर्व भगवान श्री राम के 14 साल के वनवास और रावण वध कर बुराई पर अच्छाई का स्मरण कराता है तथा यह पर्व हम सभी को यह संदेश भी देता है कि चाहे अधर्म और बुराई की उम्र कितनी ही लंबी क्यों ना हो अंत में विजय हमेशा सत्य, धर्म की ही होती है। इसलिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में मयार्दा पुरूषोत्तम भगवान राम के आदर्शों को अपनाते हुए हमेशा सदाचार, सत्य और अच्छाई के मार्ग पर चलना चाहिए।

इस अवसर पर महरौली जिला अध्यक्ष श्री जगमोहन महलावत, पूर्व निगम पाषर्द श्री पवन राठी, श्री राजपाल पोसवाल, श्री राजपाल सिंह, श्री मनोज भाटी एवं धार्मिक समितियों के पदाधिकारियों सहित भाजपा कार्यकर्ताओं एवं क्षेत्र के सम्माननीय निवासी उपस्थित थे।

हरियाणा में 40 वर्षीय व्यक्ति की पिटाई से मौत

नूंह। हरियाणा के नूंह जिले के ऐंचवाड़ी गांव में कुछ लोगों ने 40 वर्षीय व्यक्ति को कथित तौर पर पीट-पीटकर मार डाला। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि घटना मंगलवार को हुई, जिसके बाद पुन्हाना थाने में 12 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई।

मृतक की पहचान ऐंचवाड़ी गांव के निवासी मुबीन के रूप में हुई है। मुबीन के भाई द्वारा दाखिल शिकायत के अनुसार कथित तौर पर अवैध खनन में शामिल कुछ लोग मंगलवार को खनन करके निकाले गए पत्थर एक ट्रैक्टर में ले जा रहे थे। ट्रैक्टर की रफ्तार बहुत तेज थी। जब मुबीन ने उन्हें गति धीमी करने के लिए कहा तो उनके बीच कहासुनी हो गई।

शिकायतकर्ता ने कहा, इसके कुछ देर बाद समूह ने पत्थरों, डंडों और लोहे की छड़ों से मुबीन पर हमला कर दिया। बेतहाश पिटाई के बाद उसकी मौत हो गई। शिकायत मिलने के बाद पुन्हाना थाने में आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है।

पुन्हाना थाने के प्रभारी संदीप मोर ने कहा, पोस्टमॉर्टम के बाद हमने शव परिवार को सौंप दिया है और सभी आरोपी फरार हैं।

मैनहोल में घुसकर सफाई करते हुए चार मजदूरों की मौत

हॉस्पिटल के सीवर की कर रहे थे सफाई

एजेंसी

फरीदाबाद। फरीदाबाद के एक अस्पताल के भूमिगत सीवर की सफाई के दौरान कुल चार सफाई कर्मियों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि इन सफाई कर्मियों की जहरीली गैसों के कारण दम घुटने से मौत हुई है। चारों सफाई कर्मी दिल्ली के दक्षिणपुरी में संजय कैंप के निवासी थे। वो संतोष एलाइड सर्विस नाम की एजेंसी के लिए काम करते थे। पुलिस ने बताया कि एजेंसी उन्हें फरीदाबाद सेक्टर 16 के क्यूआरजी अस्पताल में सीवर की सफाई के लिए भेजी थी।

कैसे हुई मौत

एसीपी मोहिंदर वर्मा ने बताया कि चारों सफाई कर्मी बिना किसी सुरक्षा उपकरण के मैनहोल में घुसे थे। इसी दौरान जहरीली गैसों में सांस लेने के से उनका दम घुटने लगा। वो चारो बेहोश हो गए। मैनहोल के अंदर से जब वो मदद के लिए चिल्लाए तो अस्पताल के कर्मचारी वहां पहुंचे। चारों को बाहर निकाल कर अस्पताल में भर्ती कराया गया। डाक्टरों ने उन्हें बचा नहीं पाया और उनकी मौत हो गई।

पुलिस ने बताया कि वो इस मामले की जांच कर रहे हैं। चारों सफाई कर्मियों के परिवार को इस घटना के बारे में जानकारी दे दी गई है। पुलिस ने शवों को बादशाह खान अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। पुलिस ने बताया कि चारों सफाई कर्मी हर महीने सीवर की सफाई के लिए अस्पताल आते थे। सफाई कर्मियों की मौत पर अस्पताल ने कहा कि इसके लिए वो एजेंसी जिम्मेदार है जो इन्हें बिना किसी सुरक्षा के भेजी थी। पुलिस ने बताया कि जिम्मेदार पाए जाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पत्नी की हत्या करने का आरोपी गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। सेक्टर इकोटेक-3 कोतवाली पुलिस ने दहेज के लिए पत्नी की हत्या करने के आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में मृतका के पिता ने आरोपी पति और उसके परिवार के लोगों के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज करवाया था। पुलिस घटना में शामिल अन्य आरोपियों की तलाश में जुटी है। मूलरूप से बुलंदशहर की रहने वाली प्रीति की शादी करीब चार साल पहले सिकंदराबाद स्थित नंदगढ़ी गांव के रहने वाले कालूराम के साथ हुई थी। शादी के बाद कालूराम अपनी पत्नी प्रीति के साथ कुलेसरा स्थित मधुबन विहार कॉलोनी में आकर रहने लगा। परिजनों का आरोप है कि कालूराम के परिवार के लोग प्रीति को दहेज के लिए प्रताड़ित करते थे। आरोपियों द्वारा उसके साथ मारपीट की जाती थी। प्रीति की मंगलवार सुबह संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। इसकी सूचना मिलने पर परिजन मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी पुलिस को दी थी।

दिल्ली हाई कोर्ट का आदेश, कश्मीरी अलगाववादी नेता अल्ताफ अहमद शाह को एम्स में करें स्थानांतरित

नई दिल्ली। आतंकी फंडिंग मामले में आरोपी अलगाववादी नेता अल्ताफ अहमद शाह को दिल्ली उच्च न्यायालय ने उचित इलाज के लिए एम्स स्थानान्तरित करने के आदेश दिए हैं। आरोपी तिहाड़ में बंद है। चिकित्सा जांच में अल्ताफ अहमद शाह को कैंसर की बीमारी का पता चला है। वह दिवंगत हुर्रियत नेता एसएएस गिलानी के दामाद हैं।

आरोपी अल्ताफ अहमद शाह ने न्यायालय को बताया कि वह राम मनोहर लोहिया अस्पताल (आरएमएल) में कुछ गंभीर बीमारियों का इलाज करा रहे थे, लेकिन हाल ही में पता चला कि गुर्दे के कैंसर से पीड़ित हैं। कैंसर की बीमारी चौथी स्टेज पर है। उन्होंने दावा किया कि आरएमएल में गुर्दे के कैंसर के इलाज के लिए पर्याप्त सुविधा नहीं है। आरोपी ने उच्च न्यायालय से आग्रह किया कि उन्हें तत्काल एम्स या अपोलो अस्पताल में स्थानान्तरित

करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

उपचार मौलिक अधिकार का हिस्सा

न्यायमूर्ति सुधीर कुमार जैन की पीठ ने आरोपी की याचिका पर विचार करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति फिर वह आरोपी ही क्यों ना हो, को उपयुक्त उपचार का अधिकार संविधान के तहत मौलिक अधिकारों का हिस्सा है। यह न्याय के हित में है कि याचिकाकर्ता को एम्स इलाज के लिए भेजा जाए। पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता की तरफ से पेश किए गए मेडिकल रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह बीमारियों से पीड़ित है। याचिकाकर्ता को गुर्दे के कैंसर का भी पता चला है। हालांकि याचिकाकर्ता की तरफ से यहां ऐसा कोई चिकित्सा दस्तावेज पेश नहीं किया गया है, लेकिन क्योंकि दूसरी बीमारियों का विवरण पीठ के पास है। ऐसे में उसके मौलिक अधिकारों को ध्यान में रखते हुए यह आदेश दिया जा रहा है।

सभी सुरक्षा उपाय का हो पालन

पीठ ने कहा कि संबंधित जेल अधीक्षक की सीधी निगरानी में और सभी आवश्यक सुरक्षा उपायों का पालन करने के बाद न्यायिक हिरासत में आरोपी को उचित इलाज दिलाया जाए। वहीं, इसका विरोध करते हुए एनआईए ने कहा कि वर्तमान में कोई मेडिकल रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है जो बताता हो कि याचिकाकर्ता गुर्दे के कैंसर से पीड़ित है। आरएमएल के डॉक्टरों ने उसके स्थानान्तरण की सिफारिश भी नहीं की है।

संपादकीय

अनुकंपा बनाम अधिकार

सर्वोच्च न्यायालय ने इस व्यवस्था पर विराम लगाते हुए कहा है कि अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पाना कोई अधिकार नहीं, बल्कि रियायत है।

अनेक मामलों में देखा जाता है कि नौकरी में रहते हुए अगर किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है तो उनके परिवार का कोई सदस्य अनुकंपा के आधार पर नौकरी की मांग करने लगता है। इस आधार पर नौकरी देने का प्रावधान चूंकि सरकारी नियमावली में है और बहुत सारे लोगों को इस तरह नौकरियां मिलती भी रही हैं, इसलिए यह एक तरह से अधिकार मान लिया गया है।

मगर सर्वोच्च न्यायालय ने इस व्यवस्था पर विराम लगाते हुए कहा है कि अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पाना कोई अधिकार नहीं, बल्कि रियायत है। ऐसी नियुक्ति का मकसद प्रभावित परिवार को अचानक आए संकट से उबारने में मदद करना है। मामला यों था कि केरल उच्च न्यायालय की खंडपीठ ने एक सरकारी कंपनी को नौकरी के दौरान हुई उसके एक कर्मचारी के मृत्यु पर उसकी बेटी को नियुक्ति देने पर पुनर्विचार करने का आदेश दिया था।

इस फैसले को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई। जिस कर्मचारी की मृत्यु हुई थी, उसकी पत्नी भी कहीं नौकरी कर रही थी। फिर, कर्मचारी की बेटी ने अपने पिता की मृत्यु के चौबीस साल बाद अनुकंपा के आधार पर नौकरी पाने का अनुरोध किया था। इसी आधार पर सर्वोच्च न्यायालय ने उसके दावे को खारिज कर दिया और कहा कि किसी की मृत्यु के चौबीस साल बाद अनुकंपा पर नौकरी पाने का अनुरोध नहीं किया जा सकता।

दरअसल, अनुकंपा के आधार पर नौकरी देने की व्यवस्था इसलिए की गई थी कि अगर किसी परिवार का एकमात्र कमाने वाले व्यक्ति की किन्हीं स्थितियों में मृत्यु हो जाती है और उस परिवार के सामने भरण-पोषण का संकट खड़ा हो जाता है, तो उसके बच्चों में से किसी को या उसकी पत्नी को उनकी योग्यता के अनुसार नौकरी देकर मदद की जाए।

यह उस परिवार को आर्थिक संकट से उबारने के लिए मानवीय आधार पर की गई व्यवस्था है, न कि किसी को अधिकार के रूप में प्रदान की गई है। अगर मृत कर्मचारी के परिवार में कोई पहले से नौकरी करता या ऐसा कोई काम करता है, जिससे परिवार का भरण-पोषण हो सकता है, तो अनुकंपा का नियम स्वत: कमजोर पड़ जाता है।

मगर हमारे देश में चूंकि सरकारी नौकरियों की काफी कमी है, इसलिए लोग किसी भी तरह उन्हें पाने की कोशिश करते हैं। अनुकंपा आधार पर नौकरी पाना आसान लगता है, इसलिए अक्सर उस पर लोग अपना दावा ठोंकते देखे जाते हैं। फिर अनुकंपा में फैसला संबंधित विभाग के बड़े अधिकारियों को ही करना होता है, इसलिए उन्हें अपने पक्ष में करना आसान लगता है। इस तरह कई ऐसे लोग भी नौकरी पा जाते हैं, जिन पर अनुकंपा के नियम लागू नहीं होते। जिस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने ताजा फैसला दिया, वह भी कुछ ऐसा ही था।

इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी साफ कर दिया है कि अनुच्छेद चौदह और सोलह के तहत सभी उम्मीदवारों को सभी सरकारी रिक्तियों के लिए समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वास्तव में जो अनुकंपा के आधार पर नौकरी के योग्य नहीं हैं, उन्हें क्यों इसका लाभ लेने दिया जाए। इस तरह बहुत सारे योग्य लोगों का हक मारा जाता है।

यह मानवीय तकाजा है कि कंपनियों और सरकारी महकमों को संकट के समय अपने कर्मचारियों के परिवार के भरण-पोषण की चिंता होनी चाहिए। मगर यह केवल अनुकंपा आधार पर नौकरी देने से ही जाहिर नहीं होती। भविष्य निधि, विशेष सहायता कोष आदि के जरिए भी मदद पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। नौकरी के मामले में योग्यता की रक्षा होनी चाहिए।

मुफ्त का जोखिम

चुनावी जीत और सत्ता में आने के लिए मुफ्त सुविधा के वादे एक आसान जरिया बन गए हैं।

हर चुनाव में मतदाताओं का समर्थन हासिल करने के मकसद से लगभग सभी राजनीतिक पार्टियां कई तरह की सुविधाएं मुहैया कराने के वादे करती हैं। इनमें कोई वस्तु या सुविधा बिल्कुल मुफ्त देने का वादा भी शामिल है। यों सत्ता में आने पर किसी पार्टी का वादे से मुकर जाना या उसे लेकर टालमटोल करना कोई हैरानी की बात नहीं है, लेकिन चुनावों में जीत की होड़ ने आजकल राजनीतिक दलों के सामने मुफ्त की सुविधा के कुछ वादों को जमीन पर उतारने की मजबूरी पैदा कर दी है।

हो सकता है कि इससे जनता के कुछ हिस्से को थोड़ा आर्थिक लाभ होता हो, लेकिन इस व्यवस्था के चलते राजस्व का जो नुकसान होता है, उसकी भरपाई में लंबा वक्त लग जाता है। इसी के मद्देनजर भारतीय स्टेट बैंक के अर्थशास्त्रियों ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि विभिन्न राजनीतिक दलों की ओर से मुफ्त में दी जाने वाली सुविधाओं की घोषणा भविष्य में अर्थव्यवस्था के लिए घातक साबित हो सकती है। यों इसकी व्यावहारिकता और इसके असर को लेकर पहले भी चिंता जताई जा चुकी है, मगर अब तक इस प्रवृत्ति पर लगाम लगाने को लेकर कोई गंभीरता नहीं दिखी है।

दरअसल, महज चुनावी जीत और सत्ता में आने के लिए मुफ्त सुविधा के वादे एक आसान जरिया बनते गए हैं। जबकि जिन मुश्किलों की वजह से जनता किसी अभाव या मुफ्त के आकर्षण में फंसती है, उन समस्याओं के हल के प्रति कोई पार्टी गंभीर नहीं दिखती और न कोई दूरदर्शी योजना पेश करती है। इसलिए चुनावी राजनीति में वादे से लेकर योजनाओं तक में मुफ्त का आकर्षण परोसने पर रोक नहीं लग पा रही है।

इस संदर्भ में भारतीय स्टेट बैंक की रिपोर्ट में आगाह करते हुए सुझाव दिया गया है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित समिति ऐसे खर्चों को राज्य के सकल घरेलू उत्पाद या कर संग्रह के एक फीसद तक सीमित कर दे। मसलन, गरीब राज्यों में गिने जाने वाले छत्तीसगढ़, झारखंड और राजस्थान में सालाना पेंशन देनदारी तीन लाख करोड़ रुपए अनुमानित है। मगर इन राज्यों के कर राजस्व के फीसद के रूप में अगर पेंशन देनदारी को देखा जाए तो यह काफी ऊंचा है। विडंबना यह है कि सरकारें मुफ्त की योजनाओं की घोषणा या उन पर अमल करते हुए यह ध्यान रखना जरूरी नहीं समझतीं कि इससे जीडीपी या कर संग्रह का संतुलन कितना कायम रहेगा।

सवाल है कि अगर आम जनता आय और क्रय शक्ति की कसौटी पर एक संतोषजनक स्थिति में रहे, उसे किसी सुविधा की कीमत और उससे हासिल राजस्व की उपयोगिता के बारे में बताया जाए तो मुफ्त का वादा परोसने की जरूरत ही क्यों पड़ेगी? मगर राजनीतिक दलों के लिए शायद यह ऐसा काम लगता है, जिससे भविष्य में एक जागरूक समाज तैयार हो सकता है, जो किसी पार्टी को उसकी दृष्टि और दूरदर्शिता की कसौटी पर देखे।

जनकल्याण की योजनाओं में जरूरतमंद तबकों की पहचान की जाती है, सामाजिक सुरक्षा के लिहाज से अनिवार्य समझ कर सरकार सहायतार्थ कोई कार्यक्रम चलाती है तो उसके संदर्भ अलग होते हैं। लेकिन मुफ्त बिजली या कोई अन्य योजना जब सबके लिए घोषित की जाती है तो उसमें वैसे लोग भी इसका लाभ उठाते हैं जिन्हें किसी मदद की जरूरत नहीं होती और वे आर्थिक रूप से सक्षम होते हैं। ऐसी विरोधाभासी स्थितियों का विपरीत असर दूसरी ज्यादा जरूरी योजनाओं के अमल पर पड़ता है। इसलिए यह आशंका निराधार नहीं है कि मुफ्त की घोषणाओं की होड़ आने वाले वक्त में देश की अर्थव्यवस्था के लिए घातक साबित हो सकती है।

पेशा अध्यापन का मनोवृत्ति राक्षसीय

निर्मल रानी

स्कूली शिक्षा ग्रहण करने वाला लगभग प्रत्येक भारतवासी संत कबीर के उन दोहों से भली भांति परिचित है जो हमें गुरु के रुतबे व उनके महत्व से परिचित कराते हैं। संत कबीर का सबसे प्रसिद्ध व प्रचलित दोहा गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।

बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।। अर्थात गुरू और गोबिंद (भगवान) एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए - गुरू को अथवा गोबिन्द को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यानी गुरु भगवान से भी पहले पूजनीय है। इसी प्रकार कबीर दास कहते हैं -गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोष। गुरू बिन लखै न सत्य को गुरू बिन मिटै न दोष।।

यानी - हे सांसारिक प्राणियों। बिना गुरू के ज्ञान का मिलना असम्भव है। तब तक मनुष्य अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता हुआ मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है जब तक कि गुरू की कृपा प्राप्त नहीं होती।

मोक्ष रूपी मार्ग दिखाने वाले गुरू हैं। बिना गुरू के सत्य एवं असत्य का ज्ञान नहीं होता। उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता फिर मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? अत: गुरू की शरण में जाओ। गुरू ही सच्ची राह दिखाएंगे।

इसी तरह -गुरू पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत। वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत।। अर्थात गुरू और पारस के अन्तर को सभी ज्ञानी पुरुष जानते हैं। पारस मणि के विषय में जग विख्यात है कि उसके स्पर्श से लोहा सोने का बन जाता है। किन्तु गुरू भी इतने महान होते हैं कि अपने गुण ज्ञान में ढालकर शिष्य को अपने जैसा ही महान बना लेते हैं।

संत कबीर की ही तरह अनेक कवियों, महापुरुषों, चिंतकों, संतों, ऋषि मुनियों ने गुरुओं की महानता का बखान अपने अपने तरीक़े से करते हुए गुरु या शिक्षक को सर्वोच्च स्थान देने की कोशिश की है।

तो क्या हमारे उन महापुरुषों द्वारा गुरुओं के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विचार वर्तमान युग में सही साबित हो रहे हैं ? क्या आज का सम्पूर्ण शिक्षक समाज गोविन्द अर्थात भगवान के समतुल्य है ? या फिर प्रदूषित होते जा रहे अन्य पेशों की ही तरह अध्यापन जैसा यह पवित्र पेशा भी अब इस पेशे में प्रवेश कर चुके अनेक साम्प्रदायिकतावादी, जातिवादी, अहंकारी, अपराधी सोच रखने वाले पूर्वाग्रही व राक्षसी मनोवृत्ति रखने वाले लोगों की वजह से बदनाम व अविश्वसनीय होता जा रहा है ? अनेक शिक्षकों की क्रूरता के संबंध में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये दिन प्राप्त होने वाले समाचार तो कम से कम ऐसा ही आभास कराते हैं।

राजस्थान के जालोर जिले के सुराणा गांव स्थित निजी स्कूल सरस्वती विद्या मंदिर की इसी वर्ष 20 जुलाई की घटना ने पूरे देश को आक्रोशित कर दिया था। इस घटना में कथित तौर पर छैल सिंह नामक एक अध्यापक ने तीसरी कक्षा के छात्र इंद्र मेघवाल को इतना पीटा कि बच्चे की कान की नस फट गई और अस्पताल में उसकी मौत हो गई थी। बताया गया था कि मृतक छात्र ने पेयजल के मटके को कथित रूप से छू लिया था। जिसके बाद ही शिक्षक छैल सिंह ने उसकी पिटाई कर डाली। इस घटना से जातिवादी तनाव भी पैदा हो गया था।

यूपी के औरैया में 10वीं में पढ़ने वाले निखिल नामक एक दलित छात्र की किसी ग़लती को लेकर स्कूल में शिक्षक ने कथित तौर पर बुरी तरह पिटाई कर दी। इसके बाद छात्र को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

एक शिक्षक द्वारा बेरहमी से पीटे जाने के बाद 8 साल के एक छात्र की मौत हो गई। बताया जाता है कि होमवर्क न करने पर शिक्षक द्वारा छात्र को बेरहमी से मारा गया था।

क्या किसी गोविन्द समान गुरु से यह उम्मीद की जा सकती है कि वह अपने शिष्य के पानी की मटकी छू लेने मात्र से इतना क्रोधित हो उठे कि गुरु की जानलेवा पिटाई से बच्चे की मौत हो जाये?

ऐसी ही एक घटना पिछले दिनों बिहार के गया ज़िले के वज़ीर गंज इलाक़े के एक स्कूल में घटी। यहां भी एक शिक्षक द्वारा बेरहमी से पीटे जाने के बाद 8 साल के एक छात्र की मौत हो गई। बताया जाता है कि होमवर्क न करने पर शिक्षक द्वारा छात्र को बेरहमी से मारा गया था। पटना में एक शिक्षक ने 5 साल के छात्र को उसके द्वारा संचालित कोचिंग क्लास में पढ़ाई ना करने पर डंडे से इतना मारा कि मारते-मारते डंडा टूट गया। इसके बाद क्रूर लालची शिक्षक ने बच्चे की लात-घूंसे से भी पिटाई की।

इस दौरान बच्चा ज़मीन पर गिर गया परन्तु वह उसे लात-घूंसे-थप्पड़ से लगातार पीटता रहा। बच्चा चीख़ता चिल्लाता रहा और शिक्षक से उसे छोड़ने की मिन्नतें करता रहा, परन्तु दुष्ट अध्यापक ने उसे इतना मारा कि बच्चे की मौत हो गई। इसी तरह बिहार के गया के एक निजी स्कूल में तीसरी क्लास में पढ़ने वाले 6 साल के विवेक को उसके गुरूजी व गुरूजी की धर्मपत्नी दोनों ने कमरे में बंद कर उस बच्चे की छाती पर चढ़कर उसे इतना पीटा कि बच्चे की मौत हो गयी।

बच्चे का क़ुसूर केवल इतना था कि उसने दुर्गा पूजा की थाली में रखे प्रसाद में से एक सेब उठा लिया था। क्या बच्चे की मौत से मां दुर्गा प्रसन्न हुई होंगी ?

यूपी के औरैया में 10वीं में पढ़ने वाले निखिल नामक एक दलित छात्र की किसी ग़लती को लेकर स्कूल में शिक्षक ने कथित तौर पर बुरी तरह पिटाई कर दी।

इसके बाद छात्र को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। निखिल दसवीं कक्षा का छात्र था। उत्तर प्रदेश के ही श्रावस्ती ज़िले के सिरसिया क्षेत्र के एक निजी स्कूल में बनकटवा गांव निवासी तीसरी कक्षा के छात्र बृजेश विश्वकर्मा की उसके शिक्षक ने कथित तौर पर इतनी पिटाई की कि बच्चे की मौत हो गयी। मृतक छात्र के परिजनों का आरोप था कि बृजेश विश्वकर्मा को उसके शिक्षक ने स्कूल की फ़ीस जो 250 रुपये प्रति माह है,समय पर अदा न करने के ग़लत आरोप में पीटा था। परिजनों के अनुसार फ़ीस का भुगतान ऑनलाइन किया जा चुका था,परन्तु शायद अध्यापक को इसका पता नहीं चला।

उपरोक्त चंद उदाहरण कलयुग के इस दौर में शिक्षक समाज में प्रवेश कर चुके कुछ क्रूर मानसिकता रखने वाले लोगों के चरित्र व उनकी क्रूर व आपराधिक मानसिकता को उजागर करने के लिये काफ़ी हैं। परन्तु इसी शिक्षक समाज में ऐसे शिक्षक भी मौजूद हैं जो बच्चों को अपनी संतानों जैसा प्यार देते हैं।

अपने छात्रों की सफलता से गौरवान्वित होते हैं। बच्चों से ट्यूशन पढ़ाने की कोई अतिरिक्त फ़ीस नहीं लेते। यहाँ तक कि ग़रीब बच्चों की फ़ीस स्वयं भरने वाले शिक्षक आज भी मौजूद हैं।

यूँही नहीं भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम ने स्वयं को पूर्व राष्ट्रपति, भारत रत्न अथवा मिसाइल मैन के बजाये स्वयं को प्रोफ़ेसर कहकर संबोधित किये जाने का अनुरोध किया था। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि इस पवित्र व नोबेल शिक्षा जगत में ऐसे लोगों का प्रवेश हो गया है जिनका पेशा तो अध्यापन का है परन्तु उनकी मनोवृत्ति राक्षसीय है ?

ताप वृद्धि से आक्सीजन व जल स्रोतों पर संकट

विजय गर्ग

ग्लो बल वार्मिंग से पृथ्वी के ऑक्सीजन और जल के स्रोतों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया है। पृथ्वी के जीवन चक्र में समुद्रों में रहने वाले छोटे से छोटे जीवों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। हमारी जैविक और पर्यावरणीय प्रणालियां इन जीवों पर निर्भर हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इनमें से बहुत से जीव पृथ्वी के लिए बड़े पैमाने पर ऑक्सीजन का उत्पादन भी करते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्रों के बढ़ते हुए अम्लीकरण से इन सूक्ष्म जीवाणुओं के लिए संकट पैदा हो गया है। समुद्रों में तैरने वाले ये जीव 'डायटम' कहलाते हैं। ये दरअसल एक कोशिका वाले शैवाल हैं जो प्रकाश संश्लेषण करते हैं। दुनिया को करीब 20 प्रतिशत ऑक्सीजन इस शैवाल से प्राप्त होती है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि समुद्रों के अम्लीय होने से इन जीवों के समक्ष सिलिका (सिलिकॉन और ऑक्सीजन के यौगिक) का संकट उत्पन्न हो जाएगा। इन्हें अपना बाहरी सुरक्षात्मक कवच बनाने के लिए सिलिका की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने पता लगाया कि समुद्रों के अम्लीकरण से अगली सदी के अंत तक इनकी संख्या 26 प्रतिशत कम हो सकती है। जर्मनी के कील स्थित जियोमार समुद्री अनुसंधान केंद्र के समुद्र जीव-विज्ञानी जान टॉशेर ने कहा कि डायटम समुद्र के सबसे महत्वपूर्ण शैवाल समूहों में गिने जाते हैं। उनकी संख्या में गिरावट से समुद्री खाद्य चक्र में परिवर्तन हो सकता है। इससे समुद्रों की कार्बन ग्रहण क्षमता पर भी असर पड़ सकता है।

समुद्र में प्रकाश संश्लेषण करने वाले जीवों में करीब 40 प्रतिशत डायटम हैं। ये उस जैविक पंप के प्रमुख हिस्से हैं जो वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण कर उसे समुद्र की गहराइयों में जमा कर देते हैं। यही वजह है कि ये समुद्र मनुष्यों द्वारा उत्पन्न अत्यधिक कार्बन डाइऑक्साइड को जमा करने में सफल रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे हमारी अत्यधिक कार्बन डाइऑक्साइड समुद्र में घुलती है, वह क्रिया करके अधिक हाइड्रोजन आयन (विद्युत चार्ज वाले अणु) बनाती है। इससे पानी की अम्लता बढ़ जाती है। समूह के इस बदले हुए रासायनिक स्वरूप ने औद्योगीकरण के बाद समुद्र में कार्बोनेट की मात्रा में 10 प्रतिशत की कमी कर दी है। कार्बोनेट की मात्रा कम होने का मतलब यह है कि कैल्शियम कार्बोनेट मुश्किल से बनेगा जो कि अधिकांश समुद्री जीवों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण यौगिक है। जीवों को अपने बाहरी खोल के लिए कैल्शियम कार्बोनेट चाहिए। यदि कार्बोनेट की मात्रा बहुत कम हो जाती है तो कैल्शियम कार्बोनेट घुलने लगता है। इस समय कुछ जीवों के खोल तो घुलने भी लगे हैं।

पहले डायटम के बारे में सोचा गया था कि इन पर समुद्रों के अम्लीकरण का कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि ये जीवाणु अपने अनोखे पारदर्शी खोलों के लिए एकदम अलग पदार्थ का उपयोग करते हैं। यह भी माना गया था कि कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ने से इनको लाभ होगा। ये शैवाल अपना खोल बनाने के लिए समुद्र की सतह पर तैरने वाले सिलिका कणों का उपयोग करते हैं। नए अध्ययन में एक ऐसी चीज प्रकाश में आई है जिस पर पिछले अध्ययनों में ध्यान नहीं गया था। वह यह कि अम्लता बढ़ने से सिलिका का घुलना धीमा पड़ जाता है। सिलिका कण डूब कर समुद्र की गहराई में पहुंचने लगते हैं। समुद्र तल पर जमा सिलिका डायटम की पहुंच से दूर हो जाता है। इससे खोल बनाने की इन जीवों की क्षमता प्रभावित होती है।

पृथ्वी का तापमान बढ़ने का एक बुरा असर दुनिया के स्वच्छ जल के स्रोतों पर भी पड़ रहा है। एक नए अध्ययन से पता चला है कि पृथ्वी के ताजे पानी के स्रोत तेजी से वाष्पित हो रहे हैं और यह दर पिछले अनुमानों से बहुत ज्यादा है।

अंधविश्वास के अंधेरे

दिल्ली के लोधी कालोनी इलाके में जिस तरह अंधविश्वास के शिकार दो लोगों ने 'बलि' के लिए एक बच्चे को मार डाला, उससे साफ है कि विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियों से रोशन शहरों में कैसे अंधविश्वास के अंधेरे पल रहे हैं। खबर के मुताबिक, बच्चे को मार डालने का आरोप जिन दो लोगों पर है, उन्होंने यह कबूल किया कि उन्होंने 'समृद्धि' हासिल करने के लिए बच्चे की हत्या कर दी। यों दिल्ली में हत्या जैसे जघन्य अपराध कोई नई बात नहीं हैं, मगर छह साल के बच्चे का सिर फोड़ कर और गला रेत कर मार डालने की इस घटना की कई परतें हैं। निश्चित रूप से इसे भी हत्या का अपराध माना जाएगा और दोषियों के लिए सजा भी कानून के ही मुताबिक ही तय की जाएगी। मगर महज किसी भ्रम या लालच को पूरा करने के लिए एक बच्चे की जान ले लेने की क्रूरता का खयाल किसी के भीतर कैसे आता है? यह बात आरोपियों के दिमाग में कहां से आई कि किसी बच्चे की बलि देने से उन्हें समृद्धि हासिल हो सकती है? इस घटना के आरोपी पकड़े गए, मगर क्या उनके दिमाग में यह अंधविश्वास भरने वाले व्यक्ति या स्रोत की भी कभी खोज की जाएगी? दरअसल, आम जनजीवन में ऐसी बहुत सारी बातें घुली-मिली हैं, जिन्हें लोग कई बार आस्था और विश्वास के नाम पर मानते चलते हैं। पर्व-त्योहार या रोजमर्रा के अभ्यास में कुछ बातें लोग सिर्फ इसलिए निभाते हैं कि परंपरा के मुताबिक वह एक रिवायत रही है। भले उसके पीछे कोई तर्क हो या नहीं या फिर वह अमानवीय ही क्यों न हो! उस पर कोई सवाल नहीं उठाया जाता। नतीजा यह होता है कि लोग रीति-रिवाज के नाम पर चलने वाली वैसी गतिविधियों में अगर सीधे शामिल नहीं भी होते हैं तो उसके मूकदर्शक होते हैं या फिर उसे नजरअंदाज करते हैं। धार्मिक कर्मकांडों के तहत 'बलि' भी एक ऐसी मिथ्या धारणा और क्रूर गतिविधि है, जो किसी मनोकामना के पूरा होने के भ्रम से जुड़ी है।

भारत में साहित्य का अणखुट ख़ज़ाना

साहित्य एक राष्ट्र की महानता और वैभवता दिखाने का एक माध्यम है

भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य का अपना स्वतंत्र और प्रखर वैशिष्ट्य है जो अपने प्रदेश के व्यक्तित्व से मुद्रंकित है- एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - भारत एक धर्मनिरपेक्ष, सबसे बड़ा लोकतंत्र और आदि अनादि काल से ही साहित्य की सबसे पुरानी या प्रारंभिक कृतियां मौखिक रूप से प्रेषित थी।साथियों हम अगर साहित्य, संस्कृति के इतिहास में जाएं तो हमें पता पता चलेगा कि, भारतीय साहित्य की सबसे पुरानी या प्रारंभिक कृतियाँ मौखिक रूप से प्रेषित थीं।संस्कृत साहित्य की शुरुआत होती है 5500 से 5200ईसा पूर्व के बीच संकलित ऋग्वेद से जो की पवित्र भजनों का एक संकलन है।

साथियों मेरा मानना है कि भारतीय साहित्य सबसे पुराना है आज हम वैश्विक स्तर पर देख रहे हैं कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्मनिरपेक्षता, साहित्य को पूर्ण विकसित देश भी देखने पर हैरानी महसूस करते हैं ऊपर से हम 135 करोड़ जनसंख्या का एक विशाल संगठन है। एक विशाल जनसंख्यकीय जनशक्ति हैं।22 करोड़ जनसंख्या के रूप में हमारा यूपी विश्व में पांचवी जनसंख्यकीय के बड़े क्षेत्र में गिना जाता है। याने यूपी जितनी जनसंख्या शक्ति में गिना जाए तो विश्व का पांचवा नंबर देश लगेगा।

साथियों बात अगर हम भारत के साहित्य की करें तो भारत में साहित्य का अणखुट खजाना है। हमारे राष्ट्र में वेद कतेब इतने हैं कि जिनकी व्याख्या हम कागज कलम से नहीं कर सकते, इसलिए ही हमारे भारत को साहित्य सृजनकर्ता की भी हम संज्ञा दे सकते हैं। साहित्य और संस्कृति एक राष्ट्र की महानता और वैभवता दिखाने का एक माध्यम भी है जो कि भारत में साहित्य का अणखुट खजाना भरा है।

साथियों बात अगर हम भारत में संस्कृति की करें तो, संस्कृत के महाकाव्य रामायण और महाभारत पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में आये। पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व की पहली कुछ सदियों के दौरान शास्त्रीय संस्कृत खूब फली-फूली, तमिल संगम साहित्य और पाली केनोन ने भी इस समय काफी प्रगति की।

साथियों बात अगर हम भारत में संस्कृति की करें तो, भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं। इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज़, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है। पिछली पाँच सहस्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति-रिवाज़, भाषाएँ, प्रथाएँ और परंपराएँ इसके एक-दूसरे से परस्पर संबंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती हैं। भारत कई धार्मिक प्रणालियों, जैसे कि सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म, सिंधी धर्म धर्मों का जनक है। इस मिश्रण से भारत में उत्पन्न हुए विभिन्न धर्म और परम्पराओं ने विश्व के अलग-अलग हिस्सों को भी बहुत प्रभावित किया है। भारत में ऋग्वेद के समय से कविता के साथ-साथ गद्य रचनाओं की मजबूत परंपरा है कविता प्राय: संगीत की परम्पराओं से सम्बद्ध होती है और कविताओं का एक बड़ा भाग धार्मिक आंदोलनों पर आधारित होता है या उनसे जुड़ा होता है लेखक और दार्शनिक अक्सर कुशल कवि भी होते थे आधुनिक समय में, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रवाद और अहिंसा को प्रोत्साहित करने के लिए कविता ने एक महत्वपूर्ण हथियार की भूमिका निभाई है।

साथियों बात अगर हम भारत के 28 राज्यों और 9 केंद्रशासित प्रदेशों की करें तो, भारतीय गणराज्य में 22 आधिकारिक मान्यता प्राप्त भाषाएँ है। वर्तमान समय में भारत में मुख्यत: दो साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार। हिन्दी तथा कन्नड भाषाओं को आठ-आठ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए गये हैं। बांग्ला और मलयालम को पाँच-पाँच, उड़िया को चार, गुजराती, मराठी, तेलुगु और उर्दू को तीन-तीन, तथा असमिया, तमिल को दो-दो और संस्कृत को एक ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान स्थिति के साहित्य में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के योगदान की करें तो मेरा मानना है कि यह मीडिया वर्तमान साहित्य, कविता, लेख, गद्य को जीवंतता प्रदान करते हैं।अगर हम कोई भी कविता या लेख लिखते हैं तो वह हमारी योग्यता हम तक ही रहता है, किसी को क्या पता चलेगा कि हमने क्या लिखा है, और हमारा साहित्य क्या है ?? यह हमारी मीडिया ही है जो बिना स्वार्थ देश और भक्ति में हमारे लेखन को आम आदमी तक पहुंचाकर उनमें जीवंतता प्रदान करती है जो काबिले तारीफ है।

साथियों बात अगर हम माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने कहा कि, साहित्य को आकार देने में किसी देश की संस्कृति और परंपराएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने लोक साहित्य को संरक्षित रखेंगे तो हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर पाएंगे।उन्होंने कहा कि साहित्य वह माध्यम है, जिसके जरिए एक राष्ट्र की महानता और वैभव को दिखाया जाता है। उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त की कि लेखक, कवि, बुद्धिजीवी और पत्रकार अपने सभी लेखन और कार्यों में सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता दें। उन्होंने लेखकों से बाल साहित्य पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध किया। साथ ही, उन्हें बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए नए तरीकों की खोज करने का भी सुझाव दिया।

सांझ देखो ढ़ल रही है

-मुकेश अमन'

सांझ देखो ढ़ल रही है,
तुम दीये की लौ जलाओ ।

रह गये जो दूर दिल से,
उनको अपने पास बुलाओ ।।1।।

भोर के, दोपहर के सब,
हर नदी, हर लहर के अब,

बैठकर हर लेन-देन तुम,
जी लगाकर फिर मिलाओ ।।2।।
सांझ देखो ..... ।।

बोझ ढ़ोते खूब रहे हम,
हंसते-रोते खूब रहे हम,

आज सारे राज दिल के,
वक्त है सबको बताओ ।।3।।
सांझ देखो ..... ।।

सांझ को मिलनी है रजनी,
सांझ तय ढ़लनी है ढ़लनी,

देर क्यूं, किस बात की अब,
अमन सुनहरे गीत गाओ ।।4।।
सांझ देखो ..... ।।

शार्ट न्यूज

बहराइच में 5.30 करोड़ की ब्राउन शुगर बरामद, तस्कर गिरफ्तार

बहराइच। बहराइच जिले में खैरीघाट पुलिस व एसओजी ने थैलियां गांव के पास दबिश देकर एक मादक पदार्थ तस्कर को दबोच लिया। उसके पास से ब्राउन शुगर व 18 हजार नकदी बरामद की गई है। बरामद ब्राउन शुगर की अन्तरराष्ट्रीय बाजार में अनुमानित कीमत 5.30 करोड़ आंकी गई है। एसएसपी केशव कुमार चौधरी ने बताया कि खैरीघाट एसएचओ निखिल कुमार श्रीवास्तव को भनक लगी कि कोई तस्कर मादक पदार्थ की बड़ी खेप लेकर उनके इलाके से नेपाल ले जाने की फिराक में है। यह जानकारी अफसरों को दी गई। एसएसपी ग्रामीण अशोक कुमार व सीओ महसी जेपी त्रिपाठी के पर्यवेक्षण में निरीक्षक अपराध दुर्ग विजय सिंह, वरिष्ठ उपनिरीक्षक अरविंद कुमार मिश्र व पुलिस बल के साथ तस्कर की तलाश में निकला। रास्ते में एसओजी प्रभारी अनुज त्रिपाठी व उनकी टीम मिली। संयुक्त रूप से तस्कर की तलाश की मुहिम में गति आई। थैलियां गांव के पास पुलिया पर एक संदिग्ध युवक को रोककर तलाशी ली गई। उसके पास से 530 ग्राम ब्राउन शुगर व 18 हजार रुपये नकद मिले। गिरफ्तार आरोपी की पहचान रामगांव थाने के रमुवापुर निवासी सद्दाम हुसैन उर्फ रईस आलम के रूप में हुई। उसने पूछताछ में बताया कि इस खेप को सरहद पार नेपाल ले जाया जाना था। गिरफ्तार आरोपी पर एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर उसे जेल भेज दिया गया है।

लखनऊ में तेज बारिश में दुर्गा पूजा पंडाल गिरा, दबी महिला जख्मी

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में सुबह से लगातार हो रही बारिश के कारण डीपीएस एल्डिको के सामने स्थित पार्क में लगा दुर्गा पूजा पंडाल गिर गया। मौके पर एक महिला दबकर मामूली रूप से घायल हो गई। घटना की सूचना मिलते ही जिलाधिकारी सूर्य पाल गंगवार व अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे। स्थानीय लोगों के अनुसार बारिश के कारण पहले ही लोग पूजा पंडाल छोड़ चुके थे। इक्का दुक्का टेंट कर्मी वहां मौजूद थे। घायल महिला को अस्पताल पहुंचा दिया गया। वहीं, मौके पर पहुंच कर डीएम ने लोगों से बात की। साथ ही निर्देश दिए कि गुरुवार को जिले के सभी टेंट संचालकों का प्रशिक्षण कराया जाएगा। इसमें बताया जाएगा कि आपदा के समय किस तरह बचाव करना है। यह प्रशिक्षण अग्निशमन विभाग और एसडीआरएफ के एक्सपर्ट देंगे।

मूर्ति विसर्जन में बारिश ने डाली बाधा : पूजा पंडालों में भरे पानी के बीच हुआ सिंदूर खेला

कानपुर। कानपुर में सुबह से हो रही बारिश के चलते दुर्गा पूजा पंडालों में पानी भर गया। इसकी वजह से बड़े दुर्गा आयोजनों में बुधवार को होने वाले आयोजन महल औपचारिकता बनकर ही रह गए। मोतीझील में आयोजित पूजा में महिलाओं ने जलभराव के बीच सिंदूर खेला खेला। मां को भी सिंदूर अर्पित किया। वहीं दुर्गा पूजा के विसर्जन यात्राएं भी स्थगित कर दी गईं और लोगों ने भीगते हुए आनन-फानन में घाटों पर मूर्तियों का विसर्जन किया। दुर्गा प्रतिमा विसर्जन और दशहरे को लेकर पूरे जिले में अलर्ट घोषित कर दिया गया है। 4 जोन में पूरे जिले को बांटकर पुलिस और प्रशासनिक अफसरों को मुस्तैद किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों की जिम्मेदारी ष्ठरूफाइनेंस और शहर की ष्ठरूसिटी को दी गई है। मां दुर्गा को विदाई देने के लिए पंडालों में तैयारियां शुरू हो गई है। महिलाओं के सिंदूर खेला के बाद मां को विदाई दी जाएगी। इसके बाद प्रतिमा विजर्सन की प्रक्रिया शुरू होगी। भक्त डीजे और ढोल की थाप पर विसर्जन यात्रा निकालकर घाट तक पहुंचेंगे। कृत्रिम घाटों पर प्रतिमा विसर्जित करेंगे। अर्मापुर दुर्गा पूजा का विसर्जन कल होगा।

रावण दहन से पहले बॉलीवुड स्टार्स का पुतला फूंका

वाराणसी। वाराणसी में बुधवार को विजयादशमी पर रावण दहन से पहले लोगों ने अर्दली बाजार स्थित महावीर मंदिर क्षेत्र में बॉलीवुड स्टार्स का पुतला फूंका। सबसे ज्यादा नाराजगी लोगों में अभिनेता सैफ अली खान को लेकर देखने को मिली। पुतला फूंकने वालों ने कहा कि फिल्म आदिपुरुष का जो टीजर जारी हुआ है, उसमें सैफ अली खान का रावण का लुक आपत्तिजनक है। लंकापति रावण के रोल में सैफ अली खान का ऐसे चित्रण किया गया है जैसे वह आक्रांता खिलजी, चंगेज खान या औरंगजेब हो। शिवभक्त लंकेश के माथे पर न तिलक है और न त्रिपुंड है। हम अपने पौराणिक चरित्रों के साथ ऐसा खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं करेंगे। उधर, राष्ट्रीय हिंदू दल ने सैफ अली खान का बायकॉट करने की अपील के साथ ही फिल्म आदिपुरुष पर सरकार से प्रतिबंध लगाने की मांग की। अर्दली बाजार स्थित महावीर मंदिर क्षेत्र में सैफ अली खान सहित अन्य बॉलीवुड स्टार्स का पुतला फूंकने वाले संदीप वधावन ने कहा कि यह लोग हिंदू धर्म से जुड़े लोगों की धार्मिक भावनाओं के साथ अकसर खिलवाड़ करते हैं। सस्ती लोकप्रियता के लिए बॉलीवुड के लोग हमारे धार्मिक-पौराणिक पात्रों का सहारा लेते हैं।

मुरादाबाद पुलिस के हत्थे चढ़ा शातिर गैंग, यूपी-उत्तराखंड के 53 जिलों तक फैला था नेटवर्क

मुरादाबाद। मुरादाबाद पुलिस ने एक शातिर गैंग के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। ये गैंग पुलिस की वेबसाइट में सेंधमारी करके वाहनों के चालान को डिलीट कर देता था, या फिर चालान की रकम को घटाकर कम कर देता था। पुलिस वेबसाइट में सफल सेंधमारी के बाद गैंग ने वाहन स्वामियों को डिस्काउंट पर उनके वाहनों के चालान जमा करने के ऑफर शुरू कर दिए थे। धीरे-धीरे गैंग ने यूपी के 53 और उत्तराखंड के दो जिलों के ई चालान सिस्टम को हैक कर डाला। बुधवार को इस गैंग के दो सदस्य मुरादाबाद पुलिस के हत्थे चढ़े तो गैंग के कारनामों का खुलासा हुआ। गैंग के तीन सदस्य अभी फरार हैं। इनमें से एक आरटीओ का कर्मचारी बताया जा रहा है।

बस्ती में शादी का झांसा देकर बनाए शारीरिक सम्बन्ध, प्रेगनेंट होने पर कराया गर्भपात

बस्ती। बस्ती में युवती को शादी का झांसा देकर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। इसके बाद जब वह गर्भवती हो गई तो उसका गर्भपात करा दिया गया। विरोध करने पर उसके साथ गाली-गलौज की गई। जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी, उसके भाई और परिवार के सदस्यों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। लालगंज थाना क्षेत्र निवासी 26 वर्षीय युवती ने बताया कि उसके मोहल्ले के एक युवक धर्मेन्द्र से उसकी बातचीत होती थी। धीरे-धीरे सिलसिला आगे बढ़ा और प्यार तक पहुंच गया। इसके बाद आरोपी ने उससे शादी करने की बात की। आरोपी की बात पर भरोसा कर वह उसके साथ शादी के सपने देखने लगी। शादी का झांसा देकर आरोपी ने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाए, जब वह प्रेगनेंट हो गई तो उसका गर्भपात करा दिया। पीड़ता ने जब शादी का दबाव बनाया और उसके परिवार वालों से बात की तो आरोपी धर्मेन्द्र, उसके भाई नागेन्द्र और परिवार के अन्य सदस्यों ने उसे गाली दी। जान से मारने की धमकी दी। युवती ने अपने परिजनों को सारी बात बताई। थाने पर तहरीर देकर आरोपियों पर मुकदमा दर्ज कराया। एसओ दिलीप सिंह ने बताया कि पीड़िता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया है।

झांसी में देवी मां की प्रतिमाओं का हुआ विसर्जन

झांसी। झांसी में पिछले नौ दिनों से पंडालों में विराजमान देवी मां को आज हवन-पूजन के साथ विसर्जन कर विदा किया गया। विजय दशमी पर्व पर बुधवार को मां दुर्गा की प्रतिमाओं का विसर्जन करने के लिए शहर उमड़ पड़ा। जनपद में 1053 प्रतिमाएं पंडालों में विराजमान थी। प्रतिमाओं का विसर्जन लक्ष्मीतालाब के कुंड में किया गया। भक्तों ने गुलाल उड़ाकर, आतिशबाजी, ढोल-नगाड़ों और डीजे पर बज रही भक्ति धुनों पर नृत्य कर नम आंखों से विदाई दी। सभी देवी प्रतिमाओं के दर्शन के लिए भक्त लालायित दिखाई पड़ रहे थे। सुबह दस बजे से प्रतिमाओं का निकलना शुरू हुआ तो यह सिलसिला देर रात तक बना रहा। जैसे ही कोई प्रतिमा निकलती श्रद्धालु हाथ जोड़कर आशीर्वाद लेते। जब खटकयाना मोहल्ले में विराजमान मां काली तथा गहोई धर्म शाला की श्री मां राज राजेश्वरी दुर्गा देवी की विसर्जन यात्रा बाजारों से होकर निकली तो हजारों भक्त पहुंच गए और भाव विभोर हो उठे।

आगरा : अस्पताल में आग लगी, डॉक्टर और उसके पुत्र-पुत्री की मौत

एजेंसी

आगरा। उत्तर प्रदेश में आगरा के घनी आबादी वाले इलाके में स्थित एक अस्पताल में बुधवार को तड़के आग लग गई, जिसमें अस्पताल संचालक डॉ. राजन, उनकी बेटी व 14 साल के बेटे ऋषि की मौत हो गयी है।

पुलिस के अनुसार इस हादसे में घायल हुए उनकी पत्नी और दूसरे बेटे की हालत गंभीर है। अस्पताल में इलाज करा रहे मरीजों को गंभीर हालत में बाहर निकालकर दूसरे अस्पताल में भेजा गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस घटना में हुयी जनहानि पर शोक व्यक्त करते हुए जिला प्रशासन को तत्काल राहत एवं बचाव कार्य पूरा करने के निर्देश दिये हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार शाहगंज क्षेत्र में जगनेर रोड स्थित आर मधुराज हास्पिटल में अचानक आग लग गई। हास्पिटल में भर्ती तीन मरीज, उनके तीमारदार और स्टाफ अंदर फंस गया। धुंआ पूरे हास्पिटल में भर गया। स्थानीय लोगों ने किसी तरह आग पर काबू पाया। करीब एक घंटे बाद दमकलकर्मियों ने तीन मरीजों समेत चार लोगों को गंभीर हालत में अस्पताल से बाहर निकाला। इन्हें

निकट के एक निजी हास्पिटल में भर्ती कराया है।

अस्पताल के संचालक डा. राजन और भवन स्वामी गोपीचंद हैं। इसमें भूमिगत तल में जनरल वार्ड, भूतल पर जनरल और प्राइवेट वार्ड है। जबकि दूसरी मंजिल पर गोपीचंद और डा. राजन का परिवार रहता है। सुबह करीब पांच बजे अचानक दूसरी मंजिल पर आग लग गई। आग लगने के बाद पूरे अस्पताल में धुंआ भर गया।

आग लगने के समय अस्पताल में 07 मरीज भर्ती थे और 05 कर्मचारी मौजूद थे। आग लगते ही आसपास के लोगों ने पानी से आग बुझाने का प्रयास किया। अंदर धुंआ भर जाने के कारण लोग मरीजों को बाहर नहीं निकाल सके। इस बीच पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। करीब 40 मिनट बाद दमकलकर्मी वहां पहुंच गए। इसके बाद मरीजों को बाहर निकाला जा सका।

बताया गया है कि आर मधुराज अस्पताल में दूसरी मंजिल पर एक कमरे में रखे फोम के गद्दों में आग लगी थी।

इस फ्लोर पर डा राजन, उनके पिता गोपीचंद, पत्नी मधुराज, बेटी शालू, बेटे लवी और ऋषि के साथ ही रिश्तेदार तेजवीर थे। गोपीचंद और लवी सुबह पांच बजे उठे तो उन्होंने गद्दों वाले कमरे में आग लगी देखी। उन्होंने गद्दों को बाहर निकालने की कोशिश की। तब तक आग का धुंआ अंदर की ओर पहुंच गया।

इसी बीच डा. राजन ने सुरक्षा के लिहाज से अंदर का दरवाजा बंद कर लिया। इससे वह परिवार सहित अंदर फंस गए। धुंआ नीचे हास्पिटल में भी पहुंचा। दमकल को देर से कॉल किया गया। इसलिए एक घंटे बाद दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे। इसके बाद दूसरी मंजिल पर फंसे डाक्टर के परिवार को बाहर निकाला गया। डा. राजन, बेटी शालू, बेटा ऋषि और तेजवीर को हास्पिटल में भर्ती कराया गया है। इनमें से डा. राजन और बेटी शालू की हालत गंभीर थी। जहां दोनों ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। सुबह 8.30 बजे 14 साल के बेटे ऋषि ने भी दम तोड़ दिया। पुलिस एवं दमकलकर्मी राहत एवं बचाव कार्य में जुटे हैं।

झांसी में दो दिन पहले हुई हत्या का खुलासा

अवैध संबंधों में पहले गोली मारी फिर रेत दिया गला

झांसी। यूपी में झांसी के बड़ागांव थाना क्षेत्र में पुलिस ने दो दिन पहले हुई श्रीकांत यादव की हत्या का बुधवार को खुलासा हो गया। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार भी कर लिया है। अवैध संबंधों में वारदात को अंजाम दिया गया था। युवक को पहले गोली मारी गई फिर गला रेत दिया गया था। पकड़े गये आरोपियों में से एक की महिला मित्र को श्रीकांत ने ब्याज पर पैसे दिये थे और उसके साथ अवैध संबंध बनाये थे।

एसएसपी राजेश एस ने यहां पुलिस लाइन में संवाददाताओं को इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि बड़ागांव थानाक्षेत्र के छपरा गांव में सोमवार सुबह एक खेत से श्रीकांत

यादव (36) की लाश बरामद की गई थी। श्रीकांत के भाई की तहरीर के बाद पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी।

जांच के लिए सीओ सदर के नेतृत्व में टीम गठित की गयी थी। टीम ने जांच में पाया गया कि रुपयों के लेने देन और अवैध संबंधों के चलते श्रीकांत की हत्या की गई। श्रीकांत को पहले गोली मारी गयी फिर धारदार हथियार से उसका गला रेत दिया गया। गांव के ही रहने वाले दिलीप कुशवाहा और कमलेश कुशवाहा को गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ में दोनों ने अपना जुर्म कबूल किया और इनकी निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में इस्तेमाल एक चाकू, एक तमंचा 315 बोर और दो जिंदा कारतूस बरामद किए हैं।

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि श्रीकांत ब्याज पर लोगों को पैसे देता था और दबंगई कर 10 प्रतिशत का ब्याज वसूलता था। इतना ही नहीं ब्याज पर पैसे देकर वह गांव में महिलाओं से अवैध संबंध भी रखता था। पकड़े गये आरोपियों में से एक की महिला मित्र को भी श्रीकांत ने पैसे दिये थे और उसके साथ अवैध संबंध बनाये थे।

इसी कारण कमलेश ने अपने साथी दिलीप के साथ मिलकर श्रीकांत की हत्या कर दी। एसएसपी ने चौबीस घंटे में घटना का खुलास करने वाली पुलिस टीम को 15हजार नकद का इनाम दिये जाने की घोषणा की है।

देवरिया : मेले में घुसे बेकाबू ट्रक के कुचलने से दो बच्चियों की मौत, एक घायल

देवरिया। उत्तर प्रदेश में देवरिया के सदर कोतवाली क्षेत्र में बीती देर रात दशहरा मेले की भीड़ में घुसे बेकाबू ट्रक ने तमाम लोगों को कुचल दिया, जिससे मेला घूमने आई दो बच्चियों की दर्दनाक मौत हो गई और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गयी। पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा ने बुधवार को बताया कि सदर कोतवाली क्षेत्र में एक ट्रक मारवाड़ बेकाबू होकर बालिक इंटर कालेज के पास चल रहे मेले की भीड़ में घुस गया। मेला देखने आयी रूपई गांव की दो चचेरी बहनों त्रिशा यादव (3 साल) और साक्षी (13 साल) को रौंदता हुआ निकल गया। इस घटना में दोनों बच्चियों की मौत हो गई, जबकि एक बच्ची शालू (12 साल) गंभीर रूप से घायल हो गयी। बेकाबू ट्रक ने सड़क किनारे खड़ी आधा दर्जन मोटर साइकिलों को भी रौंद डाला। उसको उपचार के लिये डाक्टरों ने गोरखपुर मेडिकल कालेज रेफर कर दिया है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि ट्रक चालक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। इस घटना से मेले में अफरातफरी मच गई। घटना से आक्रोशित लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया। पुलिस ने लाठी भांजकर लोगों को खदेड़ा। हंगामे के दौरान मची भगदड़ में कई लोगों को चोटें आई हैं।

कौशांबी में मेढ़ बांधने के विवाद में युवक पर हमला

कौशांबी। कौशांबी की सदर कोतवाली क्षेत्र के सोनारन का पूरा गांव में एक युवक पर जानलेवा हमला हुआ। हमला युवक पर खेत में मेढ़ बांधते समय हुआ। युवक के सिर में गंभीर चोटें आई हैं। पुलिस ने इलाज के लिए उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया है।

अंबाबा पश्चिम गांव के मजरा सोनारन का पूरा में हीरालाल पटेल रहते हैं। उनके दो बेटे नीरज व धीरज पटेल हैं। नीरज व धीरज बुधवार को दोपहर अपने खेत आराजी संख्या 440 में मेढ़ बांध रहे थे। पड़ोसी सतीश कुमार मौके पर पहुंचे और खेत पर कब्जे का आरोप लगाकर विवाद शुरू कर दिया। विवाद मारपीट में बदल गया। इसी दौरान सतीश ने अपने परिवार के लोगो संग मिलकर लाठी डंडे से हमला कर दिया। खेत में हुई मारपीट में सतीश ने नीरज पर फावड़े से वार किया। जिससे नीरज को सिर में गंभीर चोट आई। वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा। नीरज को लहूलुहान देख आरोपी पक्ष मौके से फरार हो गया।

पीड़ित पक्ष ने पुलिस को सूचना देकर नीरज को गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल में नीरज की हालत गंभीर बनी हुई है। डॉक्टर नीरज का इलाज कर रहे हैं।

हीरालाल पटेल ने बताया, आराजी संख्या 440 पर उनका कब्जा है। बच्चे दोपहर में खेत में मेढ़ बांध रहे थे। इसी दौरान पड़ोसी सतीश व उनके रिश्तेदारों ने जानलेवा हमला किया।

नाबालिग गैंगरेप पीड़िता ने फांसी लगाकर दी जान

अम्बेडकरनगर। अंबेडकरनगर में एक नाबालिग गैंगरेप पीड़िता ने सुसाइड कर लिया। पीड़िता के मां-पिता दुर्गा पूजा में गए हुए थे। तभी नाबालिग ने फांसी लगाकर जान दे दी। परिवार के लोग जब घर आए तब उनको मामले की जानकारी हुई। सूचना पर पुलिस भी मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। मामला अंबेडकरनगर के मालीपुर थाना क्षेत्र के एक गांव का है। पीड़िता ने 4 अक्टूबर की रात को आत्महत्या की थी। इस मामले में एसपी अजीत कुमार सिन्हा ने एसओ को लाइन हाजिर और विवेचक को सस्पेंड कर दिया है। पीड़िता की मौत के बाद से गांव में माहौल तनावपूर्ण बना हुआ है। परिवार के लोग पीड़िता का अंतिम संस्कार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

आगरा : वॉच टावर से अब कर सकेंगे ताजमहल और आगरा किले का दीदार

आगरा। उत्तर प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ताजनगरी आगरा में उद्यान विभाग ने ताजमहल के साये में एक खास टावर बनाया है। इस टावर की ऊंचाई से पर्यटक ताजमहल, आगरा किला, मेहताब बाग और यमुना नदी का शानदार नजारा देख सकेंगे।

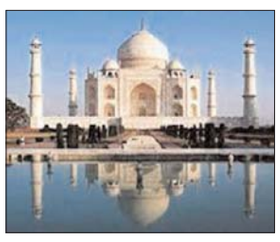

उद्यान विभाग ने शीशमहल पार्क में वॉच टावर का निर्माण किया है। दीपावली से पहले इसे पर्यटकों के लिए खोल दिया जायेगा। विभाग ने ताजमहल के पश्चिमी गेट पर स्थित शीश महल पार्क में वॉच टावर का निर्माण किया है। वॉच टॉवर से पर्यटक ताजमहल, आगरा किला और यमुना नदी का एक साथ दीदार कर सकते हैं। इस वॉच टावर के चारों ओर हरियाली है। उप निदेशक (उद्यान) कौशल कुमार नीरज ने बुधवार को बताया कि शीशमहल टीले पर पहले सुरक्षा की दृष्टि से नजर रखने के लिए वॉच टावर बनाया गया था, जो जर्जर हो गया था। उसे तोड़कर पर्यटकों के लिए नए वॉच टावर का निर्माण किया गया है। एक बार में टावर पर लगभग 100 पर्यटक जा सकेंगे।

नीरज ने बताया कि शीश महल पार्क को विकसित करने में 72 लाख रुपये खर्च किए जा रहे हैं। पार्क में वॉच टॉवर और पाथवे के निर्माण का काम पूरा हो चुका है। पार्क में फुलवारी समेत अन्य पौधों का रोपड़ कर दिया गया है। एक बड़े क्षेत्रफल में फैले शीश महल पार्क में एक हट भी बनाई गई है। जहां बैठकर पर्यटक शुद्ध हवा का आनंद ले सकते हैं।

उन्होंने बताया कि वॉच टावर के अलावा पार्क में भव्य प्रतिमा, झरना, फव्वारा, लाइटिंग और कैंटीन समेत कई अन्य काम भी प्रस्तावित हैं। दीपावली से पहले उद्यान विभाग पार्क का उद्घाटन करने की तैयारी में जुटा हुआ है।

कानपुर देहात : हाईवे पर कार डिवाइडर से टकराई, तीन की मौत

कानपुर देहात। उत्तर प्रदेश में कानपुर इटावा हाईवे पर औरैया जा रही एक कार बीती रात कानपुर देहात क्षेत्र में डिवाइडर से टकरा गयी जिससे कार सवार एक ही परिवार के तीन लोगों की दर्दनाक मौत हो गयी।

पुलिस ने बुधवार को बताया कि देर रात कानपुर से बीमार भाई का इलाज कराकर लौट रहा परिवार दुर्घटनाग्रस्त हुयी कार में सवार था। कानपुर देहात के सिकंदरा थाना क्षेत्र में बिरहाना चौराहे के पास ओवरब्रिज पर कार डिवाइडर से टकराकर पलट गयी। सिकंदरा थाना प्रभारी समर बहादुर ने बताया कि घटना की जानकारी मिलने पर पहुंची पुलिस ने शवों को सिकंदरा स्थित सामुदायिक स्वास्थ केंद्र पहुंचाया।

इस दुर्घटना में कार सवार पिता पुत्र सहित तीन लोगों की मौत हो गई। मृतकों में औरैया के तिलक नगर सत्ती का तालाब निवासी 45 वर्षीय संतोष दीक्षित शामिल हैं। वह फर्रूखाबाद में बिजली विभाग में लिपिक के पद पर तैनात थे। वह अपने छोटे भाई 40 वर्षीय योगेंद्र दीक्षित का इलाज कराने कानपुर आये थे। उनके साथ बेटा राज दीक्षित भी था।

मंगलवार की देर रात घर वापस आते समय करीब 12:15 बजे कार हाईवे पर बिरहाना चौराहे के पास ओवरब्रिज पर अनियंत्रित हो गई और डिवाइडर से जा टकराई। इससे तीनों बुरी तरह घायल हो गए। राहगीरों ने देखा तो एंबुलेंस को बुलाया। पुलिस की मदद से सिकंदरा सीएचसी पहुंचाया गया जहां डाक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। कार में मिले कागजात व मोबाइल फोन नंबर के आधार पर शिनाख्त हुई।

पत्नी से परेशान होकर पति ने किया सुसाइड

कौशांबी। कौशांबी में एक पति ने अपनी पत्नी से परेशान होकर सुसाइड कर लिया। पति का शव उसके कमरे में पंखे से लटका हुआ मिला। युवक दिल्ली में रहकर चप्पल कंपनी में सोल कटर का काम करता था। वो दशहरे की छुट्टी में घर आया हुआ था। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। मामला मोहब्बतपुर पइंसा थाना क्षेत्र के बंबू पुर गांव का है। बंबू पुर निवासी उदल पुत्र बुधई की शादी 14 साल पहले कुंद्रवी की सविता से हुई थी। दोनों के 2 लड़की और 1 लड़का है। उदल रोजगार के सिलसिले में दिल्ली के भोरगढ़ नरेला में रहकर चप्पल कंपनी में सोल कटिंग का काम करता था। कंपनी में काम करते हुए उसे 12 साल हो गए थे। बताया जा रहा है कि लॉकडाउन के दौरान जब वो गांव आया था तो उसका और उसकी पत्नी का विवाद हो गया था। जिसके चलते उसकी पत्नी ससुराल छोड़कर मायके में बच्चों संग रहने लगी।

झांसी महिला पॉलिटेक्टिनक कॉलेज के छात्रावास में हुड़दंगबाजी

छात्राएं बोलीं- बाहरी लोग आधी रात को अंदर घुसे, खिड़कियां बजाई

झांसी। झांसी के वीरांगना झलकारीबाई राजकीय महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज के छात्रावास में मंगलवार रात को हुड़दंगबाजी हुई। छात्राओं का कहना है कि बाहर लोग आधी रात को हॉस्टल के अंदर घुसे। रूम की खिड़कियां बजाई। इससे छात्राएं समझ गई और अपने घरवालों को कॉल लगाया।

इसके बाद कॉलेज प्रबंधन और पुलिस मौके पर पहुंच गई। खौफ के साए में रात भर छात्राएं सोई नहीं और सुबह होते ही सभी छात्राओं ने हॉस्टल खाली कर दिया। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

रूम नंबर 22 की खिड़कियां बजाई

झांसी में ग्वालियर रोड पर महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज है। यहां पर एक हॉस्टल में फस्ट ईयर, सेकेंड ईयर और थर्ड ईयर की करीब 63 छात्राएं रह रही थी। जिस ब्लॉक में घटना हुई, वहां पर फस्ट ईयर की छात्राएं रहती हैं।

एक छात्रा पुष्पांजलि ने बताया कि रात करीब 12 बजे की घटना है। हॉस्टल की लाइट बंद थी। बाहर के लोग हॉस्टल में घुस आए और लाइट जलाई। उसके परछाई दिखाई दी तो हम लोग डर गए। इतने में ही रूम नंबर 22 की खिड़कियां बजाई गई। फिर छत पर दौड़ने की आवाज सुनाई दी। इसके बाद छात्राएं सहम गई।

रोने लगी छात्राएं और घर पर लगाया फोन

घटना के बाद छात्राएं बुरी तरह से सहम गई। करीब 7 दिन पहले ही फस्ट ईयर की छात्राएं रहने के लिए छात्रावास में आई थी। वे रोने लगी और रात को ही अपने घर पर फोन लगा दिया। इसके आसपास रहने वाले रिश्तेदार मौके पर पहुंच गए। सूचना पर रात को ही पुलिस मौके पर पहुंच गई है। बताया जा रहा है कि छात्रावास के अंदर सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं। पुलिस कैमरों की जांच कर रही है। छात्रा अंशिका कुशवाहा और श्रुति ने बताया कि हम लोग फस्ट ईयर में पढ़ते हैं, कुछ दिन पहले ही हॉस्टल में आए थे। ये घटना पहली बार हुई है। घटना के बाद छात्राएं बुरी तरह से सहमी हुई हैं।

युवक की गर्दन काटकर हत्या, शरीर के कई अंगों को किया क्षतिग्रस्त

पुलिस बोली-अवैध संबंधों में ली गई जान

सीतापुर। सीतापुर में मंगलवार की देर रात गांव के बाहर पुलिस को एक युवक का शव मिला। युवक का खून से लथपथ शव खेत से बरामद किया गया है।

गर्दन धड़ से अलग और हाथ भी कई जगहों से कटे हुए थे। शव की हालत देखकर बताया जा रहा है कि हमलवारों ने बड़ी ही बेरहमी से हत्या को अंजाम दिया है।

घटना मछरेहटा थाना क्षेत्र के मामूपुर इलाके की है। यहां गांव के बाहर एक युवक का शव क्षत विक्षत हालत में मिला। मिली जानकारी के मुताबिक, मंगलवार की देर रात मछरेहटा की यूनिट पुलिस गश्त कर रही थी। तभी सड़क किनारे शव मिला जो खून से लथपथ था।

घटना स्थल से कुछ दूर तक मिले खून के निशान

शव मिलने की सूचना पर पुलिस के आलाधिकारी मौके पर पहुंचे। जहां शव की शिनाख्त की गई। कई घण्टों की कड़ी मशक्कत के बाद युवक की पहचान 32 वर्षीय रामलखन गुप्ता निवासी संदना के रूप में हुई। पुलिस ने परिजनों को सूचना देकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनास्थल से कुछ दूरी तक खून के धब्बे मिलने से पुलिस हर ऐंगल से जांच पड़ताल कर रही है।

कई एंगल पर जांच में जुटी पुलिस

एएसपी दक्षिणी नरेंद्र प्रताप सिंह का कहना है कि परिजनों के मुताबिक रामलखन दोपहर 2 बजे घर से निकला गया था। युवक केरल सहित अन्य प्रांतों में ट्रक चलाने का काम करता था। पुलिस हत्या के पीछे महिला से प्रेम संबंध की आशंका जता रही है। निर्मम हत्या के पीछे पुलिस हर पहलू पर जांच पड़ताल में जुटी हुई है।

मंदिर उद्घाटन, मूर्ति स्थापना प्राण प्रतिष्ठा महासमारोह संपन्न

प्राण प्रतिष्ठा, मूर्ति स्थापना की भव्यता देख उमड़े हजारों श्रद्धालु

कादीपुर ढेमा। श्री महालक्ष्मी मंदिर ट्रस्ट श्रीरामपुर द्वारा आयोजित भव्य, दिव्य मंदिर उद्घाटन, मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा के तहत यज्ञ महोत्सव का समापन नवमी के दिन मुख्य यजमान एवं श्री महालक्ष्मी ट्रस्ट के संरक्षक कृष्ण कुमार तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

ग्राम पंचायत श्रीरामपुर रेवाहिया पोस्ट लामा बनकठा तहसील कादीपुर जनपद सुलतानपुर में माता रानी विंध्यवासिनी के अनन्य भक्त एवं उपासक कृष्ण कुमार तिवारी के द्वारा ऐतिहासिक अलौकिक, दिव्य एवं भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया था। जिसका

बैदिक मंत्रोच्चार के साथ उद्घाटन समारोह एवं माता महालक्ष्मी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा शारदीय नवरात्र में 9 दिन तक चली। पवित्र धामों से पधारे श्रेष्ठ विद्वान अत्यंत पूजनीय आचार्यों द्वारा वैदिक विधि विधान के साथ गर्भगृह में माता रानी महालक्ष्मी एवं अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई। 9 दिन तक चले इस महा आयोजन में यज्ञ आचार्य श्री कृष्ण जी महाराज विन्दवन सुलतानपुर एवं उनके सहयोगी आचार्य अमित कुमार पांडे वाराणसी, जगदीप तिवारी वाराणसी, मयंक मिश्रा वाराणसी, शुभम मिश्रा वाराणसी, सर्वेश मिश्रा वाराणसी के मुखारविंद से वैदिक मंत्रोच्चारण एवं सनातन धर्म की परिष्कृत पवित्र वैदिक मंत्रोच्चार से माता रानी महालक्ष्मी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुई।

शार्ट न्यूज

वैश्विक स्तर पर गैस के दामों में अगस्त में 250 प्रतिशत की वृद्धि

जेनेवा। ईंधन के दामों में वार्षिक आधार पर अगस्त में 78 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी जबकि इस दौरान गैस के दामों में 250 प्रतिशत का उछाल दिखा। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने बुधवार को एक नवीन रिपोर्ट में कहा, यूक्रेन संघर्ष से जिंसों के दामों में खासतौर पर ईंधन, खाद्य और उर्वरकों की कीमतों में उछाल आया है। अगस्त में ईंधन के दाम 78 प्रतिशत तक बढ़े हैं जबकि प्राकृतिक गैस में 250 प्रतिशत तक कीमतें बढ़ी है। इस अवधि में कच्चे तेल की कीमतों में 36 प्रतिशत की वृद्धि हुयी जो अन्य ऊर्जा संसाधनों में हुयी वृद्धि की तुलना में कम है।

महिंद्रा ने सितंबर में बेची 166 प्रतिशत अधिक 34,262 एसयूवी

मुंबई। देश की प्रमुख ऑटोमेटिव कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड (एमएंडएम लिमिटेड) ने यूटिलिटी वाहन सेगमेंट में सितंबर 2022 में वार्षिक आधार पर 166 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 34,262 एसयूवी बेची। महिंद्रा ने एक बयान में कहा कि इस दौरान कंपनी की सालाना आधार पर 129 प्रतिशत की वृद्धि के साथ कुल 64,486 वाहनों की बिक्री की जिससे कंपनी ने इस माह में उच्चतम मासिक बिक्री दर्ज की। वित्त वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही में 77 प्रतिशत के उछाल के साथ 1,79,673 वाहनों की बिक्री की जो तिमाही आधार पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। सितंबर 2022 में महिंद्रा ने 2,538 वाहनों का निर्यात किया जबकि 21,666 वाणिज्य वाहन बेचे। एम एंड एम लिमिटेड के ऑटोमोटिव डिवीजन के प्रेसीडेंट वीजय नाकरा के कहा, त्योहारों के मौसम की मजबूत शुरुआत के साथ सितंबर एक बहुत ही फायदेमंद महीना साबित हुआ। एसयूवी से लेकर 3.5 टन से कम के एलसीवी और हमारे लास्ट माइल मोबिलिटी ब्रांडों वालों अपने उत्पादों के पोर्टफोलियो में हमने बहुत मजबूत मांग और प्रदर्शन दर्ज किया। हमें खुशी है कि हमने सितंबर महीने में अब तक की सबसे अधिक 34,262 एसयूवी की बिक्री के साथ-साथ 64,486 वाहनों की अब तक की सबसे अधिक मासिक बिक्री दर्ज की है।

पूर्वोत्तर से लाया जा रहा 11.65 करोड़ का 23.23 किलो सोना जब्त

नयी दिल्ली। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) द्वारा उत्तर-पूर्व में हाल ही में सोने की बरामदगी बंगलादेश और म्यांमार से लगे उत्तर-पूर्वी सीमाओं के जरिए सोने की तस्करी में तेजी का संकेत देती है। पहले जहां तस्करी के लिए खुली सीमाओं का उपयोग किया जाता रहा है, वहीं सिर्फ सितंबर 2022 में 121 किलोग्राम सोने की बरामदगी के 11 मामले यह बताते हैं कि छुपाने के सरल तरीकों के जरिए तस्करों द्वारा नॉर्थ ईस्ट कॉरिडोर का अभी भी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जा रहा है। विशिष्ट खुफिया जानकारी पर कार्रवाई करते हुए और पटना, दिल्ली तथा मुंबई में तीन समन्वित कार्रवाईयों में डीआरआई ने 33.40 करोड़ रुपये मूल्य का 65.46 किलोग्राम सोना जब्त किया। सोने को घरेलू कूरियर खेप के तौर पर एजल से मुंबई भेजा गया था। इस सोने को कपड़ा बताकर टाट की बोरियों में छुपाया गया था। उसी मार्ग से तस्करी के एक अन्य मामले में, डीआरआई ने तस्करी के विदेशी मूल के सोने का एक और बड़ा जखीरा जब्त किया, जिसका वजन लगभग 23.23 किलोग्राम और मूल्य (लगभग) 11.65 करोड़ रुपये था, जिसे म्यांमार से तस्करी करके लाया जा रहा था।

ओपेक का बड़ा फैसला : हर दिन तेल प्रोडक्शन में 20 लाख बैरल की कटौती

नई दिल्ली। तेल निर्यातक देशों के संगठन ओपेक और सहयोगियों (ओपेक प्लस) ने कीमतों में तेजी लाने के लिए कच्चे तेल के उत्पादन में बड़ी कटौती करने का फैसला किया है। यह कदम संघर्ष कर रही वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक और झटका होगा। कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद ओपेक गठजोड़ के वियना मुख्यालय में ऊर्जा मंत्रियों की पहली आमने-सामने की बैठक में नवंबर से उत्पादन में प्रतिदिन 20 लाख बैरल की कटौती करने का फैसला किया गया। इससे पहले ओपेक प्लस ने पिछले महीने उत्पादन में सांकेतिक कटौती की थी। हालांकि, महामारी के दौरान उत्पादन में बड़ी कटौती की गई थी लेकिन पिछले कुछ माह से निर्यातक देश उत्पादन में बड़ी कटौती से बच रहे थे। ओपेक प्लस ने बयान में कहा कि यह फैसला वैश्विक आर्थिक और कच्चे तेल के बाजार परिदृश्य में अनिश्चितता को देखते हुए लिया गया है। हालांकि, उत्पादन में कटौती से तेल के दाम और उससे बनने वाले पेट्रोल की कीमत पर विशेष असर नहीं पड़ेगा क्योंकि ओपेक प्लस के सदस्य पहले ही समूह द्वारा तय किए गए कोटा को पूरा नहीं कर पा रहे हैं।

गरीबों की असाधारण मदद के लिए भारत की तारीफ, विश्व बैंक ने कहा-दूसरे देश सीखें

नई दिल्ली। कोरोना काल में देश के गरीबों की असाधारण ढंग से मदद करने के लिए विश्व बैंक ने भारत की तारीफ की है। वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष डेविड मालपास ने बुधवार को कहा कि कोविड-19 महामारी के दौर में भारत ने गरीब और जरूरतमंदों की जिस तरह मदद की वह तारीफ-ए-काबिल है। विश्व बैंक ने गरीबी एवं पारस्परिक समृद्धि रिपोर्ट जारी करते हुए कहा कि दूसरे देश को भी भारत से सबक लेना चाहिए। उन्हें भारत की तरह कदम उठाना चाहिए और गरीबों को सब्सिडी की बजाए नकद प्रत्यक्ष हस्तांतरण करना चाहिए। विश्व बैंक ने कहा कि महामारी की सबसे बड़ी कीमत गरीब लोगों को चुकानी पड़ी है। वर्ल्ड बैंक के प्रमुख ने कहा कि महामारी के कारण गरीब देशों में गरीबी बढ़ गई। इन देशों में ऐसी अर्थव्यवस्थाएं सामने आईं जो अधिक अनौपचारिक हैं। ऐसी सामाजिक सुरक्षा प्रणालियां सामने आईं जो कमजोर हैं और ऐसी वित्तीय प्रणालियां दिखीं, जो कम विकसित हैं। इसके बाद भी कई विकासशील अर्थव्यवस्थाओं ने महामारी काल में कामयाबी पाई। मालपोस ने कहा कि डिजिटल नकद हस्तांतरण के माध्यम से भारत ग्रामीण क्षेत्र के 85 फीसदी परिवारों को और शहरी क्षेत्र के 69 फीसदी परिवारों को खाद्य एवं नकद सहायता देने में कामयाब रहा। वहीं, दक्षिण अफ्रीका ने सामाजिक सुरक्षा के दायरे में सबसे बड़ा विस्तार किया और गरीबी राहत पर 6 अरब डॉलर खर्च किए। इससे करीब 2.9 करोड़ लोगों को फायदा पहुंचा। उन्होंने बताया कि ब्राजील ने आर्थिक संकुचन के बावजूद 2020 में भीषण गरीबी को कम करने में सफलता हासिल की। परिवार आधारित डिजिटल नकद हस्तांतरण प्रणाली के दम पर उसने यह सफलता पाई। विश्व बैंक के प्रमुख मालपास ने कहा कि व्यापक सब्सिडी के बजाए लक्षित नकद हस्तांतरण का विकल्प बेहतर है। इससे गरीबों और संवदेनशील समूहों को अधिक प्रभावी ढंग से मदद पहुंचती है। नकद हस्तांतरण पर 60 फीसदी से अधिक राशि निम्न वर्ग के 40 फीसदी लोगों तक पहुंचती है। इसलिए सब्सिडी के बजाए नकद हस्तांतरण ज्यादा प्रभावी है।

प्रोसस एनवी ने बिलडेस्क के अधिग्रहण को किया रद्द

नई दिल्ली। प्रोसस एनवी ने इंडियन पेमेंट फर्म बिलडेस्क को खरीदने के लिए 4.7 बिलियन डॉलर की डील को कैंसिल कर दिया है। क्योंकि, डील की शर्तें पूरी नहीं हुई थीं। इस डील को पिछले महीने कॉम्पिटिशन कमिशन ऑफ इंडिया से मंजूरी भी मिल गई थी। हालांकि, कंपनी ने कहा कि कुछ शर्तों पिछले महीने के आखिरी में समय सीमा तक पूरी नहीं हुई थीं। 31 अगस्त 2021 को नेस्पर्स ने घोषणा की थी कि प्रोसस एनवी की सहायक कंपनी पेयू पेमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और इंडियन डिजिटल पेमेंट्स प्रोवाइडर बिलडेस्क के शेयरधारकों के बीच 4.7 बिलियन डॉलर यानी 38.44 हजार करोड़ रुपए में BillDesk का अधिग्रहण करने के लिए एक डील हुई थी। 2000 में स्थापित बिलडेस्क देश में एक लीडिंग पेमेंट बिजनेस है। प्रोसस ने सोमवार को बताया कि ट्रांजेक्शन की क्लोजिंग कई शर्तों की पूर्ति के अधीन थी, जिसमें सीसीआई का अप्रूवल भी शामिल था। पेयू को 5 सितंबर 2022 को सीसीआई का अप्रूवल मिल गया था। हालांकि, 30 सितंबर 2022 की स्टॉप डेट तक कुछ शर्तें पूरी नहीं हो पाई थीं। इसके बाद डील अपनी शर्तों के अनुसार ऑटोमेटिक कैंसिल हो गई है। इसलिए अब प्रस्तावित लेनदेन को लागू नहीं किया जाएगा।

विमानन कंपनियों को वित्त उपलब्ध कराने के लिए ईसीएलजीएस में संशोधन

नयी दिल्ली। सरकार ने देश में नागर विमानन क्षेत्र को उनकी वर्तमान नकदी प्रवाह की समस्याओं से निपटने के लिए उचित ब्याज दरों पर आवश्यक गिरवी-मुक्त नकदी देने के लिए आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) को संशोधित कर दिया है।

वित्तीय सेवा विभाग ने यह संशोधन किया है। देश के आर्थिक विकास के लिए एक कुशल और मजबूत नागरिक उड्डयन क्षेत्र महत्वपूर्ण है, वित्तीय सेवा विभाग (डीएफएस), वित्त मंत्रालय ने ईसीएलजीएस 3.0 के तहत अधिकतम ऋण राशि बढ़ाने के लिए कल आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) को संशोधित करके संदर्भ तिथियों के अनुसार एयरलाइन कंपनियों की पात्रता उनकी निधि-आधारित या गैर-निधि-आधारित ऋण का 100 प्रतिशत या 1,500 करोड़ रुपये, जो भी कम हो, का प्रावधान किया है और उपरोक्त में मालिकों द्वारा इक्विटी योगदान के आधार पर 500 करोड़ रुपये पर विचार किया जाएगा। गत 30 अगस्त को जारी ईसीएलजीएस के परिचालन दिशानिर्देशों के तहत निर्धारित अन्य सभी मानदंड, नियम और शर्तें लागू होंगी। नये संशोधनों का उद्देश्य, एयरलाइन कंपनियों को वर्तमान नकदी प्रवाह की समस्याओं से निपटने के लिए उचित ब्याज दरों पर आवश्यक गिरवी-मुक्त नकदी की सुविधा देना है।

चालू वित्त वर्ष के बजट में की गयी घोषणाओं के अनुरूप ईसीएलजीएस को मार्च 2022 से बढ़ाकर मार्च 2023 कर दिया गया था। नागरिक उड्डयन क्षेत्र के समग्र ऋण में गैर-निधि आधारित ऋण के उच्च अनुपात को ध्यान में रखते हुए, उधार लेने वाली पात्र कंपनियों को अपने उच्चतम कुल निधि और गैर-निधि आधारित बकाया ऋण का 50 प्रतिशत तक लाभ उठाने की अनुमति दी गई थी, जो प्रति उधारकर्ता 400 करोड़ रुपये की अधिकतम धनराशि के अधीन थी।

चीनी का निर्यात 109.8 लाख टन के साथ रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा

नयी दिल्ली। देश से चीनी सत्र (अक्टूबर-सितंबर) 2021-22 में 109.8 लाख टन (एलएमटी) का रिकॉर्ड उच्चतम चीनी का निर्यात हुआ जिससे लगभग 40,000 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की गयी। उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने बुधवार को एक बयान में कहा कि चीनी सत्र के दौरान 5000 एलएमटी से अधिक गन्ने का उत्पादन हुआ है, जिसमें से लगभग 3574 एलएमटी गन्ने को चीनी मिलों ने संवर्धित कर करीब 394 लाख टन चीनी (सुक्रोज) का उत्पादन किया है। इसमें से 35 एलएमटी चीनी का इस्तेमाल एथनॉल तैयार करने में और शेष का मिलों द्वारा 359 लाख टन चीनी का उत्पादन किया गया। मंत्रालय ने कहा कि भारत अब दुनिया का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक तथा उपभोक्ता और दुनिया के दूसरे सबसे बड़े चीनी निर्यातक के रूप में उभर कर सामने आया है। यह सत्र भारतीय चीनी उद्योग के लिए कई मायनों में ऐतिहासिक साबित हुआ है। गन्ना उत्पादन, चीनी उत्पादन, चीनी निर्यात, गन्ना खरीद, गन्ना बकाया भुगतान और एथनॉल उत्पादन के सभी रिकॉर्ड इसी दौरान बनाए गए।

पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में लगभग तीन सप्ताह से कच्चे तेल की कीमतों के दबाव में रहने के बाद इसके दामों में बढ़ोतरी शुरू हो गयी है। देश में घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम बुधवार को भी स्थिर रहे। कच्चे तेल की कीमत 90 डॉलर प्रति बैरल को पार कर चुकी हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लंदन ब्रेंट क्रूड आज 0.09 प्रतिशत गिरकर 91.72 डॉलर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड भी 0.18 प्रतिशत की बढ़ोतरी से 86.36 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। घरेलू स्तर पर तेल विपणन कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में आज भी कोई बदलाव नहीं हुआ। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर है। देश में पिछले चार महीने से ईंधन की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल के दाम 106.31 रुपये प्रति लीटर और और डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है।

जी एंटरटेनमेंट और बांग्ला एंटरटेनमेंट का सोनी समूह में विलय को मंजूरी

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) ने कुछ संशोधनों के साथ जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड (जी) और बांग्ला एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड (बीईपीएल) के सोनी समूह की कंपनी कल्वर मैक्स एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड (सीएमई) में विलय को मंजूरी दे दी है।

प्रस्तावित संयोजन जी और बीईपीएल में से प्रत्येक का सीएमई के साथ और उसमें विलय और सीएमई द्वारा सनब्राइट इंटरनेशनल होल्डिंग्स लिमिटेड (जिसे पहले एस्सेल होल्डिंग्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) और सनब्राइट मॉरीशस इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड को कुछ शेयरों का तरजीही आवंटन से संबंधित है। प्रस्तावित संयोजन एक अधिग्रहण की तरह है और यह विलय प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 की धारा 5 (ए) और 5 (सी) के तहत आता है।

सीएमई, सोनी ग्रुप कॉर्पोरेशन (एसजीसी) की एक अप्रत्यक्ष पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। सीएमई, एसजीसी ग्रुप (एसजीसी ग्रुप) का हिस्सा है। सीएमई के भारत में कई सामान्य मनोरंजन चैनल (जीईसी), फिल्म, खेल और बच्चों के मनोरंजन चैनल हैं। सोनीलीव सीएमई की डिजिटल मनोरंजन वीडियो सेवा है, जो भारत और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में ओटीटी सेवाएं प्रदान करती है। सीएमई भारत में 70 करोड़ से अधिक दर्शकों तक पहुंचता है और 167 देशों में उपलब्ध है। जी, एक मीडिया और मनोरंजन कंपनी है जिसकी उपस्थिति 190 देशों में प्रसारण, डिजिटल कंटेंट, चलचित्र, संगीत और लाइव एंटरटेनमेंट के क्षेत्रों में है। जी5, जी की डिजिटल मनोरंजन वीडियो सेवा है जो भारत और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में ओटीटी सेवाएं प्रदान करती है। जी बीएसई लिमिटेड और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड के स्टॉक एक्सचेंजों में एक सूचीबद्ध कंपनी है।

बोनस शेयर मिलने के बाद रु 1 लाख का निवेश 1000 गुना बढ़कर रु 55 करोड़ हो गया

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत में सबसे बड़ा फुटवियर निर्माता, रिलैक्सो ने अपने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। कंपनी की स्थापना 1984 में किया गया था और अब यह टॉप 500 सबसे वैल्युएबल कंपनियों में लिस्टेड है। अपनी स्थापना के बाद से कंपनी ने तीन बोनस शेयरों की घोषणा की है। इससे उन निवेशकों को करोड़ों रुपये का मुनाफा हुआ है जो इस स्टॉक में शुरुआती दिनों में ही रू 1 लाख का निवेश किया था। क्योंकि उस समय का 1 लाख का निवेश अब रु 55 करोड़ बन गया।

रिलैक्सो फुटवियर्स लिमिटेड के शेयर मंगलवार को बीएसई पर 1,021.35 रुपये पर कारोबार कर रहे थे। 12 नवंबर, 1999 को शेयर की कीमत रु 1.46 थी जो अब 1,021.35 रुपये पर पहुंच गई। यानी पिछले 23 सालों में इस शेयर ने अपने निवेशकों को 69,855.48 प्रतिशत का मल्टीबैगर रिटर्न दिया है। पिछले तीन सालों में स्टॉक ने 108.27 प्रतिशत का मल्टीबैगर रिटर्न और पिछले पांच सालों में 294.53 प्रतिशत का जबरदस्त रिटर्न दिया है। हालांकि, पिछले एक साल के दौरान स्टॉक में 15.19 प्रतिशत और साल 2022 के दौरान YTD आधार पर 22.76 प्रतिशत की गिरावट आई है।

कंपनी के शुरुआती चरण से अगर किसी निवेशक ने 1 लाख रुपये का निवेश किया था, तब उसे कंपनी के 68,493 शेयर मिले थे। बोनस स्टॉक की पहली घोषणा के बाद शेयरों की संख्या में इजाफा हुआ।

बता दें कि 8 दिसंबर 2000 को कंपनी ने 1:1 के अनुपात बोनस शेयर जारी किया था, जिसके परिणामस्वरूप शेयर की गिनती 1,36,986 होती है। इसके बाद, कंपनी ने 1:1 के अनुपात में दो बार बोनस शेयर जारी किए, स्टॉक की दूसरी बोनस घोषणा 1 जुलाई 2015 को और आखिरी 26 जून 2019 को हुई। अगले बोनस इश्यू ने निवेशक के पास कंपनी की शेयरधारिता और प्रतिशत दोनों में अंतिम बदलाव किया और वह 5,47,944 हो गया। इस कंपनी के परिणामी शेयर की संख्या ने निवेशकों को भारी लाभ दिया, जिससे शुरुआती फेज का निवेश 1000 गुना से अधिक हो गया। वर्तमान शेयर प्राइस के अनुसार, कुल शेयर संख्या 5,47,944 है और निवेश 55 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है।

कंपनी का कारोबार

कंपनी का मार्केट कैप रु 25,424.06 करोड़ है। रिलैक्सो फुटवियर्स लिमिटेड एक लार्ज-कैप कंपनी है। भारत में अग्रणी फुटवियर निर्माताओं में से एक रिलैक्सो फुटवियर रिलैक्सो, स्पार्क्स, बहामास और फ्लाइट जैसे प्रसिद्ध निर्माताओं से ऑनलाइन फुटवियर का एक बड़ा चयन बनाता है।

ट्विटर डील पर मस्क का यू टर्न : सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म खरीदने को तैयार मस्क

54.20 डॉलर प्रति शेयर पर ही क्लोज होगी डील

वॉशिंगटन। दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी एलन मस्क ने ट्विटर डील पर एक बार फिर यू टर्न लिया है। वो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को खरीदने के लिए तैयार हो गए हैं। उन्होंने इस डील पर ट्विटर को लेटर लिखा है। लेटर में मस्क के वकीलों ने कहा, वह कानूनी लड़ाई को खत्म कर ट्रांजैक्शन को पूरा करना चाहते हैं। ट्विटर के एक प्रवक्ता ने भी इस लेटर की पुष्टि की। इन खबरों के बाद मंगलवार को इसके शेयर 22 प्रतिशत बढ़कर 52 डॉलर पर क्लोज हुए।

डील पर यू टर्न के बाद मस्क ने ट्वीट किया, ट्विटर एक्स बनाने की ओर एक कदम है। एक्स, द एवरीथिंग ऐप। मस्क 54.20 डॉलर प्रति शेयर पर ही ट्रांजैक्शन को क्लोज करना चाहते हैं जिसका वादा उन्होंने अप्रैल में किया था। इससे पहले मस्क के डील कैंसिल करने के बाद ट्विटर कोर्ट पहुंच गया था। 17 अक्टूबर से अमेरिका के डेलावेयर कोर्ट में इस मामले की सुनवाई होनी थी। कोर्ट की सुनवाई से पहले मस्क ने अपना फैसला बदल लिया।

पूरा मामला समझें

मस्क ने 14 अप्रैल को 43 अरब डॉलर में ट्विटर खरीदने का ऑफर दिया था। मस्क ने कहा था कि ट्विटर में निवेश शुरू करने से एक दिन पहले के भाव से 54 प्रतिशत प्रीमियम पर 54.20 डॉलर प्रति शेयर के हिसाब से 100 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने की पेशकश कर रहा हूं। यह ऑफर मेरा सबसे अच्छा और आखिरी ऑफर है और यदि इसे स्वीकार नहीं किया जाता है, तो मुझे एक शेयरधारक के रूप में अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने की जरूरत होगी।

मस्क के पास ट्विटर की 9.2 प्रतिशत हिस्सेदारी है। 4 अप्रैल को इसकी जानकारी सामने आई थी। मस्क ने भले ही शुरुआती फाइलिंग में 43 अरब डॉलर का ऑफर दिया था, लेकिन ट्विटर की डील को मंजूरी के बाद ये आंकड़ा 44 अरब डॉलर पर पहुंच गया था।

हालांकि, बाद में मस्क ने कहा कि स्पैम अकाउंट की सही जानकारी नहीं होने के कारण वह डील को कैंसिल कर रहे हैं। डील कैंसिल होने के बाद ट्विटर कोर्ट पहुंच गया था।

चीन से 100 लाख करोड़ के निवेश लाने की तैयारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने वैश्विक कंपनियों का भारत में निवेश आसान करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। 16 अलग-अलग मंत्रालयों को एक ही प्लेटफॉर्म पर लाया गया है। इससे यह सुनिश्चित किया जाएगा कि विदेशी निवेश को जल्द से जल्द मंजूरी मिल सके। क्योंकि, निवेश बढ़ाने में सबसे बड़ी अड़चन अब भी अलग-अलग विभागों से मिलने वाली मंजूरियों में होने वाली देरी है। देरी की वजह से हर चार में से एक प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत बढ़ गई है, जो आने वाले समय में बड़ी समस्या हो सकती है। केंद्र सरकार अगले कुछ सालों में 100 लाख करोड़ रुपए के मेगा प्रोजेक्ट चीन से छीनकर भारत लाने की तैयारी में जुट गई है। एपल जैसी कई कंपनियां हैं, जो चीन में अपने मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स पूरी तरह से बंद कर भारत आना चाहती हैं। इन्हें ध्यान में रखकर ही गति शक्ति योजना को विस्तार दिया जा रहा है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के विशेष सचिव अमृतलाल मीणा ने बताया कि वैश्विक कंपनियां भारत में निर्माण के लिए उत्सुक हैं। हम उनसे लगातार बात कर रहे हैं। हम उन्हें हर तरह की जरूरी सुविधाएं दे रहे हैं। भारत आने की इच्छुक ज्यादातर वैश्विक कंपनियां अभी चीन में निर्माण कर रही हैं। हम उन्हें बेहतर माहौल देंगे, इसलिए उम्मीद है कि जल्द ही भारत में कंपनियों के आने का सिलसिला शुरू हो जाएगा।

290 रुपये से टूटकर रु 103 पर आ गया टाटा ग्रुप का यह शेयर

नई दिल्ली। टाटा ग्रुप का एक शेयर इस साल कुछ खास परफॉर्म नहीं कर रहा है। इस शेयर में लगातार कई दिनों से गिरावट है। इस शेयर ने इस साल अपने निवेशकों को तगड़ा नुकसान कराया है। यह शेयर टाटा टेलीसर्विसेज लि. का है। टीटीएमएल का शेयर इस साल अब तक 53 पर्सेंट तक टूट चुका है। एक महीने में 16 प्रतिशत तक गिर चुका है। वर्तमान में इसका शेयर प्राइस 103 रुपये है।

290 रुपये से टूटकर रु 103 पर आया शेयर

टीटीएमएल के शेयर इस साल YTD में अब तक 290 रुपये से टूटकर रु 103 पर आ गया है। यानी यह शेयर करीबन 53 पर्सेंट नुकसान में है। 11 जनवरी को यह शेयर 290 रुपये पर था और वर्तमान में इसका प्राइस 103.75 रुपये है।

इस हिसाब से देखें तो अगर कोई निवेशक इस साल जनवरी में इसमें 1 लाख रुपये का निवेश किया होता तो यह रकम घटकर 35 हजार रुपये हो जाती। TTML शेयर की कीमत 11 जनवरी को अपने 52 वीक हाई 291.05 रुपये तक पहुंच गई थी। वहीं, इसका 52 वीक लो प्राइस 39 रुपये है। टीटीएमएल के शेयर ने 52 वीक का लो 04/10/2021 को टच किया था।

कंपनी का कारोबार

टीटीएमएल, टाटा टेलीसर्विसेज की सब्सिडियरी कंपनी है। यह कंपनी अपने सेगमेंट में मार्केट लीडर है। कंपनी वॉइस, डेटा सर्विसेज देती है। कंपनी के ग्राहकों की लिस्ट में कई बड़े नाम है। मार्केट एक्सपर्ट्स के मुताबिक बीते महीने कंपनी ने स्मार्ट इंटरनेट बेस्ड सर्विस कंपनियों के लिए शुरू की है।

इसे जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है, क्योंकि इसमें कंपनियों को फास्ट इंटरनेट के साथ क्लाउड बेस्ड सिक्योरिटी सर्विसेज और ऑप्टोमाइज्ड कंट्रोल मिल रहा है। इसकी सबसे बड़ी खासियत क्लाउड आधारित सिक्योरिटी है जिससे डेटा को सुरक्षित रखा जा सकेगा। जो बिजनेस डिजिटल आधार पर चल रहे हैं, उन्हें इस लीज लाइन से बहुत मदद मिलेगी। इसमें हर तरह के साइबर फ्रॉड से सुरक्षा का इंतजाम इन-बिल्ट किया गया है, साथ में फास्ट इंटरनेट की सुविधा दी जा रही है।

इंसान को लेकर उड़ने वाला देश का पहला ड्रोन तैयार

100 किलो वजन के साथ उड़ सकेगा, जल्द नेवी में शामिल होगा

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना में इंसानों को लेकर उड़ने वाला ड्रोन शामिल होने जा रहा है। इस ड्रोन का नाम वरुण रखा गया है। ये 100 किलोग्राम के वजन के साथ उड़ान भर सकता है। 25 से 30 किमी. का सफर 30 मिनट में पूरा कर लेगा।

भारतीय नौसेना ने अपने बयान में बताया कि इस ड्रोन को पुणे में स्थित भारतीय स्टार्टअप सागर डिफेंस इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा विकसित किया गया है। इसे जल्द ही नौसेना में शामिल किया जाएगा।

तकनीकी खराबी में पैराशूट के जरिए सुरक्षित लैंडिंग

कंपनी के फाउंडर निकुंज पाराशर ने बताया कि ड्रोन हवा में तकनीकी खराबी के बाद भी सुरक्षित लैंडिंग करने में सक्षम है। इसमें एक पैराशूट भी है, जो इमरजेंसी या खराबी के दौरान अपने आप खुल जाएगा और ड्रोन सुरक्षित लैंड हो जाएगा। इसके साथ ही वरुण का इस्तेमाल एयर एंबुलेंस और दूर के इलाकों में सामान के ट्रांसपोर्ट के लिए किया जा सकता है।

जुलाई में किया गया था ड्रोन का परीक्षण

ड्रोन का प्रदर्शन जुलाई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने किया गया था, यहां उनके साथ केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी मौजूद थे। नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सोशल मीडिया अकाउंट पर इसका वीडियो भी शेयर किया गया था।

निगरानी और सुरक्षा होगी मजबूत

रिपोर्ट के अनुसार, इससे देश की निगरानी और सुरक्षा को मजबूत किया जा सकता है। इसके अलावा इसका उपयोग राहत और मेडिकल इमरजेंसी में भी किया जा सकता है।

ड्रोन का उपयोग किन-किन क्षेत्रों में होता है?

देश में ड्रोन को बढ़ावा देने के लिए बनी नॉन प्रोफिटेबल ऑर्गेनाइजेशन ड्रोन फेडरेशन ऑफ इंडिया के डायरेक्टर स्मित शाह के अनुसार ड्रोन के मुख्यत: तीन उपयोग होते हैं, सर्वे, निरीक्षण और डिलीवरी।

एरियल सर्वेक्षण के अलावा, पाइपलाइन, विंडमिल इत्यादि के निरीक्षण, डिफेंस के लिए और दूर दराज के इलाकों में दवाएं और जरूरी सामग्री पहुंचाने में ड्रोन काम आते हैं। इसके अलावा एरियल फोटोग्राफी, सिनेमेटोग्राफी में भी काम आते हैं। यही नहीं एयर टैक्सी के लिए भी ड्रोन का इस्तेमाल संभव है।

2026 तक यह 50,000 करोड़ के टर्नओवर तक पहुंच सकती है ड्रोन इंडस्ट्री

स्मित शाह ने कुछ महीने पहले बताया था कि फिलहाल ड्रोन इंडस्ट्री 5,000 करोड़ की है। सरकार का अनुमान है कि यह 5 सालों में 15 से 20 हजार करोड़ की इंडस्ट्री होगी, लेकिन हमारा अनुमान है कि 2026 तक यह 50,000 करोड़ के टर्नओवर तक पहुंच सकती है।

भारत में ड्रोन उड़ाने के लिए गाइडलाइन

भारत सरकार ने ड्रोन के वजन के आधार पर उन्हें 5 अलग-अलग कैटेगरी में बांटा है। इनके लिए अलग-अलग गाइडलाइन हैं।

अडाणी और मस्क ने गंवाए 2.05 लाख करोड़

नई दिल्ली। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क और चौथे अमीर व्यक्ति गौतम अडानी की संपत्ति एक ही दिन में 25.1 बिलियन डॉलर (2.05 लाख करोड़ रुपए) कम हो गई। इनकी संपत्ति में ये गिरावट टेस्ला और अडनी ग्रुप की कंपनियों के शेयरों में गिरावट के कारण आई है।

अडाणी ग्रुप की कंपनियों अडाणी पावर, अडानी विल्मर, अडाणी इंटर प्राइजेज, अडाणी पोर्ट्स, अडाणी ग्रीन और अडाणी टोट गैस के शेयर्स में सोमवार को बड़ी गिरावट देखने को मिली थी। इससे गौतम अडाणी की संपत्ति एक ही दिन में 9.67 बिलियन डॉलर (78.85 हजार करोड़ रुपए) कम हो गई।

ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स के अनुसार इस गिरावट के बाद अडाणी की संपत्ति 120 बिलियन डॉलर (9.79 लाख करोड़ रुपए) रह गई है। वहीं अगर मस्क की बात करें तो उनकी संपत्ति 15.5 बिलियन डॉलर (1.26 लाख करोड़ रुपए) कम होकर 223 बिलियन डॉलर (18.19 लाख करोड़ रुपए) रह गई है। सोमवार को अडाणी एंटरप्राइजेज निफ्टी-50 का टॉप लूजर था। हफ्ते के पहले कारोबारी दिन इसका शेयर 8.42 प्रतिशत टूटकर 3164.75 रुपये पर बंद हुआ। इसके अलावा एटीजीएल 7.90 प्रतिशत टूटकर 3076 रुपए पर बंद हुआ तो वहीं अडानी पावर 4.99 प्रतिशत की लोअर सर्किट के साथ 354.85 रुपए पर बंद हुआ था। अडानी विल्मर में 5 प्रतिशत का लोअर सर्किट लगा और यह 717.75 रुपए पर बंद हुआ। वहीं, अडानी पोर्ट 4.35त्न टूटकर 784.95 और अडानी ग्रीन एनर्जी 7.65 प्रतिशत गिरकर 2087.85 रुपए पर बंद हुआ।

एशिया के सबसे रईस व्यक्ति अडाणी के अलावा रिलायंस के चेयरमैन मुकेश अंबानी भी टॉप-10 लिस्ट में शामिल होने वाले दूसरे भारतीय हैं। 6.67 लाख करोड़ (81.9 बिलियन डॉलर) की नेटवर्थ के साथ मुकेश अंबानी दुनिया के 10वें सबसे अमीर आदमी हैं।

शार्ट न्यूज

केरल, चंडीगढ़ ने सुब्रतो कप में विजय रथ जारी रखा

नयी दिल्ली। एमआईसी ईएमएचएसएस (केरल) ने यहां बुधवार को महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज (देहरादून) को 5-0 से हराकर सुब्रतो कप अंडर-17 अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट में अपना विजय रथ जारी रखा। दूसरी ओर, राजकीय मॉडल सीनियर सेकेंडरी (चंडीगढ़) ने गुरुकुल (हरियाणा) को 8-0 से हराया। दिन के अन्य मुकाबलों में सीटी एचएसएस (मणिपुर) ने सेंट जेवियर्स हाई स्कूल (कर्नाटक) को 5-1 से हराया जबकि राजकीय हॉलावंग स्कूल (मिजोरम) ने गंगाधरपुर विद्यामंदिर (पश्चिम बंगाल) को 3-0 से मात दी। पिलग्रिम एचएसएस (नागालैंड) ने बम्पोथेर बेंगेनाबोरी (असम) पर 2-0 से जीत दर्ज की। सेंट एंथोनी के एचएसएस (मेघालय) ने डीसीटी वसंतराव डेम्पो एचएसएस (गोवा) को 6-1 से हराया। दिन के बड़े मुकाबलों में केन्द्रीय विद्यालय, (कोचीन, केरल) ने पाथवे स्कूल (नोएडा) को 22-0 से रौंदा जबकि एमेनिटी पब्लिक स्कूल (रुद्रपुर, उत्तराखंड) ने ज्ञानमाता हाई स्कूल (सिलवासा) को 13-0 से परास्त किया। टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में जाने वाली टीमों का नाम गुरुवार के मैचों के बाद निर्धारित होगा।

विश्व चैंपियनशिप में जगह बनाने के लिये यूएस गोल्फ इंडिया टूर्नामेंट में भिड़ेंगे 74 गोल्फर

गुरुग्राम। विश्व चैंपियनशिप और अन्य अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में जगह बनाने के इरादे से 74 युवा गोल्फर क्लासिक गोल्फ एंड कंट्री कोर्स पर यूएस किड्स गोल्फ इंडिया टूर्नामेंट के पहले सत्र में दावेदारी पेश करेंगे। टूर्नामेंट का पहला लेग छह अक्टूबर को जबकि दूसरा लेग सात अक्टूबर को आयोजित होगा। इस टूर्नामेंट में विश्व चैंपियनशिप खेलने वाली अदिति अशोक और क्षितिज नावीद कौल जैसे बड़े भारतीय नाम भी हिस्सा ले रहे हैं। टूर्नामेंट में भाग लेने वाली युवा प्रतिभाएं 14 आयु वर्गों में बंटी हुई हैं। लड़कों के लिये नौ आयु वर्ग हैं जबकि लड़कियों को पांच आयु वर्गों में बांटा गया है। यह गोल्फर अमेरिका के मशहूर पाइनहर्स्ट गोल्फ कोर्स में आयोजित होने वाले यूएस किड्स गोल्फ विश्व चैंपियनशिप में जगह बनाने के लिये छह अलग-अलग प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर पॉइंट्स अर्जित करेंगे। साथ ही, इन युवाओं के पास यूएस किड्स यूरोपीय चैंपियनशिप में जगह बनाने का मौका भी होगा। यूएस किड्स गोल्फ विश्व चैंपियनशिप ऐसे कई खिलाड़ियों के लिए एक मंच रहा है जो विश्व गोल्फ के मौजूदा परिदृश्य में सबसे बड़े सितारे बन गए हैं। इनमें विश्व नंबर एक स्कॉटी शेफ़लर, दो बार के मेजर विजेता जस्टिन थॉमस और कॉलिन मोरीकावा शामिल हैं। अमेरिका की अनुभवी गोल्फर लेक्सी थॉम्पसन यूएस किड्स गोल्फ विश्व चैंपियनशिप में कई बार खिताब जीत चुकी हैं।

'स्नो टाइगर' कर्नल प्रेमचंद डोगरा का निधन

कुल्लू। पर्वतारोहण की दुनिया में 'स्नो टाइगर' के नाम से जाने जाने वाले कर्नल प्रेमचंद डोगरा का निधन हो गया है। वर्ष 1977 में सबसे मुश्किल मार्ग 'द नॉर्थ ईस्ट स्पर' भारत की सबसे ऊंची चोटी कंचनजंघा के शिखर पर पहुंचने वाले वह दुनिया के पहले भारतीय थे। 'हीरो ऑफ कंचनजंघा' कर्नल प्रेमचंद के निधन से पर्वतारोहण के एक युग का अंत हो गया है। कर्नल प्रेमचंद डोगरा ने बीती रात हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में अपनी आखिरी सांस ली। ऐसा बताया जा रहा है कि वह पिछले कुछ समय से बीमार थे। लाहौल के लिंडर गांव के रहने वाले प्रेमचंद जनजाति संस्कृति व परंपराओं के अग्रणी पक्षधर रहे। लाहौल की वादियों में रहकर ही उन्होंने पहाड़ों पर चढ़ना शुरू किया, जिसमें आगे जाकर उन्हें इसमें एक अलग पहचान दी। उनके पहाड़ों के नापने के जज्बे व जूनून को देखते हुए उन्हें सेन में स्नो टाइगर के नाम से अलंकृत किया। गौरतलब है कि कर्नल प्रेमचंद डोगरा उन पर्वतारोही में से एक थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन पर्वतारोहण में समर्पित कर दिया था। कर्नल प्रेमचंद ने अपने पूरे जीवन में लगभग 30 चोटियों को सफलतापूर्वक फतह किया।

बीसीसीआई अध्यक्ष गांगुली की पत्नी डोना अस्पताल में भर्ती

कोलकाता। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के प्रमुख सौरव गांगुली की पत्नी डोना गांगुली को वायरल बुखार के लक्षणों के साथ शहर के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्थानीय मीडिया ने गांगुली के पारिवारिक सूत्रों के हवाले से बुधवार को यह जानकारी दी। दक्षिण कोलकाता में वुडलैंड्स अस्पताल के सूत्रों के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया, उन्हें चिकनगुनिया का इलाज दिया गया है और अब वह ठीक हैं। ओडिसी नर्तकी डोना (46) को बीमारी महसूस होने के बाद मंगलवार रात को भर्ती कराया गया था और स्वास्थ्य संबंधी कई परीक्षणों में पाया गया कि वह चिकनगुनिया के से पीड़ित है। चिकनगुनिया एक संक्रमित मच्छर के काटने से होने वाला वायरल बुखार है। रिपोर्ट में कहा गया है कि गांगुली भी अस्पताल आये थे।

श्रीजेश, सविता ने जीता सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर पुरस्कार

लुसाने। भारत के पीआर श्रीजेश और सविता पूनिया को बुधवार को लगातार दूसरी बार एफआईएच साल का सर्वश्रेष्ठ पुरुष और महिला गोलकीपर चुना गया। श्रीजेश ने अपने करियर के 16वें साल में भारत के लिए अपना महत्व दिखाते हुए एफआईएच हॉकी प्रो लीग में सभी 16 मैचों में भाग लिया, जहां भारत तीसरे स्थान पर रहा। उन्होंने 2022 बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में भी सभी छह मैच खेले, जहां भारत को रजत पदक प्राप्त हुआ। मतदान में श्रीजेश को कुल 39.9 अंक मिले, जबकि बेल्जियम के लोइक वैन डोरेन (26.3 अंक) दूसरे और नीदरलैंड के प्राइमिन ब्लाक (23.2 अंक) तीसरे स्थान पर रहे। ये वोट विशेषज्ञों (40 प्रतिशत), टीमों (20 प्रतिशत), प्रशंसकों (20 प्रतिशत) और मीडिया (20 प्रतिशत) द्वारा ऑनलाइन डाले गए थे। श्रीजेश लगातार दो बार साल का सर्वश्रेष्ठ पुरुष गोलकीपर पुरस्कार जीतने वाले तीसरे खिलाड़ी हैं। इससे पहले डेविड हर्ट (आयरलैंड) ने 2015 और 2016 में यह पुरस्कार हासिल किया था, जबकि बेल्जियम के विन्सेंट वनाश ने 2017 से 2019 तक लगातार तीन बार इसे जीता था। श्रीजेश ने अपनी जीत पर कहा, इसमें कोई शक नहीं, यह एक विशेष पुरस्कार है क्योंकि हॉकी प्रशंसक हमें वोट दे रहे हैं। यह मेरे लिए एक बड़ा सम्मान और कड़ी मेहनत का प्रमाण है। चाहे आप अपने करियर के किसी भी चरण में हों, पुरस्कार जीतना हमेशा प्रेरणा देता है। यह पुरस्कार निश्चित रूप से मुझे और सुधार करने और एक महत्वपूर्ण वर्ष में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेगा, जिसमें हम एफआईएच हॉकी पुरुष विश्व कप भुवनेश्वर-राउरकेला 2023 खेलेंगे।

जयपुर में फाइनल जीतना निश्चित रूप से बेहद खास होगा-पठान

जयपुर। लीजेंड्स लीग क्रिकेट टूर्नामेन्ट का आज शाम यहां फाइनल मैच खेलने वाली एलएनजे भीलवाड़ा किंग्स टीम के कप्तान इरफान पठान ने कहा है कि वह टीम के अब तक प्रदर्शन से खुश है और राजधानी जयपुर में फाइनल जीतना निश्चित रूप से बेहद खास होगा। पठान ने मैच शुरु होने से पहले यहां यह बात कही। उन्होंने कहा कि अब तक टीम के प्रदर्शन में से मैं बेहद खुश हूं, जिसके चलते हम लीजेन्ड्स लीग क्रिकेट के फाइनल में पहुंच गए हैं। इस आखिरी मैच को लेकर हम बेहद उत्सुक हैं और अपने स्थानीय प्रशंसकों के सपोर्ट से अपने सर्वश्रेष्ठ क्षमता का प्रदर्शन करेंगे। अपने राज्य में, वो भी राजधानी जयपुर में जीतना निश्चित रूप से बेहद खास होगा। एलएनजे भीलवाड़ा किंग्स के मालिक रीजू झुनझुनवाला ने कहा हम बेहद उत्सुक हैं कि हमारे खिलाड़ी लीजेंड्स लीग क्रिकेट के फाइनल मैच में खेलने जा रहे हैं। यहां तक पहुंचने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की है। अब अपने घरेलू मैदान पर स्थानीय प्रशंसकों के उत्साहवर्धन के साथ टूर्नामेन्ट में जीत के लिए तैयार हैं। उल्लेखनीय है कि इस टूर्नामेन्ट का फाइनल मैच एलएनजे भीलवाड़ा किंग्स और इंडिया कैपिटल्स के बीच जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में शाम साढ़े सात बजे से खेला जा रहा है।

डेथ ओवरों में योजनाएं बेहतर तरीके से लागू करने की आवश्यकता : द्रविड़

इंदौर। भारतीय क्रिकेट टीम के कोच राहुल द्रविड़ ने कहा है कि टीम को डेथ ओवरों में सुधार करने के लिये अपनी योजनाओं को बेहतर तरीके से लागू करना होगा। भारतीय गेंदबाजों ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 शृंखला में लगातार दूसरी बार 200 से अधिक रन दिये। डेथ ओवरों में भारत की गेंदबाजी एक बार फिर विस्मरणीय रही और प्रोटियाज ने अंतिम पांच ओवरों में 73 रन जोड़ते हुए 20 ओवर में 227 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। द्रविड़ ने अपने गेंदबाजों का बचाव करते हुए कहा कि सपाट विकेटों पर गेंदबाजी करना आसान नहीं है और भारत के खिलाफ खेलने वाली टीमों को भी इस समस्या का सामना करना पड़ा था। द्रविड़ ने यहां मंगलवार को मैच के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा, जाहिर है, आप (खेल के) सभी विभागों में बेहतर करने की कोशिश करते हैं। निश्चित रूप से डेथ बॉलिंग में भी, लेकिन अगर आप निष्पक्ष होकर देखें तो यह बहुत सपाट विकेट हैं। यहां अंतिम ओवरों में गेंदबाजी करना आसान नहीं है। केवल हमारी टीम के लिए नहीं, बल्कि दूसरी टीम के लिए भी। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका ऐसी टीमें हैं जिनके गेंदबाजी आक्रमण के पास बहुत अनुभव है, और उन्होंने भी अंतिम ओवरों में संघर्ष किया है। उन्होंने कहा, लेकिन हां, मुझे लगता है कि हमें उन्हें नहीं खुद को देखना होगा। हमें यह देखना होगा कि हम कैसे सुधार कर सकते हैं और बेहतर हो सकते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां हम निश्चित रूप से सुधार करना पसंद करेंगे। हम जानते हैं कि जब आप इन बड़े टूर्नामेंटों को खेलते हैं, तो गलती की गुंजाइश बहुत कम होती है। हर रन, बाउंड्री मायने रखती है। अगर हम उन्हें खेल के किसी भी चरण में रोक सकते हैं, तो यह निश्चित रूप से एक अंतर बनायेगा। कोच द्रविड़ ने मध्यम गति के तेज गेंदबाज हर्षल पटेल की खराब फॉर्म पर एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि गेंदबाजों को टीम की योजनाओं को बेहतर ढंग से क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, निश्चित रूप से, वह अकेले नहीं हैं। कुल मिलाकर डेथ (ओवरों) में सभी को सुधार करने की आवश्यकता है। कभी-कभी हमारे पास कुछ अच्छी योजनाएं और रणनीतियां होती हैं लेकिन इसका बहुत हद तक निष्पादन नहीं हो पाता। इसलिए, मैं हर्षल को व्यक्तिगत रूप से बाहर नहीं करूंगा। हमें एक समूह के रूप में बेहतर करने की जरूरत है। चोट से लौटने के बाद हर्षल विकेट लेने और रनों को रोकने में विफल रहे हैं। हरियाणा के इस खिलाड़ी ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों में सिर्फ एक विकेट लिया, जबकि 8 ओवर में 99 रन दिए। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उन्होंने पहले मैच में 26 रन के बदले दो विकेट लेकर अच्छी शुरुआत की, लेकिन अगले दो मैचों में आठ ओवर में बिना विकेट चटकाये 89 रन दिए।

द्रविड़ ने कहा, मैं यह नहीं कहूंगा कि यह एक चिंता का विषय है। मैंने पहले भी इस सवाल का जवाब दिया है। वह ऐसा व्यक्ति रहा है जिसने पिछले कुछ वर्षों में अच्छी गेंदबाजी की है। वह खेल से डेढ़ महीने दूर रहकर वापस आ रहा है। छह सप्ताह त क नहीं खेलने के बाद गेंदबाजी करना आसान नहीं है। हम उसका समर्थन करते हैं। हम जानते हैं कि उसके पास गुणवत्ता और क्षमता है। द्रविड़ ने एशिया कप के बाद से तेज गेंदबाजों के प्रदर्शन पर कहा, हमें निश्चित रूप से लड़कों पर भरोसा है। जब आप उस समूह को देखते हैं जिसे हम ऑस्ट्रेलिया ले जाएंगे, तो उन सभी ने अच्छा प्रदर्शन किया है, और डेथ ओवरों में भी अच्छा किया है।

15वें खिलाड़ी के बिना ऑस्ट्रेलिया जायेगी भारतीय क्रिकेट टीम

मुंबई। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम टी20 विश्व कप 2022 की 15-सदस्यीय स्क्वाड में 15वें खिलाड़ी के बिना ही ऑस्ट्रेलिया के लिये रवाना होगी।

क्रिकबज ने बुधवार को बताया कि राष्ट्रीय चयनकर्ता और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने चोटग्रस्त जसप्रीत बुमराह के स्थान पर अभी किसी खिलाड़ी का चयन नहीं किया है और वे मोहम्मद शमी के पूर्णत: स्वस्थ होने का इंतजार करेंगे। क्रिकबज ने कहा कि भारतीय टीम कुल 18 खिलाड़ियों के साथ छह अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया के लिये रवाना होगी, लेकिन आधिकारिक स्क्वाड में 15वें खिलाड़ी को फिलहाल नामित नहीं किया जायेगा। मोहम्मद शमी इस समय कोरोना से उभर रहे हैं और उन्हें बेंगलुरु की राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में तलब किया गया है।भारतीय टीम के कोच राहुल द्रविड़ ने शमी के स्वास्थ्य के बारे में कहा था, हम इसे देख रहे हैं। हमारे पास 15 अक्टूबर तक का समय है। शमी हमारे अतिरिक्त खिलाड़ियों में शामिल हैं। दुर्भाग्यवश वह इस (दक्षिण अफ्रीका) शृंखला में नहीं खेल सके। यह उस दृष्टिकोण से हमारे लिये आदर्श होता, लेकिन वह इस समय राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में हैं। हमें यह देखना है कि कोरोना के 14-15 दिन बाद उनका स्वास्थ्य कैसा है, और उसके बाद ही हम फैसला लेंगे। एनसीए की मेडिकल टीम अंतिम निर्णय लेने से पहले उनकी फिटनेस का आकलन करेगी और बीसीसीआई को रिपोर्ट करेगी।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 में शूटिंग की वापसी, कुश्ती बाहर

लंदन। राष्ट्रमंडल खेल महासंघ (सीजीएफ) ने बुधवार को विक्टोरिया 2026 राष्ट्रमंडल खेलों के लिये खेल कार्यक्रम की घोषणा की, जिसमें शूटिंग ने वापसी की है जबकि कुश्ती को बाहर रखा गया है। सीजीएफ, ऑस्ट्रेलिया की एंड्र्यू सरकार और राष्ट्रमंडल खेल ऑस्ट्रेलिया ने बताया कि तटीय रोइंग, गोल्फ और बीएमएक्स विक्टोरिया में अपना राष्ट्रमंडल खेल पदार्पण करेंगे। राष्ट्रमंडल खेल 2026 में 20 खेल और 26 शास्त्र होंगे, जिसमें नौ पैरा-स्पोर्ट शामिल हैं। राष्ट्रमंडल खेल महासंघ के अध्यक्ष डेम लुईस मार्टिन ने कहा, हम 2026 राष्ट्रमंडल खेलों के लिए खेल कार्यक्रम की पुष्टि करते हुए रोमांचित हैं, जिसमें विक्टोरिया 2026 द्वारा प्रस्तावित अतिरिक्त खेल एक विविध कार्यक्रम को पूरा करते हैं। उन्होंने कहा खेल प्रतिस्पर्धी और रोमांच से भरपूर होने वाले हैं। खेलों में एक व्यापक, पूरी तरह से एकीकृत पैरा स्पोर्ट कार्यक्रम, कोस्टल रोइंग, गोल्फ और बीएमएक्स की शुरुआत होने वाली है जबकि शूटिंग और 3×3 बास्केटबॉल वापसी करेंगे।

टी20 में शीर्ष रैंकिंग के करीब पहुंचे सूर्यकुमार

दुबई। भारतीय मध्यक्रम के विस्फोटक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने अपनी आईसीसी टी20 रेटिंग में सुधार करते हुए शीर्ष रैंकिंग की होड़ को रोमांचक बना दिया है।

आईसीसी की ओर से बुधवार को जारी रैंकिंग के अनुसार सूर्यकुमार 838 रेटिंग पॉइंट के साथ टी20 बल्लेबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर मौजूद हैं, जबकि पाकिस्तान के मोहम्मद रिज़वान 854 रेटिंग पॉइंट के साथ पहले स्थान पर हैं।

सूर्यकुमार ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत की हालिया टी20 शृंखला में अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए दो अर्धशतकों के साथ कुल 119 रन बनाये। सूर्यकुमार अब बल्लेबाजों की रैंकिंग में शीर्ष पर मौजूद रिजवान से सिर्फ 16 अंकों की दूरी पर हैं। सूर्यकुमार दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टी20 में 61(22) रनों की पारी खेलने के बाद कुछ देर के लिये रैंकिंग में पहले स्थान पर भी आये थे, लेकिन तीसरे टी20 में केवल आठ रन बनाने के कारण वह बुधवार की रैंकिंग में पुन: दूसरे स्थान पर आ गये। ऑस्ट्रेलिया में होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के दौरान सूर्यकुमार के पास शीर्ष रैंकिंग हासिल करने का एक और मौका होगा।

दूसरी ओर, रिज़वान इंग्लैंड के खिलाफ सात मैचों की हालिया टी20 शृंखला में 316 रन बनाकर सबसे सफल बल्लेबाज रहे। भारत और पाकिस्तान टी20 विश्व कप के अपने पहले मैच में 23 अक्टूबर को एक-दूसरे का सामना करेंगे।

इसी बीच, पाकिस्तान के कप्तान बाबर आज़म नवीनतम टी20 बल्लेबाज रैंकिंग में 801 रेटिंग पॉइंट के साथ तीसरे स्थान पर आ गये हैं। भारत के सलामी बल्लेबाज केएल राहुल प्रोटियाज के खिलाफ दो मैचों में 108 रनों के दम पर सूची में सात पायदान की छलांग लगाकर 14वें स्थान पर पहुंच गए। दक्षिण अफ्रीका के क्विंटन डी कॉक (आठ पायदान के फायदे से 12वें स्थान पर), राइली रूसो (23 पायदान के फायदे से 20वें स्थान पर) और डेविड मिलर (10 स्थान ऊपर 29वें स्थान पर) ने भी आकर्षक बढ़त हासिल की है।

भारत के अनुभवी स्पिन रविचंद्रन अश्विन ने गेंदबाजों की टी20 रैंकिंग में 28 पायदान की छलांग के साथ 20वां स्थान हासिल कर लिया है, जबकि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 शृंखला से बाहर रहने के कारण हार्दिक पांड्या हरफनमौलाओं की रैंकिंग में एक स्थान गिरकर पांचवें स्थान पर आ गए हैं।

दूसरे देशों से ईरान का टकराव करा रहा हिजाब विरोधी आंदोलन

ब्रिटेन के राजदूत को किया तलब

तेहरान। ईरान में हिजाब विरोधी आंदोलन ने सत्ता की जड़ें हिलाकर रख दी हैं। 22 साल की महसा अमीनी की पुलिस हिरासत में मौत के बाद उमड़ा आंदोलन आज केवल ईरान तक ही नहीं सीमित है बल्कि वैश्विक रूप ले चुका है। इस बात को लेकर कई देश ईरानी राजनयिकों को तलब भी कर चुके हैं। वहीं दूसरे देशों में हो रहे प्रदर्शन को लेकर ईरान भी राजनयिकों को तलब कर रहा है। ईरान ने दूसरी बार ब्रिटेन के राजदूत को समन भेजा है। ईरान का आरोप है कि ब्रिटेन में इस मुद्दे को गलत दिशा देने की कोशिश की जा रही है।

ईरान का आरोप है कि उसके दुश्मन

जैसे कि अमेरिका इस आंदोलन के पीछे खड़े हैं ताकि ईरान में अशांति हो सके। सोशल मीडिया पर कई वीडियो वायरल हो रहे हैं जिनमें महिलाएं अपना हिजाब उतारकर जला रही हैं और वे खामनेई के खिलाफ नारेबाजी भी कर रही हैं। वहीं रिपोर्ट्स में कहा गया है कि ईरान प्रशासन ने कई शहरों में भारी पुलिस बल तैनात किया है। वहीं सरकार के लोगों का कहना है कि इस सरकार के गिरने का कोई चांस नहीं है। तेहरान के एक छात्र ने कहा, यहां विश्वविद्यालय में भी बड़ी संख्या में सुरक्षाबल तैनात किए गए हैं। हम तो विश्वविद्यालय परिसर छोड़कर जाने से डरते हैं। विश्वविद्यालय के बाहर बड़ी संख्या में वैन हमें गिरफ्तार करने के लिए इंतजार कर रही हैं।

बता दें कि ईरान ने ब्रिटेन के राजदूत को पहले भी तलब किया था। 24 सीतंबर को उन्हें समन भेजा गया था। ब्रिटेन के विदेश मंत्रालय के एक बयान पर उनसे सफाई मांगी गई थी। ईरान के विदेश मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ब्रिटेन जिस तरह से ईरान के खिलाफ खड़ा है ऐसा लगता है कि वह देश के विरोध में आतंकी गतिविधियों का भी समर्थन कर रहा है।

यूरोपीय संघ के शिखर सम्मेलन में नॉर्ड स्ट्रीम आतंकी हमले पर होगी चर्चा

ब्रसेल्स। यूरोपीय संघ के नेता सात अक्तूबर को होने वाले ईयू के शिखर सम्मेलन में नॉर्ड स्ट्रीम आतंकी हमले पर चर्चा करेंगे और इस मामले में सहयोग पर बातचीत करेंगे। यह जानकारी अधिकारी ने ब्रसेल्स में बुधवार को दी। अधिकारी ने संवाददाताओं से कहा कि वैसे तो यूरोपीय संघ इस आतंकी हमले की जांच में सीधे रूप से शामिल नहीं है, लेकिन जांच के परिणामों का इंतजार किया जा रहा है। रूस से जर्मनी तक बाल्टिक सागर के नीचे बने हुए नॉर्ड स्ट्रीम नेटवर्क में तीन पाइपलाइनों पर 26 सितंबर को गैस तेज दबाव और रिसाव देखा गया था। गत 29 सितंबर को, स्वीडन के तटरक्षक बल ने कहा कि उसने क्षतिग्रस्त पाइपलाइनों पर चौथा गैस रिसाव का पता लगाया है। स्वीडन, जर्मनी और डेनमार्क के अनुसार, इन घटनाओं का कारण तोड़फोड़ हो सकता है। संचालक, नॉर्ड स्ट्रीम एजी ने कहा कि मरम्मत कार्य में कितना समय लगेगा यह बताना संभव नहीं है।

जापान ने किया उ. कोरिया के मिसाइल प्रक्षेपणों की निंदा वाला प्रस्ताव पारित

टोक्यो। जापान के निचले सदन ने बुधवार को उत्तर कोरिया के मिसाइल परीक्षणों की निंदा करने वाला एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें एक दिन पहले जापानी क्षेत्र में उत्तरी कोरिया द्वारा किया गया बैलिस्टिक मिसाइल का प्रक्षेपण भी शामिल है। प्रस्ताव में कहा गया,पिछले पांच वर्षों में पहली बार दक्षिण कोरिया ने जापानी क्षेत्र के उपर से बैलास्टिक मिसाइल दागा है, जो ने केवल जापान के लिए एक गंभीर खतरा है बल्कि यह इस क्षेत्र और विश्व शांति को भी भंग करता है। जापान के निचले सदन के प्रस्ताव को उसके आधिकारिक चैनल पर प्रसारित किया गया। उत्तर कोरिया ने मंगलवार सुबह अपना नया मिसाइल प्रक्षेपण किया था जिसने जापानी क्षेत्र के ऊपर से उड़ान भरा था और देश के विशेष आर्थिक जोन के बाहर प्रशांत महासागर में गिरा था। जापानी सेना के अनुसार, इसकी उड़ान क्षमता लगभग 4,600 किलोमीटर थी और अधिकतम ऊंचाई 1,000 किलोमीटर थी। यह परीक्षण 2017 के बाद जापान के ऊपर से किया गया पहला मिसाइल प्रक्षेपण है। इससे पहले उत्तर कोरिया ने पिछले सप्ताह कई बैलिस्टिक मिसाइलों का भी परीक्षण किया था। इनकी उड़ान क्षमता 300-400 किलोमीटर थी, जबकि अधिकतम ऊंचाई लगभग 50 किलोमीटर थी। उत्तर कोरिया ने 2022 की शुरुआत से अब तक कुल 23 मिसाइलों का परीक्षण किया है, जबकि एक वर्ष पहले इसने केवल आठ मिसाइलों का परीक्षण किया था।

रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों को दिया गया

स्टॉकहोम। अमेरिका की कैरोलिन आर बर्टोजी और के बैरी शार्पलेस एवं डेनमार्क के मोर्टन मेल्डल ने 'क्लिक केमिस्ट्री और बायोऑर्थोगोनल केमिस्ट्री के विकास के लिए' संयुक्त रूप से रसायन विज्ञान में 2022 का नोबेल पुरस्कार जीता है। शाही स्वीडिश विज्ञान अकादमी ने बुधवार को इसकी घोषणा की। अकादमी ने एक बयान में कहा कि सर्वश्री शार्पलेस और मेल्डल ने क्लिक केमिस्ट्री के रूप में रसायन विज्ञान के एक क्रियात्मक प्रकार की नींव रखी है, जिसमें अणु-संबंधी रचक खंड जल्दी और कुशलता से एक साथ जुड़ते हैं। दूसरी ओर, सुश्री बर्टोजी ने रसायन विज्ञान को एक नये आयाम में ले जाते हुए इसका उपयोग जीवों में करना शुरू कर दिया है। रसायन विज्ञान के लिए नोबेल समिति के अध्यक्ष जोहान एक्विस्ट ने कहा, रसायन विज्ञान में इस वर्ष का पुरस्कार आसान और सरल चीजों के साथ काम करने के बजाय जटिल मामलों से संबंधित है। क्रियात्मक अणुओं का निर्माण एक सीधा रास्ता अपनाकर भी किया जा सकता है। श्री बर्टोजी ने ऑनसाइट टेलीफोन साक्षात्कार में अपना रोमांच जाहिर करते हुए कहा, मैं मुश्किल से सांस ले पा रही हूं! मैं चकित हूं, यह कहना कम बयानी होगी। इस वर्ष की पुरस्कार राशि एक करोड़ स्वीडिश क्रोनर है, जिसे तीनों पुरस्कार विजेताओं के बीच समान रूप से साझा किया जाएगा।

कुवैत के सुल्तान ने बड़े पुत्र को प्रधानमंत्री पुनर्नियुक्त किया

कुवैत शहर। कुवैत के सुल्तान नवाफ अल-अहमद अल-जबर अल-सबा ने बड़े पुत्र अहमद नवाफ अल-अहमद अल-सबा को प्रधानमंत्री पुनर्नियुक्त करते हुए सरकार बनाने का आदेश दिया है। यह जानकारी बुधवार को मीडिया रिपोर्ट में दी गयी। कुवैत समाचार एजेंसी के मुताबिक अहमद नवाफ अल-अहमद अल-सबा को जुलाई में प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था लेकिन उन्होंने सितंबर के अंत में देश में हुए संसदीय चुनावों के बाद अपना इस्तीफा सौंप दिया था। नवाफ अल-अहमद अल-जबर अल-सबा के सितंबर 2020 में सत्ता में आने के बाद से तेल भंडार से समृद्ध देश में मंत्रियों और जन-प्रतिनिधियों के बीच विवाद के कारण चार सरकारें इस्तीफा दे चुकी हैं।

8 माह की मासूम सहित कैलिफोर्निया में सिख परिवार का अपहरण

पंजाब में परिजन परेशान; अमेरिका जाने की तैयारी

कैलिफोर्निया, चंडीगढ़। अमेरिका के कैलिफोर्निया में 8 महीने के बच्चे सहित चार सदस्यीय सिख परिवार का अपहरण हो गया है। इस मामले में एक संदिग्ध को हिरासत में ले लिया गया है। यह सिख परिवार मूल रूप से पंजाब के होशियारपुर के हरसी पिंड का रहने वाला है। सोमवार को मर्स्ड काउंटी में सभी चार सदस्यों का अपहरण कर लिया गया। जिनका अपहरण हुआ हैं उनमें आठ माह की आरुही धेरी, उसकी मां 27 वर्षीय जसलीन कौर, पिता 36 वर्षीय जसदीप सिंह और चाचा 39 वर्षीय अमनदीप सिंह के रूप में की गयी है। परिवार की कार सोमवार देर रात जली हालत में पाई गई, जिसके आधार पर अधिकारियों ने यह निर्धारित किया कि चारों का अपहरण कर लिया गया है। खुफिया अधिकारियों को मंगलवार सुबह सूचना मिली कि पीड़ित के एक बैंक कार्ड का इस्तेमाल मर्स्ड काउंटी के एक एटीएम में किया गया था। मर्स्ड काउंटी शेरिफ कार्यालय ने एक बयान में कहा, जांचकर्ताओं ने बैंक लेनदेन करने वाले एक व्यक्ति की तस्वीर प्राप्त की, जो अपहरण स्थल से मिली तस्वीर में नजर आ रहे व्यक्ति जैसा ही नजर आ रहा है।

जसदीप और अमनदीप के पिता डॉ. रणधीर सिंह और मां कृपाल कौर अपहरण की इस घटना के बाद से स्तब्ध हैं। रणधीर स्वास्थ्य विभाग और कृपाल शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हैं। रणधीर 29 सितंबर को ही अमेरिका से भारत लौटे हैं। रणधीर सिंह के पड़ोसी चरनजीत सिंह ने कहा कि जसदीप के माता-पिता इस घटना के बाद से सदमे में हैं और बात करने की स्थिति में नहीं हैं। रणधीर भारत लौटने के बाद वह तीर्थ यात्रा के लिये उत्तराखंड चले गए थे। जब वह ऋषिकेश पहुंचे तो उन्हें अमेरिका से उनकी पुत्रवधू जसप्रीत कौर का फोन आया जिसने उन्हें अपने पति अमनदीप सिंह और परिवार के अन्य सदस्यों के अपहरण की सूचना दी। उनके पड़ोसी ने कहा कि मामले की जानकारी मिलने पर रणधीर मंगलवार शाम वापस गांव लौट गाए और अमेरिका जाने की तैयारी कर रहे हैं। चरनजीत सिंह ने कहा कि मामले की जानकारी मिलते ही हरसी पिंड और आसपास के गांव के लोग रणधीर सिंह के घर पहुंचे और अपहृत लोगों की सुरक्षित घर वापसी की कामना की। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री और होशियारपुर के सांसद सोम प्रकाश ने भी रणधीर सिंह को फोन किया था और उन्हें केंद्र सरकार से पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

पुण्य भाग्य बनाती है चारधाम की यात्रा

उत्तराखंड को देवभूमि भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है भगवान की स्थली। यह प्रदेश भारतवर्ष के अनेक पवित्र एवं महत्वपूर्ण तीर्थो का स्थल है। भगवान की स्थली मने जाने वाला यह प्रदेश पर्यटको को अपने अदभूत सोंदर्य के लिए आकर्षित करता है। अपने अनगिनत पवित्र स्थलों, मंदिरों, तीर्थो, नदियों एवं झीलों से आकर्षित होकर प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ तीर्थाटन के लिए आते है। उत्तराखंड अपने पवित्र धामों के कारण प्रत्येक हिन्दू का वांछित स्थल है। चारधाम, हरिद्वार एवं ऋषिकेश की यात्रा को प्रत्येक हिन्दू के लिए अत्यन्त आवश्यक माना गया है। हिन्दू पुराणों के के अनुसार चारधाम की यात्रा पुण्य का भाग्य बनाती है। भगवान की यह स्थली, हजारो वर्ष पहले बनाये गए मंदिरों एवं धामों से यहाँ कि धार्मिक विरासत की और समृद्ध संकेत करती है। विश्व भर से लोग तीर्थाटन के लिए उत्तराखंड में आते है।

उत्तराखंड एक ऐसा राज्य है जो कि आध्यात्मिक वायु से ओतप्रोत है। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि, मंदिर एवं तीर्थ इस खुबसूरत प्रदेश में काफी कम दुरी पर स्थित है। प्राकृतिक सोंदर्य के हिसाब से भी उत्तराखंड सर्वोत्तम है- खुबसूरत घाटियाँ, अनछुए पहाड़ी मैदान, बर्फ से ढकी हिमालय कि चोटियाँ, बर्फीले हिमनद, झिलमिलाती झीले, जल धारायें एवं हिमनद। यह राज्य अपने में आध्यात्मिक एवं धार्मिक मंदिरों, धामों, नदियों के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है।

तीर्थयात्रियों के लिए यह एक जीवनकाल का एक अदभूत अनुभव होता है, यहाँ के मंदिर एवं धाम, गर्म जल धाराओं, घने जंगलो, बर्फाच्छादित पर्वतो, झीलों एवं पवित्र नदियों से घिरे हुए है। इस स्थली से कोई भी यात्री अनछुवा वापस नहीं जाता, क्योंकि यह क्षेत्र गहरी आस्था अदभूत आध्यात्म पवित्रता एवं दिव्यता से ओतप्रोत है। हिन्दुओं कि सबसे पवित्र मने जाने वाली चारधाम यात्रा में तीर्थयात्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री के दर्शन करते है।

उत्तराखंड के प्रसिद्द धार्मिक स्थल है- बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, ऋषिकेश, हरिद्वार, हेमकुंड साहिब, रीठा साहिब एवं पंचकेदार। तीर्थयात्रियों के लिए यह एक जीवनकाल का एक अदभूत अनुभव होता है, यहाँ के मंदिर एवं धाम, गर्म जल धाराओं, घने जंगलो, बर्फाच्छादित पर्वतो, झीलों एवं पवित्र नदियों से घिरे हुए है। इस स्थली से कोई भी यात्री अनछुवा वापस नहीं जाता, क्योंकि यह क्षेत्र गहरी आस्था अदभूत आध्यात्म पवित्रता एवं दिव्यता से ओतप्रोत है। हिन्दुओं कि सबसे पवित्र मने जाने वाली चारधाम यात्रा में तीर्थयात्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री के दर्शन करते है। जीवन एक यात्रा की तरह है । कभी यह सहज लगती है तो कभी दुर्गम। जब मन में उत्साह और विश्वास की ऊर्जा जागती है तो जीवन यात्रा कितनी भी दुर्गम हो, उसे हम खुशी-खुशी पूरा कर लेते हैं। चारधाम यात्रा को भी लोग विश्वास और उर्जा के साथ उत्साह से पूरा करते हैं । फिर यह ऊर्जा जीवन भर हमारे साथ चलती है। जीवन का हर कठिन और दुसाध्य लगने वाला काम हमारे लिए आसान हो जाता है। यह यात्रा पूरी करने के बाद जीवन की हर मुश्किल आसान लगने लगती है क्योंकि हर वक्त विश्वास की शक्ति हमारे साथ रहती है।

एक समय था, जब आने-जाने के संसाधन भी नहीं थे और चारधाम यात्रा बेहद कठिन मानी जाती थी, तब भी गृहस्थी की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने के बाद दम्पति पैदल चारधाम यात्रा करते थे। उस समय, जो दंपत्ति सकुशल वापस लौट आते, उनके आने की खुशी में पूरा गांव उत्सब मनाता था। वर्ष 1962 के पहले रास्ते इतने आसान नहीं थे। परन्तु चीन के साथ हुए युद्ध के उपरांत भारतीय सैनिकों की आवाजाही से तीर्थयात्रियों के लिए रास्ते आसान हो गए। आवागमन के साधनों में सुधार हुआ और आज चारधाम यात्रा तीर्थयात्रियों के बीच लोकप्रिय बन चुकी है। प्रतिवर्ष लाखों श्रधालु विश्वास के सहारे इस यात्रा को पूरा करते हैं।

हिन्दुओं के चार पवित्र स्थलों (बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, एवं यमुनोत्री) की तीर्थयात्रा को चारधाम यात्रा कहा जाता है। सदियों से संत एवं तीर्थयात्री, निर्वाण की खोज में इन स्थलों पर आते रहे हैं, जिन्हें की हिन्दू पुराणों के अनुसार केदारखंड कहा गया है। हिन्दुओं की आस्था के अनुसार, इन चार स्थानों की यात्रा को अत्यंत धार्मिक महत्व कामाना गया है।

बद्रीनाथ

बद्रीनाथ को इन चार धामों में सबसे पवित्र माना गया है। नर एवं नारायण नामक पर्वतों के बीच, एवं अलकनंदा नदी के तट पर स्थित बद्रीनाथ समुद्रतल से 3133 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह धाम भगवान विष्णु को समर्पित है, जो की दुनिया के रक्षक माने गए हैं। यहाँ किसी भी जाती या वर्ण के भेदभाव के बिना, प्रभु के दर्शन किये जा सकते हैं। हिमालय की नीलकंठ चोटी का मनोरम रूप श्री बद्रीनाथ मंदिर के पीछे देखा जा सकता है। किसी समय यह स्थान बेरी के जंगलों के कारण बद्री वन नाम से प्रसिद्ध था। मंदिर के सामने, अलकनंदा के किनारे एक गर्म पानी का स्रोत तप्त कुंद नाम से जाना जाता है। स्त्रियों के लिए एक अलग कुण्ड की व्यवस्था है।

बदीनाथधाम की खोज आदिगुरू शंकराचार्य द्वारा आठवीं शताब्दी में की गई थी। अपनी योग सिद्धि एवं तपस्या के बल से शंकराचार्य ने ही अलकनंदा नदी के नारद कुण्ड से भगवान बद्री नारायण की मूर्ती को बाहर निकाल कर तप्तकुंड के पास गरुड़ गुफा में स्थापित किया था, सात शताब्दियों के कालांतर में गढ़वाल के महाराजा द्वारा मंदिर निर्माण कर इस विग्रह को वर्तमान मंदिर में स्थापित करवाया गया था तथा 18वीं शताब्दी में इन्दोर की महारानी अहिल्याबाई होलकर द्वारा मंदिर पर स्वर्ण कलश स्थापित करवाए गए थे। बाद में भूकंप के कारण ध्वस्त हुए बद्रीनारायण मंदिर का वर्ष 1803 में जयपुर के महाराजा द्वारा पुनर्निर्माण करवाया गया था। समय एवं आवश्यकता के आधार पर इसका कई बार जीर्णोद्धार भी हुआ है, वर्तमान मंदिर स्थापत्य कला का अनुपम उदहारण कहा जा सकता है। अलकनंदा नदी से 50 मीटर ऊंचे धरातल पर निर्मित इस मंदिर का प्रवेश द्वार अलकनंदा नदी की ओर देखता हुआ है।

केदारनाथ

उत्तराखंड में लगभग 400 शिव मंदिरों में से सबसे महत्वपूर्ण केदारनाथ को माना जाता है। पूर्व कथाओं के अनुसार, कुरुक्षेत्र में कौरवों पर विजय पाने के उपरान्त, पांडवों का मन अपने की लोगो की हत्या के कारण ग्लानी से भर गया, और यहाँ भगवान शिव के आशीर्वाद उन्होंने मोक्ष की प्राप्ति की। भीम द्वारा भगवान शिव का पीछा किया जाने पर, वो धरती में विलीन हो गए, शिव के अन्य चार अंग, चार अन्य स्थानों पर उभर आये, जहाँ उन्हें अलग-2 नाम से पूजा जाता है। केदारनाथ एवं इन चार अन्य मंदिरों को एक साथ पञ्च केदार नाम से जाना जाता है।

केदारनाथ की समुद्रतल से ऊंचाई लगभग 3584 मीटर है। यह मन्दाकिनी नदी के उदगम स्थल के निकट बसा हुआ है। मंदिर के चारो और ऊंची -2 मनोरम एवं खूबसूरत पहाड़ियां हैं। गौरीकुंड से केदारनाथ का 14 किलोमीटर का मार्ग पहाड़ी मार्ग है यमुनोत्री की तरह यंहा भी एक तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं और दूसरी तरफ गहरी खाइयाँ जिनकी गहराई जैसे जैसे यात्री ऊपर चढ़ते हैं बढ़ती जाती है, बीच में पगडण्डीनुमा रास्ता है जो पत्थरों से बना हुआ है यद्यपि इसकी चोड़ाई यमुनोत्री मार्ग की अपेक्षा अधिक है ढ्ढ रास्ते में जगह जगह अस्थाई ढाबे बने हुए हैं जो स्थानीय गढ़वाली लोगों द्वारा संचालित होते हैं, इनमें अच्छे खाने की अपेक्षा नहीं की जा सकती, ब्रांडेड वस्तुएं ही उपयोग की जानी चाहियें पूरे मार्ग में अलकनंदा नदी एवं हरियाली से आच्छादित पहाड़ साथ रहते हैं, पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ के ग्लेशियर यात्रियों के आकर्षण का केंद्र बने रहते हैं, पहाड़ों से निकल कर नीचे आने वाले अनेक झरने मन को हर्षित करते हैं, पूरा मार्ग रमणीक तो है किन्तु थका देने वाला भी है गौरीकुंड से सात किलोमीटर की दूरी पर रामबाड़ा नाम का स्थान है यहां यदि यात्री चाहें तो रात्रि विश्राम की व्यवस्था उपलब्ध हो सकती है। केदारनाथ का रास्ता तय करने के लिए यहां घोड़े और खच्चर भी उपलब्ध हैं।

गंगोत्री

गंगोत्री को पवित्र नदी गंगा का उदगम (गौमुख हिमनद, गंगोत्री से 18 किलोमीटर पैदल) एवं देवगंगा की स्थली माना गया है। उदगम स्थल से नदी को भागीरथी कहा जाता है, एवं देवप्रयाग में अलकनंदा से संगम के बाद, इसे गंगा नाम से जाना जाता है। हिन्दू आस्था के अनुसार, गंगा स्वर्ग की पुत्री हैं, जिन्होंने नदी के रूप में अवतार लेकर राजा भागीरथ के पुरखों के पापों को दूर किया। गंगोत्री मंदिर से लगभग 100 गज दूर केदार गंगा बहती है।

यमनोत्री

भारत की सर्वाधिक प्राचीन और पवित्र नदियों में गंगा के समकक्ष ही यमुना की गणना की जाती है। भगवान कृष्ण की लीलाओं की साक्षी रही यह नदी ब्रज संस्कृति की संवाहक है। भारतवासियों के लिए यह सिर्फ एक नदी नहीं है, भारतीय संस्कृति में इसे माँ का दर्जा दिया गया है।

यमुना नदी का उद्गम हिमालय के पश्चिमी गढ़वाल क्षेत्र में स्थित यमनोत्री से हुआ है। हिन्दू धर्म के चार धामों में यमनोत्री का भी स्थान है। यमुना नदी की तीर्थस्थली यमनोत्री हिमालय की खूबसूरत वादियों में स्थित है। यमुना नदी का उद्गम कालिंद नामक पर्वत से हुआ है। हिमालय में पश्चिम गढ़वाल के बर्फ से ढँके श्रंग बंदरपुच्छ जो कि जमीन से 20,731 फुट ऊँचा है, के उत्तर-पश्चिम में कालिंद पर्वत है। इसी पर्वत से यमुना नदी का उद्गम हुआ है। कालिंद पर्वत से नदी का उद्गम होने की वजह से ही लोग इसे कालिंदी भी कहते हैं।

यमुना नदी का वास्तविक स्रोत कालिंद पर्वत के ऊपर बर्फ की एक जमी हुई झील और हिमनद चंपासर ग्लेश्यिर है। यह ग्लेश्यिर समुद्र तल से 4421 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसी ग्लेश्यिर से यमुना नदी निकलती है और ऊँचे-नीचे, पथरीले रास्तों पर इठलाती, बलखाती हुई पर्वत से नीचे उतरती है। यहाँ चावल की छोटी छोटी पोटली को गरम पानी के कुण्ड में पकाया जाता है और प्रसाद के तौर भोग लगाया जाता है

सावधानियां जो आवश्यक हैं

स्वांस की बीमारी से पीड़ितों एवं ह्रदय रोगियों को पैदल जाने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए, चढ़ाई में परेशानी हो सकती है तथा ऑक्सीजन की कमी भी परेशान कर सकती है, ऐसे लोगों को गौरीकुंड से छोटे ऑक्सीजन के सिलेंडर खरीद कर साथ रखने चाहियें जो वंहा 250 -300 रुपये में आसानी से उपलब्ध होते हैं, कुछ लोग कपूर भी साथ रखते हैं जिसे सूंघने से कुछ राहत मिलती है ढ्ढ पैदल जाने वाले यात्रियों को सुविधा के लिए गौरीकुंड से ही छड़ियाँ (स्टिक्स) ले लेनी चाहिए चढ़ाई वाले मार्ग में यह चढ़ने एवं उतरने में सहायक होती हैं, जून से अगस्त में यंहा बरसात होती रहती है जो परेशानी का कारण बन सकती है इसके लिए हलके रैन कोट्स साथ रखने चाहियें जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर उपयोग में लिया जा सकता है वैसे मार्ग में भी ऐसे हलके बरसाती गाउन उपलब्ध हो जाते हैं। किसी भी तरह की बीमारी से ग्रसित लोगों को अपनी दवाइयां अवश्य साथ रखनी चाहिए क्योंकि आप जो दवा लेते हैं वह आवश्यक नहीं कि वंहा के मेडिकल स्टोर्स में उपलब्ध हो जाये। डायबिटीज़ के रोगियों को भी अपनी दवा के अतिरिक्त खाने पीने की अन्य आवश्यक सामग्री अपने साथ अवश्य रखनी चाहिए। इस मार्ग में सुविधा जनक वस्त्र पहनने से किसी संभावित परेशानी से बचा जा सकता है। पांव में भी सुविधाजनक शूज़ या सेंडल ही पहनने चाहियें जो पांव को काटे नहीं,महिलाओं को ऊंची हील की चप्पल या सेंडल भूल कर भी नहीं पहननी चाहिए, पांव फिसलने या मुड़ने की संभावना रहती है। अपने साथ कम से कम वजन रखने से आपको थकान कम होगी, वैसे वजनदार सामान के लिए कंडी (पिट्ठू) हायर कर लेना आपके लिए सुविधाजनक होगा। यद्यपि पालकी या कंडी वाले मजदूर ईमानदार होते हैं फिर भी मूल्यवान वस्तुओं के प्रति सावधानी रखनी चाहिए।

मौसम

केदारनाथ में अप्रैल से जून तक मौसम दिन में सुहाना एवं रात्रि में हल्की ठंडक रहती है,इसलिए पहनने के लिए हलके गरम कपड़े साथ लेने चाहिए, जून से सितम्बर बरसात रहती है, पहाड़ों से चट्टानें टूट कर गिरने की भी संभावना रहती है जिससे मार्ग अवरुद्ध हो सकते हैं अत- सावधानी आवश्यक है,सितम्बर से नवम्बर में मंदिर के पट बंद होने तक तेज़ सर्दी रहती है, भारी गरम कपडे साथ रखना आवश्यक है। दीपावली पर कपट बंद होने के बाद अप्रैल में वापस खुलने तक पूरा क्षेत्र बर्फ से ढक जाता है, मार्ग भी बर्फ से बंद हो जाते हैं,इस अवधि में यंहा कोई नहीं रहता, दुकानों एवं मकानों की एक से दो मंजिल तक बर्फ में दब जाती हैं।

CMYK CMYK CMYK CMYK